



अणुव्रत

आहिंसक-नैतिक चेतना का अब्दूत पार्टिक

वर्ष : 55 ■ अंक 4 ■ 16-31 दिसंबर, 2009

♦ संपादक ♦
डॉ. महेन्द्र कर्णाविट

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

□ स्वस्थ व्यक्ति : स्वस्थ समाज	आचार्य तुलसी	3
□ अविश्वास का हेतु है : असत्य	आचार्य महाप्रज्ञ	5
□ सहयोग से बनता है समाज	मुनि किशनलाल	9
□ नैतिकता की दिशाएं	कुसुम जैन	12
□ लाइलाज बनता जा रहा है मदिरापान का रोग	प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा	14
□ भारतीय नारी का आदर्श	डॉ. रामसिंह यादव	17
□ विधवाओं की उपेक्षा न हो	किरण बाला	18
□ आंसू और प्याज	जसविंदर शर्मा	19
□ बढ़ता उपभोक्तावाद : प्रगति का सूचक	भूरचंद जैन	20
□ आधुनिक सभ्यता का अंधापन	स्वामी वाहिद काज़मी	22
□ जीवन का यथार्थ	सीताराम गुप्ता	24
□ वृद्धजनों का भरण पोषण	डॉ. बसंतीलाल बाबेल	25
□ वारेन बफेट का आदर्श जीवन	मुरली काठड़	27
□ बधाई	डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी	29
□ कमजोर समझने की भूल : मेहर	रजनीकांत शुक्ल	30

■ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.

■ विज्ञापन सहयोग:

- मुख पृष्ठ रंगीन 4 : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ पूरा : 3,000 रु.

■ शुल्क भेजने का पता :

अणुव्रत महासमिति, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2 (भारत)

- फोन: 23233345, 23239963 ● फैक्स: (011) 23239963
- E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
- Website : anuvratinfo.org

- वार्षिक : 300 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

- मुखपृष्ठ रंगीन 2-3 : 8,000 रु.
- साधारण पृष्ठ आधा : 2,000 रु.

■ स्तंभ

□ संपादकीय	2
□ राष्ट्र चिंतन	4
□ झाँकी है हिन्दुस्तान की	13
□ लघुकथा	26
□ कविता	28
□ अणुव्रत आंदोलन	33-39
□ अध्यक्ष की कलम से	40

अणुव्रत के आलोक में



वर्तमान युग में मानव ने जहां अपनी बुद्धि कौशल से दैनिक जीवन को सजाया है, संवारा है तो वहीं कई मानवीय समस्याओं को भी जन्म दिया है। मैं आपका ध्यान मानव जीवन की दो समस्याओं की ओर आकर्षित कर रहा हूँ संस्कारविहीनता, पारिवारिक अस्वस्थता।

● आज हम सभी चिंतित हैं युवा पीढ़ी के भविष्य को लेकर। समाचार, पत्र-पत्रिकाएं इसी विषय को लेकर पक्ष-विपक्ष प्रस्तुत कर रही हैं। इस समस्या की तह में जब हम ज्ञानकंते हैं तो हमें हमारा चेहरा ही धुंधला दिखाई देता है।

माता-पिता और बच्चे अपने-अपने कर्मरों में बैठे हैं। कुछ देर बाद अचानक फोन की घंटी बजती है। छोटा बच्चा आकर पापा से कहता है पापा आपका फोन है। पापा टी.वी. देखने में व्यस्त हैं। कहते हैं मुन्ना बोल दो पापा घर पर नहीं हैं और मुन्ना फोन पर कहता है अंकल! पापा कहते हैं, पापा घर पर नहीं है। और यहीं से प्रारंभ होता है संस्कारों का बीजारोपण। क्या हम स्वयं अपनी संतान को असत्य बोलना नहीं सिखा रहे हैं? माता-पिता का व्यवहार, दैनिक क्रम, आदतें ही जिम्मेदार हैं युवा पीढ़ी को संस्कारविहीन बनाने के लिए।

माता-पिता क्या करते हैं, कैसे और क्या खाते-पीते हैं, कैसे बोलते हैं, कैसे कमाते हैं, कैसे व्यवहार करते हैं, कैसी पुस्तकें पढ़ते हैं इन सभी बिन्दुओं को नन्हा बच्चा अपनी तीव्र दृष्टि से देखता है और जैसा वह देखता है वैसा ही अंकुरण उसके जीवन में होता है।

इसलिए हम सभी यह चीखना-चिल्लाना बंद करें कि नई पीढ़ी संस्कारविहीन होती जा रही है। बल्कि यह कहें कि हम अर्थात् माता-पिता का दैनिक जीवन संस्कारविहीन है। हम अपने दैनिक जीवन में प्रामाणिकता को स्थान दें, कथनी-करनी के अंतर को मिटाएं और मानवीय एकता में विश्वास करें तो संस्कारविहीनता की जो समस्या मुँह बाए खड़ी है उससे निजात मिल सकती है।

माता-पिता का व्यसनमुक्त जीवन, व्यवसाय-व्यवहार में प्रामाणिकता एवं सहिष्णुता यहीं वह त्रिपदी है जिसके सहारे परिवार संस्कारवान् बन सकते हैं।

● आज परिवार अस्वस्थ हैं। दैनिक जीवन में संघर्ष, पीड़ा और मुसीबतें हैं लेकिन इसमें प्रेम, मैत्री, सहयोग और उम्मीदें भी हैं। एक रोमान दार्शनिक ने ठीक ही कहा है “इस संसार में जो भी व्यक्ति दुःखी है, वह अपने ही दोषों से दुःखी है।”

परिवार के सभी सदस्यों की सूझ-बूझ परिवार की एकता को बनाए रखती है। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं जब हावी होती हैं तो परिवार अस्वस्थ हो जाते हैं परिणाम होता है परिवारों का टूटना-बिखरना। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को नकार कर तथा सामूहिक जिम्मेदारी का अहसास कर हम स्वस्थ परिवार एवं समाज का निर्माण कर सकते हैं।

परिवार स्वस्थ रहे इस हेतु आवश्यक है कि सभी परिजन निम्न बिन्दुओं को आत्मसात करें

1. एकाकी जीवन प्रवृत्ति का परित्याग करें।
2. ईर्ष्या-भाव को छोड़ें।
3. क्रोध एवं अहं का विसर्जन करें।
4. स्वयं की सुख-सुविधाओं का नियोजन करें।
5. आपसी सामंजस्य को बढ़ायें, एक-दूसरे पर विश्वास करें।
6. कान के कच्चे न बनें।
7. स्वार्थ का परित्याग करें।
8. अहिंसा प्रधान जीवन शैली को जीवन का अंग बनायें।
9. भूलो और माफ करो के सिद्धांत को स्वीकारें।
10. प्रत्येक परिस्थिति को सम भाव से स्वीकारें।

अणुव्रत आचार संहिता आधारित स्वस्थ अणुव्रत परिवार एवं समाज का सपना भी यहीं है। अणुव्रत गीत ‘संयममय जीवन हो’ का यही संदेश है। अणुव्रत कहता है सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा। अणुव्रत आचार संहिता को स्वीकार कर हम अपने परिवार को स्वस्थता प्रदान कर सकते हैं। अणुव्रत के आलोक में हम सभी नववर्ष 2010 में प्रवेश करें।

◆ डॉ. महेन्द्र कर्णावट

स्वस्थ व्यक्ति : स्वस्थ समाज

• आचार्य तुलसी •

व्यक्ति, समाज या राष्ट्र कोई भी हो, स्वस्थ होना सबके लिए आवश्यक है। स्वस्थिति स्वस्थः जो अपने आप में रहता है वह स्वस्थ है। सुशोभनानि अस्थीनि यस्य सः स्वस्थः जिसकी अस्थियाँ मजबूत होती हैं, वह स्वस्थ है। अध्यात्मशास्त्र और शरीरशास्त्र की इन दो परिभाषाओं का समन्वय रूप स्वस्थता की संक्षिप्त एवं सारगर्भित व्याख्या है।

स्वस्थ कौन हो? व्यक्ति का स्वास्थ्य बुनियाद है। व्यक्ति-व्यक्ति के योग से समाज बनता है। यहाँ समाज का स्वास्थ्य अभिप्रेत है। समाज हो और वह व्यवस्थित न हो तो उसकी संरचना नहीं हो सकती। स्वस्थ समाज संरचना की कल्पना जितनी सुखद है, उस रूप में काम हो जाए तो मनुष्यों का लोक बहुत सुंदर हो सकता है। समाज व्यवस्था में उभरने वाली विकृतियों को देखकर स्वस्थता की बात आकाश कुसुम बन रही है। ऐसी स्थिति में इस विषय पर सोचना भी आश्चर्य जैसा लगता है।

चिंता किसको है?

स्वस्थ, समाज, संरचना तीन सकारादि शब्दों के योग से बना या वाक्य शब्द संयोजना की दृष्टि से मन को लुभाने वाला है। पर इसकी चिंता किसको है? सब लोग अपनी दाल-रोटी में मस्त हैं। भारतीय जनता का चिंतन वैसे भी बहुत संकीर्ण है। वह जिस स्थिति में रह रही है, उसी में संतुष्ट है। उसकी दाल-रोटी में कोई व्यवधान नहीं आता है तो देश की सुव्यवस्था या

दुर्व्यवस्था की उसे कोई चिंता नहीं होती।

इस देश के फुटपाथों पर जिंदगी बसर करने वाले व्यक्ति को सरकार से कोई शिकायत नहीं होती, तब तक उसे वहाँ से हटाया नहीं जाता है। ‘गाड़िया लुहारों’ की पूरी जाति कहीं घर बसाकर नहीं रहती। इस जाति के लोगों का जन्म, मरण, शादी-विवाह,

समाज के निर्माण की चिंता कौन करेगा और क्यों करेगा?

आकर्षण के दो बिन्दु

जो लोग समाज में अपनी जड़ें जमाकर खड़े हैं, जिनके सामने जीविका की समस्या नहीं है, जो पर्याप्त सुख-सुविधाओं का भोग कर रहे हैं, वे लोग भी समाज निर्माण की चिंता से मुक्त हैं। उनके सामने मुख्यतः दो

समाज हो और वह व्यवस्थित न हो तो उसकी संरचना नहीं हो सकती। स्वस्थ समाज संरचना की कल्पना जितनी सुखद है, उस रूप में काम हो जाए तो मनुष्यों का लोक बहुत सुंदर हो सकता है। समाज व्यवस्था में उभरने वाली विकृतियों को देखकर स्वस्थता की बात आकाश कुसुम बन रही है। ऐसी स्थिति में इस विषय पर सोचना भी आश्चर्य जैसा लगता है। जिस दिन मनुष्य के मन में स्वस्थ समाज की संरचना के लिए बेचैनी जाग जाएगी, उस दिन समाज-निर्माण का सपना अधूरा नहीं रहेगा। समाज-निर्माण की बुनियाद है व्यक्ति-निर्माण। जब तक व्यक्ति स्वस्थ नहीं होगा, वह समाज को स्वस्थ नहीं होने देगा।

उत्सव, जीविका, विश्राम आदि सब कुछ उनकी गाड़ियों के आस-पास घटित होता है। उन्हें स्थायी आवास देने की बात कोई सोचता भी है तो उनके गले नहीं उत्तरती। घुमक्कड़ जिंदगी में ही उनको सुख का अनुभव होता है। बात मानसिकता की है। जब तक व्यक्ति की मानसिकता नहीं बदलती, बेहतर स्थिति भी उसे बदतर लगती है। ऐसी स्थिति में स्वस्थ

आकर्षण हैं काम और अर्थ। मनुष्य की कामनाओं और वासनाओं का जंगल इतना बड़ा है कि उनमें घुसने के बाद निर्गमन का रास्ता नहीं मिलता। यह एक प्रकार की भूलभूलैया है।

मनुष्य की प्रवृत्ति के केंद्र में दूसरा तत्व है अर्थ। अर्थ जीवन की आवश्यकता है। पर उसका दर्जा चरित्र से ऊँचा नहीं हो सकता। जहाँ अर्थ के लिए चरित्र शून्य में चला जाता है, वहाँ व्यक्ति

अपने निर्माण की बात भी भूल जाता है। अर्थ-प्राप्ति की लक्ष्यहीन प्रतिस्पर्धा चरित्र के कद को बौना बनाकर मनुष्य को पशुता की दिशा में ले जा रही है। उसके विवेक पर पर्दा डाल रही है। ऐसी स्थिति में समाज को स्वस्थ बनाने की चिंता कौन करेगा?

चिंतन के स्तर पर चिंता एक बात है और भीतर से निकली हुई चिंता दूसरी बात है। उससे व्यक्ति बेचैन हो जाता है। उसके लिए जो कुछ करणीय होता है, उसे किए बिना वह रह नहीं सकता। सोते-जागते, खाते-पीते, उठते-बैठते उसे वही दिखाई देता है।

कौन है स्वस्थ

जिस दिन मनुष्य के मन में स्वस्थ समाज की संरचना के लिए बेचैनी जाग जाएगी, उस दिन समाज-निर्माण का सपना अधूरा नहीं रहेगा। समाज-निर्माण की बुनियाद है व्यक्ति-निर्माण। जब तक व्यक्ति स्वस्थ नहीं होगा, वह समाज को स्वस्थ नहीं होने देगा।

जो व्यक्ति सदा हितकर भोजन करता है, भ्रमण करता है, विचारपूर्वक काम करता है, इन्द्रिय के विषय में आसक्त नहीं होता, उदार हृदय होता है, समझ में रहता है, सत्यनिष्ठ होता है, सहिष्णु रहता है और आपत्पुरुषों के सान्निध्य से लाभान्वित होता है, वह स्वस्थ होता है।

शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तीनों दृष्टियों से स्वस्थ होना स्वस्थता की सर्वांगीण पहचान है। व्यक्ति-व्यक्ति इस रूप में स्वास्थ्य लाभ करेगा तो स्वस्थ समाज की संरचना अपने आप घटित हो सकती है।

गाँधी के सपनों का भारत

महात्मा गाँधी ने एक सपना देखा था। स्वतंत्र और सुंदर भारत का सपना। उनके द्वारा देखे गए सपने के भारत में कोई व्यक्ति नशाखोर नहीं था। किसी के मन में छुआछू की भावना नहीं थी। कोई निरपराध प्राणी को सताने वाला नहीं था। कोई किसी को धोखा देने वाला नहीं था। देश की आजादी के साथ-साथ मैंने अणुव्रत का अभियान शुरू किया। अणुव्रत की आचार-संहिता गाँधी के स्वप्न को आकार देने वाली आचार-संहिता है। गाँधी के नाम पर जिनको गौरव है, जो गाँधी के स्वप्न को साकार करना चाहते हैं और एक स्वस्थ समाज के निर्माण में योगभूत बनना चाहते हैं, उनका दायित्व है कि सबसे पहले अपने आपको स्वस्थ बनाएं। स्वस्थ और सुंदर बनने की आकांक्षा से बहुत लोग केवल शरीर पर ध्यान दे रहे हैं। वे शरीर को सजा रहे हैं और उसी की चिकित्सा करा रहे हैं। बाह्य सौंदर्य व्यर्थ नहीं होता, पर वही सब कुछ नहीं होता। समाज को स्वस्थ बनाने के लिए उसके आंतरिक सौंदर्य को निखारना जरूरी है।



राष्ट्र विनाश

◆ मंत्रियों के कामकाज में किसी तरह की चूक नहीं रहनी चाहिए और न ही कोई विभाग निर्धारित लक्ष्य पूरे करने में कोताही बरतें। मंत्रियों और विभागों की परफार्मेंस रिपोर्ट होनी चाहिए। इस संदर्भ में ज्यादातर सहयोगियों को भी कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। इस संदर्भ में सभी सरकारी विभागों के सचिवों को एक पत्र भेजकर बता दिया गया है कि सभी विभाग अपने निर्धारित लक्ष्यों और उस पर हुए अमल के बाबत पूरा ब्यौरा 30 नवंबर तक भेज दें ताकि उनकी समीक्षा की जा सके। इससे न केवल सरकार के कामकाज के तरीके में मूलभूत बदलाव आएगा, बल्कि सरकार के एक खास दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ने और बेहतर नतीजे हासिल करने में भी सहायता मिलेगी।

डॉ. मनमोहन सिंह
प्रधानमंत्री

◆ सह-संघीयता यानी को-ऑपरेटिव फेडरलिज्म का मतलब सिर्फ राजस्व में साझेदारी ही नहीं है, बल्कि आम लोगों की जरूरतों से संबंधित मामलों में जिम्मेदारी भी उठाना है। केन्द्र ने सस्ते राशन की उपलब्धता के लिए बजट का बंदोबस्त कर दिया। अब आगे इसके समुचित वितरण की व्यवस्था करना राज्यों की जिम्मेदारी में आता है।

प्रणव मुखर्जी
वित्त मंत्री

◆ सम्मान की खातिर की जाने वाली हत्याओं (ऑनर किलिंग) को देश में नृशंस अपराध माना जाता है तथा इसके लिए मृत्युदंड का प्रावधान है। अन्य देशों की तरह भारत का रुख इस मामले में लचर नहीं है तथा ऐसे मामलों में अपराधी के प्रति जरा भी नरम रवैया नहीं अपनाया जाएगा। कई देशों में इज्जत की रक्षा के लिए की जाने वाली हत्या को दूसरी हत्या की वारदातों की तुलना में छोटा अपराध माना जाता है। लेकिन भारत में इसे हत्या के रूप में एक नृशंस अपराध माना जाता है।

अजय माकन
केन्द्रीय गृहराज्य मंत्री



समाज में सबसे बड़ा घुण, जो समाज के अस्तित्व को खतरा पहुँचाने वाला है, वह है अविश्वास। दो आदमी साथ में रहते हैं, इसलिए एक दूसरे का एक दूसरे पर विश्वास है। अविश्वास हो और फिर साथ में रहें तो मुश्किल हो जाता है, फिर साथ में रह भी नहीं सकते और अगर रहें तो जीवन अच्छा नहीं हो सकता। सबसे बड़ा तत्त्व है विश्वास।



अविश्वास का हेतु है : असत्य

• आचार्य महाप्रज्ञ •

आदमी जिंदा है। इसका कारण है कि वह श्वास ले रहा है। श्वास जीवन का एक लक्षण है। जो श्वास लेता है वह जीवित रहता है। श्वास बंद हो जाने पर मृत घोषित कर दिया जाता है। श्वास और जीवन दोनों जुड़े हुए हैं।

जीवन का लक्षण है आश्वास। व्यक्ति जब तक जीवित रह सकता है जब तक उसको आश्वासन प्राप्त रहता है कि मुझे कोई खतरा नहीं है। मैं अच्छी तरह काम कर सकता हूँ, मैं सबके साथ रह सकता हूँ। व्यक्ति के पास परिवार का आश्वासन है, समाज का आश्वासन है, कुछ बातों में सरकार का आश्वासन है और सबसे बड़ा आश्वासन है धन का। अपने आप सारा काम ठीक हो जाएगा।

चोपड़ा गांव से प्रस्थान करते समय अरुण भाई साथ चल रहे थे। उन्होंने कहा धन की महिमा तो बहुत बड़ी है। इस प्रसंग में उन्होंने एक कवि का वाक्य सुनाया ‘धन ईश्वर नहीं है, किन्तु ईश्वर की कसम है कि धन ईश्वर से कम नहीं है।’ धन का भी आश्वासन होता है। जिसके पास धन है उसे न रोग के समय चिंता रहती, न बुढ़ापे की चिंता रहती, न और कोई चिंता।

श्वास और आश्वास के आधार पर ही हमारा जीवन नहीं चल रहा है।

जीवन का एक और घटक तत्त्व है विश्वास। सदैहशील व्यक्ति अच्छा जीवन नहीं जी सकता। सदैह में सदा मृत्यु का अनुभव होता रहता है।

समाज में सबसे बड़ा घुण, जो समाज के अस्तित्व को खतरा पहुँचाने वाला है, वह है अविश्वास। दो आदमी साथ में रहते हैं, इसलिए एक दूसरे का एक दूसरे पर विश्वास है। अविश्वास हो और फिर साथ में रहें तो मुश्किल हो जाती है, फिर साथ में रह भी नहीं सकते और अगर रहें तो जीवन अच्छा नहीं हो सकता। सबसे बड़ा तत्त्व है विश्वास।

दार्शनिक कन्प्यूशियस से पूछा गया एक अच्छे राष्ट्र के लिए किन-किन बातों की जरूरत है। उन्होंने उत्तर दिया तीन बातों की जरूरत है। पहली जरूरत है अनाज, दूसरी जरूरत है स्वास्थ्य और तीसरी जरूरत है विश्वास। भूख को शांत करने के लिए अनाज जरूरी है, अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए स्वास्थ्य जरूरी है और अच्छा जीवन जीने के लिए विश्वास जरूरी है। जिसके मन में सदैह होता है, उसका दिल कमजोर होता है। उन्हें छोटी-छोटी बातों पर सदैह होता है।

राजस्थान में गाड़िया लुहार हमेशा खुली छत के नीचे ही रहते हैं। उन्हें

अच्छा मकान कभी सोने के लिए मिल भी जाता है तो सदैह बना रहता है।

गाड़िया लुहार ने गांव के बाहर डेरा जमाया। पास के मकान वाले ने उसको देखा। सर्दी बहुत ज्यादा है, शीत लहर है, बेचारा मर जाएगा, कांप उठेगा। उसने बड़ी अनुकूल के साथ कहा भाई! खुले में मत सोओ। यह मेरा मकान है, इसमें आकर सो जाओ। उसने मनुहार मान ली। वहाँ पर सो गया। सुबह उठा तो पूछा रात्रि में कैसे रहा? आज तो तुम्हें नींद अच्छी आ गई, अच्छा स्थान मिल गया? बोला मुझे नींद नहीं आई। रात भर मेरे मन में तो यह सदैह रहा कि कहीं छत गिर न जाए।

जब सदैह है तो जीने का रस ही समाप्त हो जाता है। विश्वास के बिना जीवन नहीं चलता। सबसे बड़ा विश्वास है अहिंसा और सत्य। इनसे बढ़कर कोई कारक तत्त्व नहीं है, जिस पर हम भरोसा कर सकें। अंतिम भरोसा अगर किसी पर करें तो अहिंसा पर करें, सत्य पर करें। सिन्दूरप्रकर में ठीक कहा है ‘असत्यमप्रत्ययमूलकारण’ असत्य ही अविश्वास का कारण है। अहिंसा विश्वास है। हिंसा में विश्वास नहीं है। हर आदमी के मन में सदैह पैदा हो रहा है। बड़े-बड़े शहरों में व्यक्ति सोचता है कि ट्रेन में जा रहा हूँ, कहीं बम विस्फोट न हो जाए।

बस में जा रहा हूँ, कहीं बम विस्फोट न हो जाए। जब कभी हवाई अड्डे पर यह घोषणा होती है कि हवाई जहाज में कोई बम विस्फोट होने वाला है तो चारों ओर अफरा-तफरी मच जाती है, भाग-दौड़ शुरू हो जाती है क्योंकि विश्वास नहीं है। जहाँ हिंसा है वहाँ आदमी विश्वास नहीं कर सकता। पल-पल में संदेह और उससे उत्पन्न होने वाला तनाव तथा भय का वातावरण पैदा कर सकता। जहाँ असत्य है, वहाँ कभी विश्वास नहीं होता। कोई आदमी झूठ बोलता है उसका कोई भरोसा नहीं करता।

एक कर्मचारी ने अपने प्रबंधक से कहा श्रीमन्! मुझे तीन महीने की छुट्टी की जरूरत है।

क्यों?

मेरी पत्नी बीमार है। मुझे उसकी सेवा करनी होगी, लम्बी चिकित्सा करानी होगी, इसलिए मुझे आवश्यकता है।

प्रबंधक ने कहा अभी मैं स्वीकृति नहीं दे सकता। मैं पहले पता कराऊँगा कि तुम्हारी पत्नी स्वस्थ है या बीमार है या तुम झूठा बहाना बना रहे हो। अगर कोई आदमी झूठ नहीं बोलता तो इस प्रकार का व्यवहार कभी नहीं होता। पर मन में संदेह है कि यह सच कह रहा है या झूठ कह रहा है तो फिर पता करना चाहिए। उसने कहा एक सप्ताह ठहरो, मैं पता कर लेता हूँ। वह ठहर गया। सप्ताह पूरा हुआ और वह फिर आया बोला श्रीमन्! मुझे छुट्टी चाहिए।

प्रबंधक हमने पता लगवा लिया है कि तुम्हारी पत्नी बिल्कुल स्वस्थ है, तुम्हें छुट्टी की जरूरत नहीं है, फिर क्यों ले रहे हो?

कर्मचारी श्रीमन्! मैंने झूठ बोला, आप मुझे क्षमा करें। मेरी तो अभी शादी ही नहीं हुई, पर आप मुझसे भी ज्यादा झूठ बोल रहे हैं ‘आपने पता करवा लिया कि मेरी पत्नी स्वस्थ है।’

अविश्वास का सबसे बड़ा कारण है असत्य भाषण। इसलिए बुद्धिमान आदमी को कभी असत्य वचन और

असत्य व्यवहार नहीं करना चाहिए। क्योंकि समाज विश्वास के आधार पर चलता है।

एक परिवार के दस लोग साथ रहते हैं, साथ में जीते हैं, कारण है विश्वास। कभी किसी पति ने यह परीक्षा नहीं कराई कि मुझे पत्नी भोजन परोस रही है, कहीं जहर तो नहीं दे रही है। लेकिन बड़े-बड़े लोग भोजन करते हैं, उसकी परीक्षा होती है, उसका निरीक्षण करने के लिए पूरा दल आता है। कहीं कोई जहर तो नहीं मिला दिया, अविश्वास का वातावरण रहता है। विश्वास है इसलिए आप सब लोग साथ में बैठे हैं। अगर अविश्वास हो तो कोई बैठ नहीं सकता, हर पल संदेह रहता है कि साथ में बैठे हैं, पता नहीं क्या हो जाएगा।

हम निर्णय कर सकते हैं कि समाज की जो व्यवस्था चल रही है वह समाज के मूल आधारों पर चल रही है। समाज के मूल आधार क्या हैं?

समाज का सबसे महत्वपूर्ण आधार है अहिंसा। अगर अहिंसा की भावना न हो तो दो व्यक्ति साथ नहीं रह सकते। दो व्यक्ति साथ में तभी रह सकते हैं जब मन में अहिंसा की भावना हो और आपस में समझौता हो कि तुम मुझे हानि नहीं पहुँचाओगे, मैं तुम्हें हानि नहीं पहुँचाऊँगा। फिर वह परिवार साथ में नहीं रह सकता। समुदाय बनाने का अथवा समाज बनाने का मूल आधार है अहिंसा। आज हमने अहिंसा को बहुत भुला दिया। कोई किसी को कष्ट न पहुँचाए, सब अपने-अपने अधिकार की सीमा में रहें और कोई कुछ न करे, इस समझौते के आधार पर समाज बना।

हिंसक पशुओं का कभी समाज नहीं बना। हजारों-हजारों वर्ष बीत गए। जंगल में हजारों पशु रहते हैं, पर समाज नहीं बना पाये। कारण स्पष्ट है कि उनमें यह अहिंसा का समझौता नहीं है। तुम मुझे कष्ट मत पहुँचाओ, मैं तुम्हें कष्ट नहीं पहुँचाऊँगा। यह समझौता भी नहीं है और यह विश्वास भी नहीं है।

अहिंसा का दूसरा सूत्र है व्यक्ति परिवार में शांति से रहे। आज समाज का विघ्टन हो रहा है, परिवार टूट रहे हैं। हिन्दुस्तान की बहुत बढ़िया प्रथा थी संयुक्त परिवार। संयुक्त परिवार में बहुत आदमी एक साथ रहते और सब काम सहमति से होता। यह एक बड़ा प्रयोग था। अहिंसा का व्यावहारिक प्रयोग था, किन्तु आज संयुक्त परिवार खोजना भी मुश्किल है। हमने राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में देखा जहाँ सौ-दो सौ लोगों की रसोई एक साथ बनती थी। आज तो दस लोगों की रसोई एक साथ बन जाए, बड़ी बात है। दस भाइयों के दस चूल्हे अलग जल जाते हैं। कभी-कभी तो पति-पत्नी का ही चूल्हा अलग-अलग जलता है। पति की रसोई अलग बनती है, पत्नी की अलग बनती है। दोनों एक साथ नहीं रह सकते। सामुदायिकता कैसे संभव होगी? अहिंसा का विकास हुए बिना दो आदमी अच्छी तरह से साथ नहीं रह सकते, इसलिए अहिंसा हर आदमी के लिए जरूरी है।

अगर अहिंसा का विकास नहीं है तो अकेला व्यक्ति भी सुख से नहीं रह सकता। आदमी केवल दूसरों की हिंसा नहीं करता। हर व्यक्ति अपने नकारात्मक चिंतन, विचार और भाव के कारण डिप्रेशन में चला जाता है, तनाव से भर जाता है और आत्महत्या कर लेता है। अहिंसा का सबसे पहला सूत्र है व्यक्तिगत जीवन में आदमी आनंद के साथ जीए।

अहिंसा का रूप है सत्य और हिंसा का रूप है असत्य। जहाँ हिंसा है, वहाँ झूठ बोलना अनिवार्य है। चाहे सीमा का प्रश्न हो, चाहे चुनाव का प्रश्न हो, जहाँ हिंसा है वहाँ झूठ बोलना जरूरी होगा। वह व्यक्ति कहेगा कुछ और करेगा कुछ, इसलिए भरोसा नहीं होता कि वह कह गया कि यहाँ आऊँगा पर यहाँ नहीं आएगा। पता नहीं कहाँ जाएगा, भरोसा नहीं हो सकता।

एक चरवाहा था। उसे झूठ बोलने की आदत थी और झूठ बुलवाने में उसे

मजा भी आता था। वह झूठी अफवाहें भी फैलाता था। जंगल में भेड़-बकरियों को चराता था। चराते-चराते तत्काल बोलता आओ-आओ, दौड़कर आओ चीता आ गया, कभी कहता भालू आ गया। एक बार लोग इकट्ठे हो गए, फिर देखा यहाँ कोई नहीं है। एक-दो बार आए, कुछ नहीं निकला तो विश्वास समाप्त हो गया।

जब विश्वास समाप्त होता है तो आदमी खतरे में चला जाता है। एक दिन सचमुच चीता आ गया। आदमी पेड़ पर चढ़ा हुआ था। देखा चीता आ रहा है और चिल्लाया आओ-आओ बचाओ इतने में चीता आ गया। लोगों

नहीं हैं सबसे सुपर कम्प्यूटर तो मेरा मस्तिष्क है। आखिर कम्प्यूटर बनाने वाला यह दिमाग ही तो है, जिसमें इतनी शक्ति है, इतनी क्षमता है।

यह सम्पूर्ण सृष्टि, जो हमें दिखाई दे रही है किसने बनाई? आदमी ने बनाई है। मकान किसने बनाया? आदमी ने बनाया है। कपड़ा किसने बनाया? खेती किसने की? यह माईक किसने बनाया? ये फिल्में किसने बनाई। सारा निर्माण आदमी ने किया है। आदमी का दिमाग बहुत अधिक शक्तिशाली है। ऐसा बढ़िया मस्तिष्क मिला और ऐसे बढ़िया हाथ मिले, पैर मिले। एक चिंतन करने वाला मस्तिष्क, दो

कि इतना गरीब तो नहीं है, उसके पास बहुत कुछ है।

सन्यासी तुम्हारा घर कहाँ है?

गरीब झोपड़ी में रहता हूँ।

झोपड़ी कहाँ है?

इधर पास ही है। चलो वहाँ चलेंगे।

सन्यासी वहाँ आया, उसको साथ में ले लिया। दोनों गए, झोपड़ी को देखा। ऊपर देखा, नीचे देखा, दाएं देखा, बाएं देखा और एक आकांक्षा के साथ, जिज्ञासा के साथ उसको देखा।

सन्यासी यह क्या है? पथर है।

क्या काम आता है?

चटनी पीसने के काम में लेता हूँ।

सन्यासी कितना मूर्ख आदमी है।

यह पथर नहीं है, यह तो पारसमणि है।

पारसमणि क्या होता है? लोहा छुआओ, सोना बन जाता है।

तुम्हारे घर में तो पारसमणि है और तू कहता है मैं गरीब हूँ।

जो नहीं जानता यह पारस है, उसका उपयोग क्या होता है? वह चटनी पीसने के लिए ही उसे काम में लेता है। मनुष्य में जितनी शक्ति है उतनी शक्ति तो पारसमणि में भी नहीं है। मनुष्य के दिमाग में तो ज्यादा शक्ति है। पर काम क्या आ रहा है दिमाग का। चटनी पीसने के काम आ रहा है।

दिमाग सारा नकारात्मक भावों में लग रहा है। कभी ईर्ष्या, कभी द्रेष, कभी राग, इन कामों में दिमाग का व्यय हो रहा है। दिमाग के द्वारा जो सृजनात्मक काम होना चाहिए उसमें उसका प्रयोग नहीं हो रहा है। इसलिए नहीं हो रहा है कि उसमें अहिंसा का विकास नहीं है। जो पदार्थ का विकास, भौतिक विकास, अहिंसा के संतुलन के बिना होता है, उसके विकास के बिना होता है वह विकास भी आदमी को नुकसान पहुँचाने वाला बन जाता है।

हम विचार करें कि जीवन का उपयोग कैसे करें? मनुष्य की शक्ति का उपयोग कैसे करें? इस विषय पर

तीन बातों की जखरत है। पहली जखरत है अनाज, दूसरी जखरत है स्वास्थ्य और तीसरी जखरत है विश्वास। भूख को शांत करने के लिए अनाज भी जखरी है, अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए स्वास्थ्य जखरी है और अच्छा जीवन जीने के लिए विश्वास जखरी है। जिसके मन में संदेह होता है, उसका दिल कमजोर होता है। उन्हें छोटी-छोटी बातों पर संदेह होता है।

ने कहा यह तो ऐसे ही झूठ बोलता है, कोई नहीं आया होगा। अविश्वास का बहुत बड़ा कारण है असत्य भाषण। हिंसा और असत्य, अहिंसा और सत्य दोनों अलग-अलग नहीं हैं।

जिस प्राणी को मनुष्य का शरीर मिला है और वह अगर अच्छा जीवन नहीं जी सकता तो शायद दुनिया का कोई प्राणी अच्छा जीवन नहीं जी सकता। मनुष्य जैसा शरीर किसी को नहीं मिला है। इतना विस्तृत बढ़िया मस्तिष्क, जिसमें असीम शक्ति है। दुनिया की किसी भी वस्तु में वह शक्ति नहीं है। कहते हैं कम्प्यूटर ने बहुत चमत्कार दिखाया है। बिल गेट्स, जो कम्प्यूटर का सर्वोपरि आदमी माना जाता है, उसने कहा यह कम्प्यूटर कुछ

क्रियान्वित करने वाले हाथ, दो क्रियान्वित करने वाले पैर, क्रियान्वित करने वाले पंचांग परिपूर्ण मनुष्य का शरीर मिला, वह व्यक्ति भी जीवन में अहिंसा का विकास नहीं कर सकता, सत्य का विकास नहीं कर सकता, इतना मिलने पर भी दरिद्र रह जाता है, इतनी संपत्ति होने पर भी गरीब का गरीब बना रह जाता है, उससे कोई लाभ नहीं उठा सकता, इससे बढ़कर खेद का विषय और क्या होगा?

एक गरीब आदमी था। किसी बाबा या सन्यासी के पास गया।

गरीब बाबा! बहुत गरीब हूँ। रोटी नहीं मिल रही है, घर का काम नहीं चल रहा है, मुझे कुछ दो।

सन्यासी ने उसे देखा और लगा

जब चिंतन किया गया तो हमारे अनेक पूर्वज तत्त्वेताओं और ऋषियों ने कहा कि 'भैतिं भूएसु कप्पए' सब जीवों के साथ मैत्री करो यह भगवान महावीर का वचन है। उपनिषद में कहा सर्वा आशा मम मित्राणी सन्तु।

सब दिशाएं मेरी मित्र बनें। यह मैत्री है, यह जीवन का सबसे बड़ा आधार है। जहाँ श्वास भी अच्छा हो जाता है, आश्वास भी पूरा रहता है और विश्वास भी पूरा रहता है। जहाँ मैत्री है, पूरा विश्वास है, आदमी अपने मित्र के साथ कभी धोखा नहीं करता और कभी संदेह भी नहीं करता, उसे पूरा भरोसा रहता है कि यह मेरा मित्र है। मित्र का मतलब हित चाहने वाला। जो हित को चाहता है, वह अपना मित्र होता है। मैं तो बहुत बार सोचता हूँ और कहता भी हूँ कि हर आदमी को एक मित्र बनाना चाहिए। हर आदमी को मित्र की जरूरत है। पर मित्र कौन बने? कोरी प्रियता करने वाला मित्र नहीं हो सकता। प्रियता का संबंध आज है कल टूट जाएगा। हित के आधार पर होने वाली मैत्री अर्थात् अहिंसा के आधार पर होने वाली मैत्री। स्थाई रह सकती है।

हम चिंतन करें अहिंसा पर और सत्य वचन पर। आचार्य सोमप्रभ ने ठीक लिखा है अविश्वास का कारण क्या है? असत्य। झूठ बोलता है उसका कभी भरोसा नहीं होता। कोई आदमी उस पर भरोसा नहीं कर सकता। एक झूठ बोलने वाला भी अपने यहाँ किसी को नौकरी में रखेगा तो पता लगाएगा कि यह झूठ बोलता है या सच बोलता है? अपनी नौकरी में उसको चाहेगा, जो झूठ न बोलें। झूठ बोलने वाले प्रायः धोखा देते हैं।

एक व्यक्ति, जो आलसी भी था और झूठ भी बहुत बोलता था। विज्ञापन निकला कि नौकर की जरूरत है। जो दिन भर काम करता रहे। साक्षात्कार लेने कुछ लोग आए। नौकर बोलने में बड़ा माहिर था। झूठ बोलना जानता

था। झूठ बोलने वाले लोग माहिर भी हो जाते हैं, चतुर बन जाते हैं। नौकर हुजूर! मुझे आप रख लें। मैं आपका काम करूँगा।

कितने घंटे काम करोगे?

कितना क्या? सारा दिन भर आपका काम करता रहूँगा और मैं काम करने से कभी थकता नहीं हूँ।

उसका वाक् चातुर्य मालिक को अच्छा लगा। उसकी वाणी पर विश्वास हो गया।

झूठ पर जो विश्वास होता है, वह टिकता नहीं है। टिकता है सत्य पर होने वाला विश्वास, पर क्या एक क्षण के लिए असत्य पर भी विश्वास हो जाता है। विश्वास में आकर नौकर को रख लिया। पहले ही दिन पता लगा कि वह तो खाट पर सोया हुआ है। एक दो दिन देखा।

मालिक ने कहा अरे! तूने कहा था कि मैं दिन भर काम करता हूँ थकता नहीं हूँ और तू तो खाट पर पड़ा है।

मालिक! खाट पर पड़ा हूँ इसलिए नहीं थकता हूँ। मैंने तो यही कहा था कि दिन भर थकता नहीं हूँ। खाट पर पड़ा हूँ इसलिए नहीं थकता हूँ।

आदमी झूठ बोलकर कितने दिन रह सकता है। आखिर उसे छोड़ना पड़ा। यह असत्य भी बहुत बड़ा कारण है अविश्वास पैदा करने का। मैं तो मानता हूँ कि अगर असत्य नहीं होता, हिंसा नहीं होती, तो आदमी में इतना विश्वास होता कि कोई गला भी काट दे तो चिंता नहीं होती, किन्तु हिंसा और असत्य के कारण आदमी गलत कार्य कर रहा है। पति का पत्नी पर पत्नी का पति पर विश्वास नहीं होता। बाप का बेटे पर, बेटे का बाप पर विश्वास नहीं होता, गुरु का शिष्य पर विश्वास नहीं होता, शिष्य का गुरु पर विश्वास नहीं होता। कारण सबको लग रहा है कि जो कहा जा रहा है, वह कहाँ से कहा जा रहा है। बोलचाल की भाषा में कुछ लोग कहते हैं मैं हृदय से कह रहा हूँ। हृदय तो बेचारा बोलता ही नहीं है पर

झूठा आश्वासन है और शपथ खाई जाती है, भगवान की।

दो बड़ी समस्याएं हैं, इन पर विचार करें पहली समस्या हिंसा की और दूसरी है असत्य की। हम लोग अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। अपने प्रति अहिंसा करो। दूसरों के प्रति अहिंसा का चिंतन करो। हिंसा और असत्य संभाषण के कारण समाज का विकास नहीं हो रहा है। चंदा होता है गायों के नाम पर और बीच में पता नहीं कहाँ चला जाता है। सरकार देती है पशुओं के लिए बीच में कितने व्यक्ति परस्पर मिल जाते हैं, वह ऊपर का ऊपर समाप्त हो जाता है। ये झूठ बोलने वाले पशु से कम नहीं हैं। किसके नाम पर लिया जाता है, कहाँ चला जाता है। इस व्यवहार के कारण समाज की व्यवस्था में व्यवधान आ रहा है। समाज की व्यवस्था अच्छी नहीं चल रही है।

हर आदमी को समझना है कि मैं अहिंसा से कैसे बचूँ, झूठ से कैसे बचूँ। बड़ा कठिन काम है। उसके लिए एक विकल्प है ध्यान। जब तक आदमी ध्यान के द्वारा मन की चंचलता को कम नहीं करेगा तब तक इनसे बचना मुश्किल है। मानसिक चंचलता सारी समस्याएं पैदा कर रही है। भारतीय संस्कृति में ध्यान को बहुत महत्व दिया था, किन्तु हमने ध्यान करना छोड़ दिया। चंचलता इतनी ज्यादा बढ़ गई कि आदमी पल-पल झूठ बोलता है। झूठ बोलने में बहुत माहिर हो रहा है। एक आदमी झूठ बोलने में बहुत दक्ष था। किसी ने कहा तुम झूठ बोलने में बड़े माहिर हो। मुझे झूठ बोलकर बताओ। एक बार मैं पचास रुपये दूंगा। उसने कहा लाओ भाई साहब! सौ रुपये किस बात के? आपने कहा था। अरे मैंने पचास कहा था, नहीं-नहीं सौ का कहा था, अब क्यों झूठ बोल रहे हो, मुझे और झूठा बना रहे हो। ये सारी व्यवस्थाएं बिगड़ रही हैं हिंसा और असत्य के कारण। इसलिए हम एकाग्रता का अभ्यास करें, ध्यान का अभ्यास करें।

सहयोग से बनता है समाज

• मुनि किशनलाल •

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। व्यक्तियों के सहयोग के बिना समाज नहीं चल सकता। व्यक्ति परिवार बनाता है। समान विचार के परिवारों से समाज का निर्माण होता है। समाजों का मिलन प्रांत कहलाता है। कई प्रांत मिलकर राष्ट्र बनाते हैं। जिस राष्ट्र में जनता को विद्यान के अंतर्गत समान अधिकार प्राप्त होते हैं, वहाँ प्रजातंत्र, लोकतंत्र या जनतंत्र कहलाता है। राष्ट्र में कोई दल, व्यक्ति बलपूर्वक राष्ट्र की सरकार, सत्ता पर अधिकार जमा लेता है, वहाँ तानाशाही हो जाती है। वहाँ विधान खत्म कर दिया जाता है। विधान में तानाशाह अपने हिसाब से संशोधन कर लेता है। वहाँ तानाशाह की इच्छानुसार ही सरकार चलती है।

महावीर ने चार आगारों का प्रतिपादन किया है। व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र। कुछ बातें व्यक्तिगत ही होती हैं। श्वास लेना, देखना, सुनना, सुगन्ध-दुर्गन्ध का अनुभव करना, स्वाद का अनुभव करना, स्पर्श का अनुभव करना, चलना, रुकना, बैठना, खड़ा होना, स्मृति, चिंतन और कल्पनाएं करना आदि अनेक क्रियाएं व्यक्ति स्वयं ही करता है। दूसरे के आदेश से भी व्यक्ति स्वयं संचालित क्रियाओं को कर सकता है किन्तु करनी तो उसे स्वयं ही पड़ती है।

परिवार व्यक्ति घर बसाता है। संतानें भी होती हैं। संतानों का भरण-पोषण से लेकर शिक्षा, बीमारी का इलाज आदि परिवार के द्वारा ही की जाती है। अगर माता-पिता, भाई-बहनें हैं तो उनका पोषण भी परिवार के द्वारा ही किया जाता है। इस तरह परिवार गृहस्थ जीवन की महत्वपूर्ण इकाई है। माता-पिता, भाई-बहनों, स्वयं की पत्नी और संतानों को लेकर चलने वाला

संयुक्त परिवार होता है। संयुक्त परिवार कुछ समय तक चलता है फिर जैसे कोशिकाएं टूट कर एक से दो हो जाती हैं उसी तरह परिवार भी टूट कर कई परिवारों में विभक्त हो जाता है। चार भाई हैं तो चार परिवार हो जाते हैं। बहनें अपने सुसुराल चली जाती हैं। भाइयों की शादी होने से उनकी पत्नियां आ जाती हैं। संयुक्त परिवार में जब तक आपसी सहयोग बना रहता है, अच्छा चलता है। बाद में अलग परिवारों में बंट जाता है। संयुक्त परिवार रहते हुए भी अगर सब भाई अलग-अलग गांवों, कस्बों और शहरों में काम करते हैं तो उन्हें मजबूरन अलग रहना पड़ता है। यह भी परिवार के विभाजन का कारण बनता है। अगर आपसी सहयोग है परिवार अच्छा चलता है।

समाज अनेक परिवार जो प्रायः एक-सा धंधा करते हैं, उनका एक समाज बन जाता है। समाज होता है तो परिवारों के लोग आपस में मिलकर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। परिवारों के आपसी सम्बन्ध भी प्रेमभाव बढ़ाते हैं। जहाँ आपने लड़के या लड़की की शादी की है वह परिवार आपका सम्बन्धी बन जाता है। पिता ने जहाँ शादी की थी वह परिवार संतानों का ननिहाल बन जाता है। जहाँ भाइयों की शादी और बहनों की शादी हुई है वे परिवार सम्बन्धी बने हुए होते हैं। आपको अपने लड़के-लड़कियों के सम्बन्ध करने हैं तो ये सम्बन्धी या रिश्तेदार परिवार मददगार बनते हैं।

समाज में परिवारों का आपसी सहयोग बढ़ने से समाज के काम को आगे बढ़ाने के लिये संस्थाओं का गठन भी किया जाता है। बच्चों की शिक्षा की समस्या को हल करने के लिये विद्यालय,

महाविद्यालय खड़े किए जाते हैं। समाज के लोग इनमें सेवाएं देते हैं और आर्थिक सहयोग भी दिया जाता है। परिवारों में बीमारी की समस्याओं को हल करने के लिए अस्पताल, वित्तनिक आदि खोले जाते हैं जिनमें अच्छे डॉक्टरों और वैद्यों की सेवाएं उपलब्ध होती है। अगर किसी मरीज को शल्य चिकित्सा की जरूरत हो तो वह भी की जा सकती है। इस तरह बहुत से व्यक्तियों को शिक्षक और डॉक्टर, वैद्य के रूप में रोजगार मिल जाता है। समाजों के व्यक्तियों की चिकित्सा भी हो जाती है। समाज में सभी व्यक्ति आर्थिक रूप से धनवान नहीं होते। अतः कमज़ोर वर्ग के लिए समाज की तरफ से कम खर्च से या मुफ्त ईलाज की व्यवस्था भी की जाती है। यह सामाजिक सहयोग समाज के बहुत से समाजसेवी व्यक्तियों की सेवा और सहयोग से सम्पन्न और सफल होते हैं।

कहने को तो कहा जाता है कि मानव समाज एक है, किन्तु आज समाज में बहुत भेदभाव फैल गया है। इनमें मुख्य हैं 1. वर्ग भेद, 2. जाति भेद, 3. रंग भेद, 4. लिंग भेद, 5. क्षेत्र भेद, 6. विकसित और विकासशील देशों में भेदभाव, 7. संयुक्त राष्ट्र संघ में भेदभाव। इन पर थोड़ा चिंतन करें।

वर्गभेद कोई व्यक्ति या उसका परिवार बहुत धनी है तो वे लोग उच्चतम वर्ग के कहे जाते हैं। कोई उच्चतम वर्ग से कुछ नीची श्रेणी में आता है तो उसे उच्च वर्ग कहा जाता है। जो उच्च वर्ग से नीचे श्रेणी में है वह मध्यम वर्ग का है और जो मध्यम वर्ग से भी नीचे श्रेणी में है निम्न वर्ग का है। इस भेदभाव के चलते हर वर्ग के

रहन-सहन, खान-पान, विवाह-शादियों, जन्मदिन आदि पर्वों में बहुत समस्या खड़ी होती है। उच्चतम वर्ग जहाँ करोड़ों रुपये खर्च करता है तो उच्च मध्यम और निम्न वर्ग के खर्चों में भी देखा-देखी के कारण जखरत और औकात से अधिक खर्च किया जाता है। समाज में अनेक बार प्रस्ताव भी पास हो जाते हैं कि किसी को इतने से अधिक खर्च नहीं करना। पर सब प्रस्ताव धरे रह जाते हैं। लोगों में ईर्ष्या-द्वेष बढ़ता रहता है।

महावीर का शिष्य आनन्द बहुत धनी था। उसके पास उस जमाने में गोधन, खेती, स्वर्ण आदि का बहुत भंडार था किन्तु उसने अपने खर्चों की सीमा कर रखी थी। वह 2 लुंगी और 2 चद्दरों से काम चलाता था। नतीजा यह था कि आम गरीब उससे ईर्ष्या-द्वेष नहीं करते थे। जो धन था वह परमार्थ के काम में लगाता था। आनन्द तो स्वयं गरीब की तरह रहता था। अगर आज भी धनी वर्ग के सभी लोग अपने खर्च की सीमा भारत के गरीब तबके से 5 गुना तक भी कर लें तो देश में वर्गभेद में बहुत कमी आ जायेगी।

जातिभेद भारत में जाति भेद भी भयंकर है। भारत जातीय गुटों में बंट गया है। भारत की पूरी राजनीति जातीय गुटों पर स्थित है। आरक्षण की व्यवस्था इसलिए की गई थी कि निम्न जाति के लोग आर्थिक और शिक्षा की दृष्टि से ऊपर उठे और उच्च जातियों और उनमें भेदभाव खत्म होकर आपस में शादी-विवाह खुल जाएं लेकिन आज इतने वर्ष बीत जाने पर भी जातीय भेदभाव खत्म नहीं हो पाया है। अगर हम भारत को उच्च शक्तिशाली देश बनाना चाहते हैं तो जातीय भेदभाव और उसकी तरफ से लगाई गई पार्बद्धियों का समूल उच्छेद करना पड़ेगा। अन्यथा जातिभेद देश को ऊपर नहीं उठने देगा।

रंगभेद यह विश्वव्यापी समस्या है। अफ्रीका के नियों लोग काले रंग के हैं, इसलिए गोरे लोग उनके साथ भेदभाव रखते हैं। भारत में भी कुछ लोग काले

रंग के हैं और कुछ सांवले हैं। जब तक रंगभेद खत्म नहीं होगा इस देश के अलावा नियों लोग जो ज्यादातर अफ्रीका के हैं की उन्नति संभव नहीं है। अमेरिका और यूरोप के गोरे लोगों को विश्व उत्थान के लिए यह कदम उठाना पड़ेगा।

लिंगभेद स्त्री और पुरुष के अधिकार समान होने चाहिए। अब भारत में यह भेद काफी कम हो गया है। किन्तु किसी समय स्त्रियों को प्रायः जेल खाने की तरह घर में रखा जाता था। किन्तु विश्व के अन्य अनेक देशों में यह भेदभाव अभी भी है। भारत में मुस्लिम शासन के समय भेदभाव बढ़ा था। अन्यथा भारत में तो स्त्री को प्रथम दर्जा दिया हुआ था। यहाँ लोग सीता-राम का भजन करते हैं। सीता का नाम प्रथम और राम का द्वितीय। राधे-श्याम कहा जाता है क्योंकि राधा को प्रथम और श्याम को द्वितीय दर्जा दिया गया है। जिस देश में महिलाओं की उन्नति होगी वह देश आगे बढ़ेगा।

क्षेत्रभेद भारत एक देश है किन्तु प्रांत अनेक हैं। प्रांत अगर अपने को भारत देश का अंग मानते हुए कार्य करे तो उस प्रांत में किसी गरीब प्रांत से गये हुए लोगों और अपने प्रांत के लोगों के बीच कोई भेदभाव नहीं बरतेगा क्योंकि भारत के सभी लोग हमारे भाई हैं।

विकसित देश और विकासशील देशों में भेदभाव सभी देश अपना-अपना विकास चाहते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में कोई भी पीछे रहना नहीं चाहता। किन्तु विकसित देश स्वयं का विकास चाहते हैं और विकासशील देशों को अपने उत्पाद बेचने का बाजार बना कर वहाँ से धन कमाना चाहते हैं। अमेरिका जानता है कि भारत-पाकिस्तान के बीच मतभेद चल रहा है। वह पाकिस्तान को ऐसी मिसाइल बेच देता है जिसकी मारक क्षमता लम्बी होती है। जब भारत अमेरिका से सम्पर्क करता है और कहता है कि आपने पाकिस्तान को यह मिसाइल क्यों बेची? तो वह जवाब देता है कि

चिंता न करें, आप भी उसी क्षमता वाली मिसाइल हमसे खरीद लेवें। यानी दोनों ओर से कमाई। मुंह पर शांति का संदेश, भीतर में व्यापार का भाव।

संयुक्त राष्ट्र संघ में भी भेदभाव की व्यवस्था की हुई है। संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, रूस, फ्रांस और जापान जैसे कुछ राष्ट्रों को संयुक्त राष्ट्र संघ में विशेषाधिकार (वीटो पॉवर) दिया गया है। अगर संयुक्त राष्ट्र संघ में सब देश अपने बहुमत से कोई प्रस्ताव लाकर उसे पास कर लेवें तो विशेषाधिकार प्राप्त देशों में से कोई भी अपने वीटो पॉवर का प्रयोग करके उसे खारिज कर सकते हैं। यह व्यवस्था, जो कुछ चुनिन्दे चार-पांच देशों को विशेषाधिकार देती है, वैसी ही है जैसे भारत की जाति प्रथा। जाति प्रथा में ब्राह्मण जाति श्रेष्ठ, क्षत्रिय दो नंबर पर और वैश्य तीन नंबर पर थी। शुद्रों को कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे। अगर वे कोई प्रस्ताव पारित करते हैं तो अकेला ब्राह्मण समाज ही उसको खारिज कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी विश्व के चार-पांच देश ब्राह्मण और बाकी सभी शुद्र श्रेणी में आते हैं। जखरत इस बात की है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में सभी देशों को समान अधिकार प्राप्त हों। तभी राष्ट्रों के बीच आपसी सहयोग बढ़ सकता है।

मानव समाज में आपसी सहयोग बढ़े इसके लिए आवश्यकता है विश्व में फैले सातों आयामों के भेदभाव समाप्त किये जाएं।

1. वर्गभेद धनी और गरीब का भेद तो मिटाना कठिन है। मार्क्सवाद द्वारा दिया गया साम्यवाद और समाजवाद का सिद्धांत भी यह भेदभाव मिटा नहीं सका। इस भेदभाव को मिटाने का एक ही तरीका है और वह है खर्च को सीमित करना। गरीब आदमी की आमदनी जब तक नहीं बढ़े धनी व्यक्ति गरीब से 10 गुना से ज्यादा खर्च न करे तो आपसी रहन-सहन में बहुत ज्यादा भेदभाव खत्म हो जायेगा। यह काम कानून भी संभव है क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने खर्च को

छिपा नहीं सकता। इसी का दूसरा रूप है स्वयं अपने पर अनुशासन लागू करना। यह त्रैत लेना कि मैं गरीब व्यक्ति से 10 गुना से ज्यादा खर्च नहीं करूँगा।

वर्गभेद मिटाने का एक तरीका यह भी है कि देश में औद्योगिकरण का विकेन्द्रीकरण हो जाये। जैसे बड़े उद्योगों को कुछ महत्वपूर्ण उत्पादनों तक सीमित रखा जाये। कुछ उद्योग जिला स्तर और ग्राम स्तर पर रह कर उत्पादन कर सकते हैं। इस तरह जिला और ग्राम स्तर तक लोगों को रोजगार मिल सकता है। बड़े उद्योगों को जिला और ग्राम स्तर के लोगों का सहयोग मिल सकता है।

राजनेता भी अपने खर्च की सीमा करें। कोई भी बड़े से बड़ा नेता आम आदमी से 10 गुना ज्यादा खर्च न करे। अगर सभी बड़े लोग खर्च को सीमित कर लें तो देश से भ्रष्टाचार समाप्त हो सकता है।

2. जातिभेद भारत के अलावा किसी भी देश में जातिप्रथा नहीं है। अन्य देशों में वर्गभेद है। भारत में जातिप्रथा का प्रचलन क्यों हुआ? भारत में भी पहले जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जातियां नहीं थीं। कर्म से कोई भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हुआ करते थे। वे उस समय मात्र वर्ग थे। समय के थपेड़ों से जब इस देश में उत्पादन ठप्प हो गया और प्रगति रुक गई तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जातियां बन गईं। उदाहरण के तौर पर दूध तरल और दही दूध का जमा हुआ रूप है। उसी तरह वर्ग को दूध और जाति को दही की संज्ञा दे सकते हैं।

जातिभेद को मिटाने के लिए ऐसी स्थिति पैदा करनी होती है जिससे हर जाति के लोग पढ़-लिखकर अपनी योग्यता का उपयोग करें। जब योग्यता बढ़ जाती है तो जाति भेद कम हो जाता है। आपस में विवाह संबंध खुल जाते हैं। जाति प्रथा ही नहीं रह पाएगी।

3. रंगभेद रंगभेद में आने वाले गोरे, काले और सांवले में अभी जो विश्व स्तर पर भेदभाव चल रहा है। वह

भी खत्म होना जरूरी है। जब तक सारे मानव भेदभाव को खत्म करके एक साथ सहयोग पूर्वक काम धंधा नहीं चलाएंगे मानवीय एकता और आपसी सहयोग की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

4. लिंगभेद लिंगभेद यानि स्त्री-पुरुष में भेदभाव। यह भेद अब विश्व स्तर पर मिटाने के कागर पर है और उम्मीद करनी चाहिए कि भारत में फिर सीता-राम और राधे-श्याम की भावनाएं आगे बढ़कर देश में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में सहयोग बढ़ने लगेगा।

5. क्षेत्रभेद क्षेत्रभेद की समस्याएं अभी भी बहुत बड़ी हुई हैं। जब तक सभी क्षेत्र और सभी देशों के लोग मानवीय सम्बन्धों में क्षेत्रभेद को आगे लाते रहेंगे। आपसी सहयोगपूर्वक कार्य नहीं हो सकेगा। क्षेत्रों की वजह से कब विश्व, युद्ध की कगार पर पहुँच जाए। आज प्रांत और देश विशेषकर अपने-अपने स्वार्थ साधने में लगे हुए हैं। इसी वजह से सभी देश अपनी आय का 50 प्रतिशत रक्षा और फौज पर खर्च कर रहे हैं। अगर सभी क्षेत्रों और देशों को मिलाकर समान अधिकार के साथ विश्व सरकार का गठन हो जाए तो विश्व युद्ध का खतरा टल सकता है। सभी देश आपसी सहयोग से अपने खर्चों में बचत कर आगे बढ़ सकते हैं।

6. विकसित और विकासशील देशों के भेदभाव भी आज विश्व में शांति और सौहार्द में बाधक है। जब तक विकसित देश अपने को विकासशील देशों की उन्नति में बड़े भाई की तरह कार्य करके उनकी उन्नति में साधक नहीं बनते हैं। विश्व के देशों के बीच आपसी सहयोग स्वार्थवश ही चलता रहेगा। मानव और मानवता को एक मान कर आगे बढ़ने से ही आपसी सहयोग बढ़ेगा। आपसी सहयोग बढ़ने से ही सभी राष्ट्र उन्नति की ओर बढ़ सकते हैं।

7. संयुक्त राष्ट्र संघ के आज के स्वरूप को बदलना होगा। सभी देशों को उनकी जनसंख्या के अनुसार प्रतिनिधित्व

देकर एक विश्व सरकार का गठन किया जाना चाहिए ताकि सभी देश उस सरकार के अंतर्गत काम करके आगे बढ़ सकें। सभी देशों का आपसी सहयोग बढ़ने से विश्व का स्वरूप ही बदल सकता है। इसके लिए विकसित देश सबसे पहले अपना विशेषाधिकार समाप्त करें। किसी देश विशेष को कोई विशेषाधिकार नहीं मिलना चाहिए। सभी देशों का आपसी सहयोग बढ़ने से ही विश्व इस वैज्ञानिक युग में आगे बढ़ सकता है। आणविक अस्त्रों से निजात पा सकता है।

जिस तरह ऊपर बताए गए सातों भेदभावों को समाप्त करने, नया संगठन खड़ा करके आपसी सहयोग किया जाता है। उससे समाज स्वस्थता की ओर बढ़ता है। जो भी संगठन हिंसा का सहारा लेकर अपनी बात को मनवाना चाहते हैं, वे अपना भला कर पाएं या नहीं लेकिन समाज में आपसी सौहार्द को समाप्त कर देते हैं। आतंकवादी संगठन भी अपना काम बम विस्फोट जैसी घटनाओं को अंजाम देकर करते हैं। इससे पूरे देश में ही नहीं विश्वभर में आतंक फैल जाता है और आपसी भाईचारे और शांत जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। विश्वभर में जितने भी आतंकवादी संगठन हैं, उन्हें अहिंसक प्रतिकार का सहारा लेकर अपनी मांगों को सामने लाना चाहिए और उन्हें मनवाने की कोशिश करनी चाहिए। जनता को सहयोग उन्हीं संगठनों को देना चाहिए जो अहंसा को अपना चुके हैं और उनकी मांगें भी उचित हो।

डकेती और चोरी करने वालों का भी गिरोह होता है। जिसकी मदद से वे जहाँ-तहाँ डकेतियां और चोरियां करते रहते हैं। जिनका उद्देश्य गलत हो उन्हें कभी भी जनता का सहयोग नहीं मिलना चाहिए। जन सहयोग के लिए उद्देश्य पवित्र और साधन भी अहिंसक प्रतिकार के होने चाहिए।

“बदले व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं बदलेगा।”

नैतिकता की दिशाएं

• कुसुम जैन •

जीवन के सभी क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों का महत्व है। राजनीति, समाजनीति, व्यापारनीति, युद्धनीति सब नीतियों के साथ नैतिकता जुड़ी हुई है। नैतिकता का पालन किस नीति में कितना होता है, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता किन्तु जिस पर अनैतिकता की छाया ही न पड़ी हो ऐसी विशुद्ध नीति कोई नहीं रही है। किसी नीति का हाथ विकृत है किसी का पांव। किसी नीति का मुंह टेढ़ा है किसी का मस्तक। किसी नीति के उदर में खराबी है तो किसी नीति की पीठ में। बीमारी शरीर के किसी हिस्से में हो, वह शरीरगत विकृति का प्रतीक है। सिर-दर्द, पीठ-दर्द, पेट-दर्द, घुटनों का दर्द, संधि का दर्द, दांत का दर्द, औंख का दर्द क्या ये पीड़ाएं अपना भिन्न अस्तित्व रखती हैं। शरीर में जो विकार उत्पन्न होता है वह इन माध्यमों में व्यक्त होता है, इसलिए अमुक-अमुक संज्ञा से पहचाना जाता है।

जीवन काल में गलत व्यवसाय करके अनैतिकता के प्रवाह को रखना अपराध है। अर्थ के प्रलोभन में आकर संतति के सगाई या विवाह के अवसर पर टीका-दहेज आदि लेने का ठहराव करना मानवीय सिद्धांतों की हत्या करना है। अर्थ जैसी नश्वर वस्तु के लिए अपने पुत्र या पुत्री का विक्रय, मूढ़ता नहीं तो क्या है? अर्थ के पीछे पागल होकर दिन-रात उसी की चिंता में डूबे रहना उपामोह हैं अमूर्च्छा भाव का अभ्यास व्यक्ति को परिग्रहजन्य पीड़ाओं का अनुभव करा सकता है।

संग्रह शोषण की निष्पत्ति है। अर्थ के स्रोत के उत्पादन में जिन लोगों का समय और श्रम लगता है। उनमें अर्थ का सम्यक् वितरण न होने के कारण अतिरिक्त संग्रह होता है। इससे विलासिता

और अभाव की परिस्थिति पैदा होती है। अर्थ का स्वामित्व जिनके हाथ में है वे अपने जीवन को विलासी बना लेते हैं और दूसरा वर्ग दो समय खाने के लिए रोटी भी नहीं जुटा सकता। यह विषमता है। कोई भी चिंतनशील और निष्पक्ष व्यक्ति अपने समाज में ऐसी स्थिति को अच्छी नहीं मान सकते। इस परिस्थिति के समापन का एकमात्र हेतु है अपरिग्रही मनोवृत्ति का निर्माण। जिस समय परिग्रह के प्रति मूर्च्छा टूटती है। व्यक्ति गलत पद्धति से अर्थ के अर्जन और संचय से दूर हट जाता है। क्योंकि वह अर्थ को आजीविका चलाने का साधन मानता है। साधन को उतना ही महत्व देना उचित है जितना कि उसे दिया जा सकता है।

अपरिग्रह के परिवेश में विसर्जन नामक एक तत्व जुड़ा हुआ है। परिग्रह के संग्रह ही स्थिति तब आती है जब अर्जन के साथ विसर्जन की बात न हो। अर्जन के अनुपात से विसर्जन का क्रम चलता रहे तो व्यक्ति परिग्रह के चक्रव्यूह से निकल सकता है। विसर्जन का अर्थ छोड़ना या त्याग देना। अर्थ को छोड़ने के साथ उसकी आसक्ति से छूट जाना विसर्जन यही स्थिति अनैतिकता की है। अप्रामाणिकता, वंचनापूर्ण व्यवहार और स्वत्व अपहरण से सम्बन्धित जितनी प्रवृत्तियां हैं, वे अनैतिकता में अंतर्निहित हैं। अनैतिक मनोवृत्ति समूह चेतना के अजागरण की प्रथम परिणति है। नैतिक मूल्यों का विघटन समाज व्यवस्था का विघटन है। विघटन के बाद विच्छृंखलता का जो प्रवाह बहता है वह अवरुद्ध नहीं हो सकता।

अनैतिक मानस का निर्माण होने पर व्यक्ति का आत्म-विश्वास टूट जाता है और वह पग-पग पर फिसलन की संभावनाओं से आक्रांत रहता है।

नैतिकता अध्यात्म तक पहुँचने की

पगड़ंडी है। अध्यात्म विशुद्ध आंतरिक तत्व हैं नैतिकता के दो रूप हैं शाश्वत और सामायिक। सत्य, अहिंसा आदि से अनुप्राणित नैतिकता शाश्वत सत्य है। सामाजिक व्यवस्थाओं और मान्यताओं से अनुबंधित नैतिकता सामायिक तत्व है। नैतिक मूल्य धर्म और समाज-सापेक्ष होते हैं। उनकी दिशाएं व्यापक हैं। इनके माध्यम से स्थूल से सूक्ष्म की ओर गति होती है। नैतिक मूल्यों के उन्नयन की चर्चा में उन्हें जीवनगत करने का उपक्रम जब तक नहीं होगा, नैतिकता को व्यावहारिक रूप नहीं मिल सकेगा। इसके लिए व्यक्ति-व्यक्ति को नैतिक जीवन जीने का संकल्प स्वीकार करना होगा, वर्तमान परिस्थितियों ने मनुष्य के मन में यह धारणा जमा दी है कि नैतिक जीवन जिया ही नहीं जा सकता। इस धारणा से व्यक्ति का मन दुर्बल हो जाता है। दुर्बल मन चाहने पर भी अच्छाई को स्वीकार नहीं कर सकता अतः हर क्षेत्र में नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करने की अपेक्षा है। इसके लिए बड़ी-बड़ी गोष्ठियों और व्याख्यान मालाओं का आयोजन ही पर्याप्त नहीं होगा। नैतिकता की बात आज सब लोग करते हैं, पर उसे अपने जीवन में उतारने की बात सामने आते ही कल्पित कठिनाइयों के भय से भागदौड़ शुरू हो जाती है। अपरिहार्यता के नाम पर उस प्रसंग को टाल दिया जाता है। यही कारण है, जिससे समूचा व्यवस्था-तंत्र भ्रष्टा से प्रभावित हो रहा है। तुच्छ व्यक्ति स्वार्थ के लिए नैतिक मूल्यों का उपहास किया जा रहा है।

विश्व चेतना का प्रवाह जिस समय अनैतिकता की दिशा में जाता हो, उस समय नैतिक मूल्यों को अपनी मंजिल मानकर चलना मुसीबतों का पथ चुनना है किन्तु वे मुसीबतें व्यक्ति के व्यक्तित्व को अधिक सक्षम बनाने में सहयोग देती

हैं। विकृतियों की शूली पर चढ़े व्यक्ति को उससे नीचे उतारने में सशक्त हस्तावलम्बन देती है। अनास्था और मूल्यहीनता के संकट से उबारकर जीवन को नयी दिशा देती है।

आज एक राजनीतिज्ञ जनता की मनोवृत्ति बदली हुई देखना चाहता है तथा जनता चाहती है व्यवस्था और कानून में सुधार। दोनों ओर से सुधार की अपेक्षा है, पर वह है परापेक्ष। अपने पक्ष में बदलाव की बात जनता भी कम सोचती है और सरकार भी। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय चेतना या जनचेतना का उत्कर्ष केवल संभावनाओं की मुट्ठियों में बेद रह जाता है। परिस्थितियां किसके सामने नहीं होती? उनके आगे घुटने टेकने वाला व्यक्ति कभी उठ नहीं सकता। क्योंकि वह अपने अस्तित्व पर परिस्थितियों को हावी होने का मुक्त अवसर दे देता है। उसकी चेतना कुंठित हो जाती है। वह अपने चारों ओर संत्रास का जाल बिछा हुआ देखता है। संत्रास, घुटन, कुंठा, तनाव आदि और भी न जाने ऐसे कितने तत्व हैं, जिनके कारण व्यक्ति मानसिक रूप से इतना दुर्बल हो जाता है कि वह अपने दायित्व को भी विस्मृत कर देता है।

इस स्थिति के निर्माण में बाहरी परिस्थितियों का जितना योग होता है उससे भी अधिक निमित्त बनता है नैतिक मनोबल का अभाव। नैतिक बल के क्षण हो जाने के बाद थोड़ा-सा भी आघात असंयोग हो जाता है। इतिहास साक्षी है आज तक जितने राष्ट्रों का पतन हुआ है, उसमें सैन्यबल और शस्त्रबल का अभाव कम निमित्त बना, प्रमुखतम निमित्त रहा है नैतिक मनोबल का अभाव। परिस्थितियों के दबाव से टूटते हुए मनोबल को संजोकर रखना बहुत आवश्यक है।

व्यवस्था बदल जाये और अंतःकरण न बदले तो वह किसी भी क्षण व्यवस्था का अतिक्रमण कर अपराधी बन सकता है। अपराध चेतना के विकास में समाज-व्यवस्था का पूरा हाथ रहता है, फिर भी व्यवस्था ही सब कुछ नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण बात है दृष्टिकोण का सम्यकत्व और मनोवृत्ति का परिवर्तन।

नैतिक उन्नति का आधार है नैतिक विचार। विचार का प्रभाव आचार पर होता है और आचार से विचार पुष्ट होता है। विचार और आचार दोनों की पवित्रता की संकल्पशक्ति को विकसित करने की आवश्यकता है। संकल्प-शक्ति का विकास होने से ही विचार-आचार में प्रतिबिम्बित होता है। अन्यथा मन के नाम पर विचारों के सतरंगे इन्द्रधनुष टंगते और बिखर जाते हैं। मनुष्य का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि वह अपने स्वर्णिम अतीत की यादों में खोया रहता है अथवा भविष्य की सुखद कल्पनाओं में विहार करता रहता है। किन्तु वर्तमान की निष्पा और क्रियाशीलता के बिना अतीत और भविष्य का क्या मूल्य हो सकता है। अणुव्रत अतीत की स्मृतियों और भविष्य की कल्पनाओं से मुक्त होकर वर्तमान को नीतिमान बनाने का दर्शन देता है। इस दर्शन को आधार मानकर चलने से ही जीवन के मरुस्थल में नैतिकता की लहर आ सकती है।

बी-5/263, यमुना विहार, दिल्ली-53

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- ◆ संसद की कार्यवाही पर प्रति मिनट करीब 26 हजार रुपए खर्च होते हैं। इस तरह प्रति घंटा 15 लाख 60 हजार रुपए और प्रतिदिन (आठ घंटे) लगभग सवा करोड़ रुपए का खर्च आता है।
- ◆ सर्वशिक्षा अभियान और दोपहर का भोजन (मिड-डे-मील) जैसी योजनाओं से प्राइमरी शिक्षा में बच्चों की भागीदारी भले ही बढ़ी हो। लेकिन आज भी सवा दो करोड़ बच्चे आठवीं कक्षा के बाद आगे नहीं पढ़ पाते हैं। इसी प्रकार 9वीं से 12वीं कक्षा की शिक्षा सं वंचित किशोरों की संख्या देश में करीब 5.72 करोड़ आंकी गयी है।
- ◆ मानव संसाधन विभाग के आंकड़ों के अनुसार देश में 14-15 वर्ष की आयु वर्ग के किशोरों की संख्या 4.86 करोड़ थी। लेकिन इनमें से 9वीं एवं 10वीं कक्षा में नामांकन कराने वाले छात्रों की संख्या महज 2.59 करोड़ थी। इससे साबित होता है कि करीब सवा दो करोड़ बच्चे आठवीं कक्षा के बाद आगे की पढ़ाई जारी नहीं रख पाते हैं। माध्यमिक शिक्षा में कुल प्रवेश दर अभी 53 फीसदी के करीब है। इसे अगले पांच सालों में 75 फीसदी तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। दूसरी तरफ सर्व शिक्षा अभियान और मिड-डे-मील योजनाओं के बाद प्राथमिक शिक्षा में स्कूल छोड़ने वाले बच्चों का प्रतिशत 39 से घटकर 25 फीसदी तक आ गया है। लेकिन इस हिसाब से भी करीब एक करोड़ बच्चे हर साल प्राथमिक शिक्षा हासिल नहीं कर पा रहे हैं।
- ◆ देश की राजधानी दिल्ली में जगह-जगह खुले-अधखुले मैनहॉल और गड्ढों ने कई लोगों की जानें ली हैं। शकूरपुर में एमसीडी के एक पार्क में गड्ढे से दो बच्चों के शव मिले हैं। क्या यह इस तरह का पहला मामला है? पूर्व के हादसों से प्रशासन ने क्या कोई सबक सीखा है? अफसरों की मुंदी हुई आंखों और खुले गड्ढों के इस शहर में क्या पूरी व्यवस्था ही किसी गड्ढे में जा गिरी है।

लाइलाज बनता जा रहा है मटिरापान का रोग

• प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा •

महात्मा गांधी से एक बार किसी ने पूछा कि अगर आपको भारत का तानाशाह बना दिया जाए तो आप क्या करेंगे? उत्तर में उन्होंने कहा था ‘अगर मेरे हाथ में एक दिन के लिए भी सत्ता आ जाए तो मैं सबसे पहला काम यह करूँगा कि शराब की तमाम दुकानों को बिना कोई मुआवजा दिये बंद करवा दूँगा।’ महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में रहकर शराब के दुष्प्रभाव से पीड़ित अनेक भारतीयों को देखा था। एक अन्य अवसर पर उन्होंने कहा था ‘शराब सब बुराइयों की जननी है। इसकी आदत राष्ट्र को विनाश के कगार पर ला खड़ा करती है।’

प्रथम विश्वयुद्ध के समय इंग्लैंडवासियों की शराब के प्रति बढ़ती हुई रुचि से क्षुब्ध होकर वहाँ के प्रधानमंत्री लॉयड जॉर्ज ने भी कहा था ‘शराब देश को इतना नुकसान पहुँचा रही है, जितना दुश्मन की सारी पनडुब्बियां भी नहीं पहुँचा रहीं। हम तीन दुश्मनों जर्मनी, ऑस्ट्रिया और शराब से लड़ रहे हैं, जिनमें शराब सबसे बड़ा दुश्मन है।’

स्वतंत्रता प्राप्ति के काफी समय बाद तक भी जब हम अपने यहाँ मध्यनिषेध लागू नहीं कर पाये तो तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1972 में कांग्रेस अध्यक्ष के नाम पत्र में कहा था ‘हम शराब के दूरगामी परिणामों की चिंता नहीं कर रहे। सारे कानून बेकार सिद्ध हो रहे हैं। शराब का प्रचलन हमारे देश के स्वास्थ्य को नष्ट कर रहा है। राष्ट्र की उन्नति के लिए हमें मध्यनिषेध की दिशा में कड़ाई से काम करना चाहिए। इंदिरा गांधी के इस पत्र पर विचार किया गया और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया कि ‘मध्यनिषेध की दिशा में प्रयत्न तेज किये जाएं। स्कूल- कॉलेजों और धार्मिक स्थानों के निकट से शराब की दुकानें हटायी जाएं। स्कूल- कॉलेजों और धार्मिक स्थानों के निकट से शराब की दुकानें हटायी जाएं। लेकिन वर्तमान में हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के काफी समय बाद तक भी जब हम अपने यहाँ मध्यनिषेध लागू नहीं कर पाये तो तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1972 में कांग्रेस अध्यक्ष के नाम पत्र में कहा था हम शराब के दूरगामी परिणामों की चिंता नहीं कर रहे। सारे कानून बेकार सिद्ध हो रहे हैं। शराब का प्रचलन हमारे देश के स्वास्थ्य को नष्ट कर रहा है। राष्ट्र की उन्नति के लिए हमें मध्यनिषेध की दिशा में प्रयत्न तेज किये जाएं। इंदिरा गांधी के इस पत्र पर विचार किया गया और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया कि ‘मध्यनिषेध की दिशा में प्रयत्न तेज किये जाएं। स्कूल- कॉलेजों और धार्मिक स्थानों के निकट से शराब की दुकानें हटायी जाएं। स्कूल- कॉलेजों और धार्मिक स्थानों के निकट से शराब की दुकानें हटायी जाएं। लेकिन वर्तमान में हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं।

विचार किया और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया कि ‘मध्यनिषेध की दिशा में प्रयत्न तेज किये जाएं। स्कूल- कॉलेजों और धार्मिक स्थानों के निकट से शराब की दुकानें हटायी जाएं। वेतन मिलने के दिन शराब की बिक्री पर पाबंदी लगायी जाए।’ केन्द्र की ओर से राज्य सरकारों को इस संदर्भ में पत्र भेजे गये। मध्यनिषेध से राज्य सरकार को होने वाली हानि का आधा भाग क्षतिपूर्ति के रूप में केन्द्रीय सरकार द्वारा दिये जाने का आश्वासन भी दिया गया। अन्य अनेक कदम भी उठाये गए। मगर फिर भी कोई ठोस परिणाम नहीं निकला।

राष्ट्रीय आंदोलन के प्रारंभ से ही देश में मध्यनिषेध की मांग की जाती रही। 1912 में गोपालकृष्ण गोखले की अध्यक्षता में एक शिष्टमंडल भारत-सचिव से मिला और स्पष्ट शब्दों में मध्यनिषेध का समर्थन करते हुए उसने यह मांग की कि सरकार मध्यपान को अपनी आमदानी

का साधन न बनाए। 1925 में केन्द्रीय व्यवस्थापिका ने भी इस प्रकार का प्रस्ताव पारित किया। 1920 और 1930 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाये गए आंदोलनों में, शराब की दुकानों पर धरना देना भी कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंक था। 1931 में कांग्रेस कार्यसमिति ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि शराब की दुकानों पर धरना देना केवल आंदोलन का एक अंग ही नहीं है, बल्कि वह भारतवासियों का जन्मसिद्ध अधिकार भी है। फलस्वरूप गांधी-इरविन समझौते में कांग्रेस ने धरना देने का यह अधिकार अपने लिए सुरक्षित रखा और आगे भी उसे क्रियान्वित करती रही। 1935 के अधिनियम के अंतर्गत जब प्रांतों में कांग्रेस सरकारें बनीं तो मुम्बई और मद्रास में मध्यनिषेध लागू कर दिया गया। उत्तर प्रदेश के दो जिलों में भी इसे लागू किया गया। इस समय तक राजस्व की दृष्टि से मध्यपान, प्रांतों के बजट का

आवश्यक अंग बन चुका था। उन्हें इस मद से करोड़ों रुपए की आमदानी होती थी। उन दिनों विश्वव्यापी आर्थिक मंदी काफी अधिक थी। संकट के समाधान के रूप में शासन के उच्चपदस्थ कर्मचारी भी इसी बात के लिए दबाव डाल रहे थे कि मदनिषेध न किया जाए। कांग्रेस मंत्रिमंडल को अपने अन्य सुधार-कार्यों के लिए भी काफी पैसे की आवश्यकता थी और उन्हें राजस्व प्राप्ति का अन्य कोई बड़ा साधन नजर नहीं आ रहा था। इसलिए मदनिषेध के कार्यक्रम का सम्पूर्ण देश में तत्काल प्रसार नहीं किया जा सका। इसके कुछ ही समय बाद 1939 के विश्वयुद्ध में भारत की हिस्सेदारी के प्रश्न पर अंग्रेजी सरकार से मतभेद हो जाने के कारण, कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दे दिये और इससे मदनिषेध का कार्यक्रम भी बीच में ही ठप्प हो गया।

1946 के चुनावों में विजयी होने पर कांग्रेस ने मुम्बई और मद्रास में पुनः मदनिषेध कानून लागू कर दिया। यू.पी. के दो जिलों में भी और बाद में उसे बढ़ाकर ग्यारह जिलों में मदनिषेध लागू किया गया। शेष राज्यों में और यू.पी. के शेष जिलों में भी, राजस्व प्राप्ति की दृष्टि से मदनिषेध लागू नहीं किया जा सका।

स्वतंत्र भारत के संविधान-निर्माताओं के मस्तिष्क में भी मदनिषेध के बारे में पूरा संघर्ष चल रहा था। इसलिए मदनिषेध को उन्होंने संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में स्थान दिया, जिससे इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

हमारे यहाँ साधारणतः चार प्रकार की शराब मिलती है। निजी भट्टियों में बनने वाली कच्ची शराब, फैक्ट्रियों में तैयार की जाने वाली देशी शराब, विदेशी शराब तथा इन सबकी नकली शराब। नकली शराब स्पष्टतः अवैध धंधा है। कच्ची शराब को बनाना या उसके लिए

भट्टियां तैयार करना भी अवैध है। लेकिन यह शराब सस्ती होने के कारण साधारण श्रेणी के पियककड़ों में बड़ी लोकप्रिय होती है। इन भट्टियों पर शराब निर्माण में तनिक भी भूलचूक होने से वह शराब जहरीली बनकर लोगों के लिए प्राणघातक बन जाती है। वैसे भी यह शराब डिनेचर्ड स्प्रिट से तैयार होती है, जो स्वयं एक विष है। हल्का करने और मात्रा बढ़ाने के लिए इसमें पानी मिला दिया जाता है। पेय को अधिक नशीला बनाने के लिए उसमें कुछ दूसरे जहरीले तत्व भी मिला दिये जाते हैं। इस प्रकार की जहरीली शराब पीने से सम्पूर्ण देश में आये दिन लोग मरते रहते हैं। उन पर कुछ समय तक चर्चाएं होती हैं, जनमत भी उभरता है, लेकिन कुछ ही समय बाद सब कुछ भुला दिया जाता है।

शराब सर्वप्रथम पेट में पहुँचकर रक्त के माध्यम से हमारे मस्तिष्क में जाती है और वहाँ हमारे ज्ञान-तंतुओं को सुला देती है। फलस्वरूप मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है और प्रारंभ में तो वह अपनी सामर्थ्य से अधिक काम करने का हौसला दिखाता है लेकिन बाद में निष्क्रिय होकर गिर जाता है। शराब का भार मुख्यतः जिगर को सहन करना पड़ता है। इसे हजम करने में शरीर के विटामिनों वाला काफी बड़ा भाग नष्ट हो जाता है। इससे अनेक मानसिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। पैरों में लड़खड़ाहट आ जाती है। दृष्टिकोण और विस्मृति रोग पैदा होते हैं। सांस लेने में तकलीफ होने लगती है। हृदय रोग उत्पन्न हो जाते हैं। हाजमा खराब हो जाता है। मांसपेशियों में कष्ट होने लगता है। पेट में तीखा दर्द होता है। गंभीर अवस्था में खून की उल्टियां होती हैं। जिगर सुस्त होने लगता है, जिससे शरीर में आने वाले जहरीले पदार्थों को खून में मिलने से जिगर नहीं रोक पाता।

इससे शरीर में जहर की मात्रा बढ़ती रहती है। मिलावटी शराब, लकवे और अंधेपन की व्याधियां पैदा करती हैं। यदि समय रहते रोगी का इलाज नहीं होता और वह शराब की लत नहीं छोड़ता तो वह उसके लिए प्राणघातक बन जाती है।

शराब से होने वाली हानि का यह केवल व्यक्तिगत पक्ष है। इसके परिवारिक, सामाजिक और आर्थिक पक्ष भी हैं। शराब की लत वाला व्यक्ति शराब से अधिक किसी भी बात को महत्व नहीं देता। उसका परिवार अक्सर तहस-नहस हो जाता है। आमदानी का अधिकांश हिस्सा शराब की भेंट चढ़ जाता है। शराबी में अपनापन, नैतिकता और इन्सानियत जैसी कोई भावना शेष नहीं रह जाती। शराब की बोतल के लिए अपने घर का सामान बेचने या दूसरे घरों में चोरी करने अथवा अन्य अपराध करने में भी उसे कोई संकोच नहीं होता। शराब पीने के बाद, जब उसके ज्ञान तंतु चैतन्य हो जाते हैं, तब तो वह अपराधों के लिए और भी अधिक समर्थ हो जाता है। समाज और देश में बढ़ते हुए अपराधों का एक मुख्य कारण मादिरापान भी है।

हमारे यहाँ शराब पर लगाये गए कर से केन्द्र तथा राज्य सरकारों को अच्छी-खासी आमदानी होती है, जो ऊपर से देखने पर काफी आकर्षक होती है। मगर मध्यपान के कारण हमें अस्पतालों पर अधिक व्यय करना पड़ता है, मुकदमेबाजी में वक्त खराब करना पड़ता है, अदालतों का काम बढ़ता है, नागरिकों की कार्यक्षमता कम होती है, प्राणों की हानि होती है, सार्वजनिक और व्यक्तिगत बचत में कमी आती है, सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुँचता है और समाज का वातावरण बिगड़ता है। इन सब बुराइयों को इकट्ठा करके अगर हम उनके आर्थिक और राष्ट्रीय

पहलुओं को देखें तो निश्चित ही शराब से होने वाली आमदनी नगण्य रह जायेगी।

शराब पीने से होने वाली हानियों का अध्ययन करने के बाद स्वभावतः एक प्रश्न उठता है मनुष्य आखिर शराब पीते क्यों हैं? इस संबंध में किये गये सर्वेक्षण से यही पता चलता है कि अधिकांश मनुष्य प्रारंभ में शौकिया तौर पर या फैशन के रूप में मध्यपान प्रारंभ

और उसे अपनी जेब के अनुसार जैसी भी शराब मिल पाती है, उसे पीकर अपने बड़प्पन की भूख को शांत करता है। शराब को गम गलत करने का भी एक आधार बतलाया जाता है, जबकि वास्तव में वह हमारी सोचने समझने की शक्ति को केवल कुन्द करती है, किसी प्रकार का गम गलत नहीं करती। शराब का स्वाद भी मधुर या आकर्षक नहीं होता। वह होता है, महज कड़वा और

शराब सर्वप्रथम पेट में पहुँचकर रक्त के माध्यम से हमारे मस्तिष्क में जाती है और वहाँ हमारे ज्ञान तंतुओं को सुला देती है। फलस्वरूप मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है। शराब का भार मुख्यतः जिगर को सहन करना पड़ता है। इसे हजम करने में शरीर के विटामिनों वाला काफी बड़ा भाग नष्ट हो जाता है। इससे अनेक मानसिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। पैरों में लड़खड़ाहट आ जाती है। हृदय रोग उत्पन्न हो जाते हैं। हाजमा खराब हो जाता है। मांसपेशियों में कष्ट होने लगता है। पेट में तीखा दर्द होता है। गंभीर अवस्था में खून की उल्टियां होती हैं। जिगर सुस्त होने लगता है, जिससे शरीर में आने वाले जहरीले पदार्थों को खून में मिलने से जिगर नहीं रोक पाता। मिलावटी शराब लकवे और अंधेपन की व्याधियां पैदा करती हैं और धीरे-धीरे प्राणघातक बन जाती हैं।

करते हैं और बाद में वे उसके आदी बन जाते हैं। पियककड़ मित्र तथा अन्य परिचित इस शौक को उभारने में सहायता करते हैं। यह भी कटु सत्य है कि आजकल हमारे उच्चस्तरीय समाज में शराब को बुराई न मानकर सामाजिक औपचारिकता का अनिवार्य अंग माना जाने लगा हैं विदेशों की बात छोड़ दें तो हमारे यहाँ की सांस्कृतिक परम्पराएं शराब के विरुद्ध ही रही हैं। मगर समाज के तथाकथित बड़े लोग अब उन परम्पराओं की उपेक्षा करके, छोटी बड़ी पार्टियों में खुलेआम जाम से जाम टकराते हैं। इससे स्पष्ट ही जनसाधारण भी शराब की तरफ आकर्षित होता है

तीखा। इसलिए निश्चित ही शराब का स्वाद, मनुष्य को उधर नहीं खींचता। खींचने वाला तत्व होता है उसका वातावरण। यह भी सत्य है कि शराब पीना शुरू करने वाले अधिकांश व्यक्ति शराब की बुराइयों से भलीभांति परिचित भी नहीं होते। बस, फैशन और आधुनिकता के लेबल की ललक लिए लोग पीना शुरू करते हैं और फिर पीते ही रहते हैं।

प्रश्न उठता है ऐसे वातावरण में क्या करें? मध्यनिषेध आवश्यक है। मगर तत्काल कानूनी प्रतिबंध लगा देने से ही समस्या हल नहीं होगी। चोरी छिपे शराब पीना तब भी जारी रहेगा और

जहरीली शराब से होने वाली दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी। यह भी तथ्य है कि अधिक पियककड़ व्यक्तियों के मदिरापान पर अगर बिना किसी डॉक्टरी व्यवस्था के प्रतिबंध लगा दिया जाएगा तो उन्हें अनेक शारीरिक और मानसिक व्याधियां हो जाने की आशंका बनी रहेगी। अतएव सर्वप्रथम तो हमें सम्पूर्ण देश में मीडिया तथा अन्य सभी साधनों से शराब के विरुद्ध प्रचार करना चाहिए, दूसरे क्लबों तथा पार्टियों में शराब दिये जाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। तीसरे, सरकारी कर्मचारियों के लिए मध्यपान पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा देना चाहिए। राजनेताओं को भी इसी प्रकार का प्रतिबंध स्वीकार करना चाहिए ताकि जनता पर अच्छा प्रभाव पड़े। पर्यटन को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से विदेशियों को इस संबंध में छूट दी जा सकती है। पत्रकारों तथा साहित्यकारों को भी इस कार्य में भरपूर सहयोग देना चाहिए। शराब पर टैक्स भी काफी अधिक बढ़ाकर उसे इतना महंगा कर देना चाहिए कि आम आदमी शराब पीने से पहले अपने जेब की सीमाओं को भलीभांति देखने के लिए विवश हो। इसके बाद शराब पीने वालों की पूरे देश में जिला स्तर पर सूचियां बनायी जाएं। साधारण पियककड़ों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके उन्हें शराब छोड़ने के लिए मनाया जाए। इसमें सफलता न मिलने पर कानूनी प्रतिबंध लगाया जाए। मगर उससे पहले समाज में वातावरण को अपने पक्ष में बनाने की आवश्यकता है। अधिक पियककड़ों पर मध्यनिषेध लागू करने से पूर्व उन्हें डॉक्टरी देखरेख में रखा जाना भी आवश्यक है, ताकि उनके स्वास्थ्य के लिए किसी प्रकार की कोई आशंका न रहे। मध्यनिषेध इस कार्य में समाजसेवकों का विशेष योगदान हो सकता है।

10/611, मानसरोवर,
जयपुर – 302020 (राजस्थान)

भारतीय नारी का आदर्श

• डॉ. रामसिंह यादव •

भारत की राष्ट्रपति महामहिम प्रतिभा पाटिल भारतीय संस्कृति, परम्पराओं और भारत की आदर्श नारी जाति का आदर्श प्रतीक है। देश को उन पर गर्व है। प्रतिभा पाटिल (पति ठाकुर डॉ. देवीसिंह शेखावत) की गणना देशभक्त, महान समाज सेविकाओं, राष्ट्रवादी विचारों की उन महान महिलाओं में होती है, जिन्होंने अपने वर्तन, कर्म और राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पण किया। अपने सद्कर्म, संकल्प-शक्ति, मानव सेवा एवं कर्तव्य-निष्ठा के बल पर जमीन पर खड़े होकर आसमान को छुआ। देश के सर्वोच्च पद पर पहली बार प्रतिभा पाटिल महिला राष्ट्रपति बनी है। प्रतिभा पाटिल-शेखावत वर्तमान में इस देश की 12वीं महामहिम राष्ट्रपति है।

आपका जन्म महाराष्ट्र के जलगांव शहर में 13 दिसंबर 1934 को एक सुसंस्कृत एवं कुलीन परिवार में हुआ। बचपन से ही प्रतिभागी मेधावी और प्रतिभाशाली बालिका थी। जलगांव के समजे कॉलेज से उन्होंने एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में मुम्बई के लॉ कॉलेज से एल.एल.बी. की डिग्री हासिल की। 7 जुलाई 1965 को एक राजपूत उच्चकुलीन युवक डॉ. देवीसिंह शेखावत के साथ बहुत उत्साहपूर्ण वातावरण में ठाट-बाट से विवाह संपन्न हुआ।

प्रतिभा पाटिल का दाम्पत्य जीवन ठाकुरों के राजपूती रीति-रिवाजों, आचार-विचार संस्कारिता के साथ बहुत सुखपूर्वक रहता आया है। एक उच्च राजपूत जाति में होने पर प्रतिभा पाटिल को बहुत गर्व है। एक पुत्र राजेन्द्र सिंह शेखावत व पुत्री ज्योति राठौर हैं।



कुशाग्र बुद्धि वाली तेज-तरार :

प्रतिभा पाटिल बालपन से ही कुशाग्र बुद्धि की प्रतिभावान छात्रा रही हैं। वहीं खेलों के प्रति उनकी विशेष रुचि रही। कॉलेज जीवन में प्रतिभा पाटिल टेबल टेनिस की चैम्पियन थी तथा इंटर कॉलेज प्रतियोगिता में प्रतिभा पाटिल ने कई पुरस्कार हासिल किये हैं।

राजनीतिक उपलब्धियां :

प्रतिभा पाटिल 1967 से 1976 के बीच महाराष्ट्र सरकार में स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण उपमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री और पुनर्वास मंत्री रही। जुलाई 1976 से फरवरी 1980 तक महाराष्ट्र विधानसभा में विपक्ष की नेता रहीं और उसके बाद 1985 से 1990 के बीच राज्यसभा की सदस्या रही। 1991 में वह अमरावती से लोकसभा के लिए चुनी गई और अगले पांच साल तक दोनों सदनों में विभिन्न कमेटियों की अध्यक्ष और सदस्य के तौर पर महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन करती रही।

कितना गौरवपूर्ण अनूठा व्यक्तित्व और भारतीय नारी समाज के लिए

आदर्श की मिशाल है। वे राष्ट्रपति जैसे ऊँचे ओहदे पर आसीन होने के बाद भी देश की गरिमा, सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाजों का पालन करती हैं। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल को अपनी जाति, खानदान और देश की संस्कृति का ख्याल है। माथे पर बिंदिया और सिर पर हमेशा साझी का पल्लू रखे रहती हैं। यह आधुनिकाओं के लिए एक सबक है।

देश के संवैधानिक इतिहास में भारत के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद पर सत्तासीन है। कोई सोच भी नहीं सकता था। कल्पना भी नहीं थी कि सन 2004 में राजस्थान की राज्यपाल बनकर सियासत के गलियारों में वापस लौटी और तीन ही बरस के भीतर राष्ट्रपति की कुर्सी पर बैठकर देश के संवैधानिक इतिहास में एक नई तारीख लिख डाली। सौभ्य शालीन भारतीय सभ्यता संस्कृति में ढली यशस्वी महिला राष्ट्रपति हैं प्रतिभा पाटिल।

राज्यपाल के रूप में राजस्थान में धर्मान्तरण संबंधी कानून को रोककर प्रतिभा पाटिल ने समाज सुधार, महिला सशक्तिकरण, गरीबों के लिए आवास गृह की स्थापना और गरीब बच्चों के लिए स्कूल खुलवाने जैसे कार्यों में बेहद सरगर्मी से हिस्सा लेती रहीं।

ऐसी भारत की इस आदर्श महिला का राष्ट्रपति बनना हमारे लिये और विशेषकर नारी जाति समाज के लिये अभियान का विषय है। देश की सभी वर्गों की महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है। जन्मदिन पर बधाई-मंगलकामना।

14, उर्दूपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

विधवाओं की उपेक्षा न हौ

● किरण बाला ●

किसी लड़की का दुल्हन बनना उसके जीवन की सबसे बड़ी खुशी होती है और उसका विधवा हो जाना सबसे बड़ा दुःख। मृत्यु एक शाश्वत सत्य है। कभी पहले पति की मृत्यु हो जाती है तो कभी पत्नी की। पति की मौत पर पत्नी पर पहाड़ टूट पड़ता है। वैसे ही वह दुखी रहती है लेकिन सामाजिक रीति-रिवाज और परंपराएं तथा अंधविश्वास उसकी पीड़ा और अधिक बढ़ा देते हैं।

विधवाएं हर जगह उपेक्षित समझी जाती हैं। उनके प्रति अंधविश्वास भी बहुत प्रचलित हैं। पहले तो पति की मृत्यु पर उसे सती होने के लिए बाध्य किया जाता था। वह तो भला हो राजाराम मोहनराय का, जिन्होंने विधवाओं को इस प्रथा से मुक्ति दिलाई। लेकिन आज भी शुभ कार्यों में विधवाओं की उपस्थिति को अशुभ माना जाता है। वह न तो अच्छा पहन-ओढ़ सकती है, न सज-संवर सकती है। सफेद साड़ी ही उसकी पहचान है।

पुरुष प्रधान समाज ने विधवाओं की पीड़ी कभी जानने-समझने की कोशिश नहीं की। बल्कि उसके मन में यह धारणा बिठा दी है कि पति की मृत्यु के साथ ही सब कुछ खत्म हो जाता है और उसे सब कुछ त्याग कर तीर्थ स्थान या हरिद्वार चले जाना चाहिए। उसे सांसारिक सुखों का त्याग कर देना चाहिए।

विधुर चाहे कितना ही दुष्करित्र हो चाहे जहाँ आए-जाए, उठे-बैठे, उसे सब छूट है। सामाजिक वर्जनाएं केवल विधवाओं के लिए हैं। यदि कोई विधवा किसी पर-पुरुष से दो पल हंस-बोल भी ले, तो उस पर पहाड़ टूट

पड़ता है। उसे चरित्रहीन करार दे दिया जाता है और उसके चरित्र पर लांछन लगाए जाते हैं।

यदि विधवा के पास संचित धन है तो पुत्र येन-केन-प्रकारेण उसे हड्डप लेते हैं और फिर बेचारी को दर-दर की ठोकरे खाने पर मजबूर होना पड़ता। इसी दिन के लिए एक माँ अपने बेटे को जन्म देती है कि जब बुद्धापे में उसे सहारे की जरूरत हो, तो संतान उसे वृद्धाश्रम का रास्ता दिखा दे? आज अनेक विधवाएं जो अपने घर से उपेक्षित और प्रताड़ित हैं, विधवाश्रम या वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर हैं।

घर परिवार में विधवाओं की उपेक्षा किसी से छिपी नहीं है। अपनी ही संतान उनके साथ नौकरानी जैसा व्यवहार करती हैं तथा बहुएं बात-बात पर ताने और झिझियां मारती हैं। विधवा अपने घर की भले ही मुखिया हो, लेकिन उसकी स्थिति सबसे दयनीय प्राणी की होती है। बार-बार वह प्रताड़ित की जाती है। उससे ऐसे काम लिये जाते हैं जो उसके सम्मान के खिलाफ है। तेज-तरर बहुएं अपनी विधवा सास से अपने कपड़े धुलवाती हैं, जूठे बर्तन मंजवाती हैं तथा घर में झाड़-पौछा करवाती हैं।

जिस विधवा की एक से अधिक संतानें होती हैं, उसकी बहुत फजीहत होती है, क्योंकि सब उसे अपने लिए बोझ समझते हैं। सभी संताने अपना यह बोझ एक-दूसरे पर टालने की कोशिश करती हैं।

क्या कभी युवा संतानों ने अपनी विधवा माँ की परेशानियों को जानने का प्रयास किया है? आज के कमाऊ पूत और उनकी पत्नियां भले ही उन्हें दो वक्त

की रोटी दे दें, पर उनके पास पल-दो-पल बैठकर उनका दुख सुनने-समझने का समय कहाँ?

बच्चे के जन्म के बाद माँ अपने भविष्य के सुनहरे सपने देखने लगती है कि बड़ा होकर मेरा बेटा डॉक्टर, इंजीनियर या अफसर बनेगा तथा बुद्धापे में खूब सेवा करेगा। लेकिन विधवा होते ही उसके सारे सपने टूट जाते हैं। जैसे-तैसे वह अपनी जिंदगी के बाकी बचे दिन काटती है। उन्हें अपना ही खून कुछ इस तरह भुला-विसरा देता है जैसे कोई रिश्ता-नाता ही नहीं रह गया है।

समाज में पुरुष के लिए नैतिकता के दोहरे मानदंड आज भी कायम हैं। विधुर का पुनर्विवाह बड़ी धूमधाम से होता है। जबकि विधवा पुनर्विवाह को हमारा समाज आज भी अनैतिक मानता है। विधुर के लिए तो पुनर्विवाह के दरवाजे सदैव खुले हैं, लेकिन विधवा के लिए पर-पुरुष की कल्पना करना भी घोर पाप माना जाता है। उसे अपना सारा जीवन वैवध्य के रूप में काटने पर मजबूर किया जाता है।

पुरुष प्रधान समाज को अपनी सोच बदलनी होगी। विधवा कोई कोमा की मरीज नहीं हैं। उसकी भी अपनी कुछ इच्छाएं और भावनाएं हैं। उसे भी समाज की मुख्यधारा के साथ जीने का तथा पुनर्विवाह कर अपनी जिंदगी की शुरुआत करने का पूर्ण अधिकार है। क्या वह एक औरत है, इसलिए वह वैवध्य जीवन जीए? जब एक विधुर पुनर्विवाह कर अपने जीवन में खुशियों के नए रंग भर सकता है, तो विधवा क्यों नहीं? विशेष कर जो कम आयु में विधवा हुई हों, उनका पुनर्विवाह तो होना ही चाहिए ताकि उन्हें वैवध्य जीवन से मुक्ति मिल सके।

43/2 सुदामा नगर, रामटेकरी
मंदसौर - 458001 (म.प्र.)

आंसू और प्याज

• जसविंदर शर्मा •

अभी कुछ दिनों से पहाड़ी आलू के आतंक से मुक्ति मिली थी कि अब प्याज ने खून के आंसू रुला दिया है हमें। ऊपर से जमाने वालों की अहसान-फरामोशी देखिए। किसी से सहानुभूति क्या खाक करेंगे, महंगाई की मार से कोई रो रहा हो तो उसके सामने प्याज काटने बैठ जाएंगे। अमीर आदमी यह सोच कर हैरान हो रहा है कि अस्सी रुपए दिहाड़ी पाने वाला गरीब आदमी पच्चीस रुपए प्रति किलो प्याज लेकर कैसे खा पाएगा। यह तो दुनिया का सातवां आश्चर्य होगा कि इतनी कम आमदनी में इतनी महंगी चीज खा कर भी हम भारतवासी सबसे ज्यादा खुश रहने वाले लोग माने जाते हैं।

गरीब आदमी को जलील करने की ओर हद हो गई भाई। आज ही में विज्ञापन देखा है कि टी.वी. चेव खरीदने पर बीस किलो से लेकर आदमी की खास पसंद हो जाएगी। तो 80 रुपए प्रति किलो से लेकर ली गई है और अमीर का चिली-चिली और पिज्जा-नूडल्स काफी सस्ते में उपलब्ध हो रहा है। आम आदमी सूखी रोटी और आचार के साथ एक आध प्याज खाकर खुश हो लेता था मगर जमाने वालों को यह भी गवारा न हुआ।

जो सरकार गरीब को दाल रोटी भी मुहैया न करवा सके ऐसी सरकार भला किस काम की। आठा 17 रुपए किलो और बीस रुपए प्रति महीने की किस्त पर मोबाइल उपलब्ध है। मजाक करने की भी कोई हद होती है भाई। वाह री मेरी सरकार! आखिरकार तू विदेशी मगरमच्छों के कब्जे में आ ही गई।

आलू तो दलबदलू नेता की तरह होता है। उसे जिस सब्जी में भी डाल दो, वैसा ही स्वाद अखिल्यार कर लेता है। मेथी में डाल लो, बैंगन में डाल लो या चिकन में, आलू का अपना स्वाद गायब हो जाता है मगर सब लोग इतने बेशर्म नहीं होते। प्याज का अपना जायका नहीं बदलता। सब्जी में डलकर वह उसकी रंगत, महक, स्वाद और तुर्शी बदल देता है। कुछ सब्जियां तो बिना प्याज के बन ही नहीं सकती।

प्याज की कीमतों पर कोई नियंत्रण न करके सरकार ने लोगों के खाने-पीने को नीरस बना दिया है। पहले ही आम आदमी के छोटे से क्षुद्र जीवन में दुखों का अम्बार लगा था और सस्ता प्याज काटकर उसकी ऊँखों में सहजता से आंसू आते थे और बेचारे गरीब के मन का दुख घट जाता था, दिल पर जमी सारी मैल व कड़वाहट धुल जाती थी। अब न प्याज रहेगा और न आम आदमी उसे काट पाएगा और न खून के आंसू रो पाएगा। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।

5/2-डी, रेल विहार, मंसादेवी, पंचकुला – 134109 (हरियाणा)

मन की पवित्रता कर्म को पवित्र बनाती है और पवित्र कर्म धैर्य का अनुगामी बन जाता है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावनी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

बढ़ता उपभोक्तावाद : प्रगति का सूचक

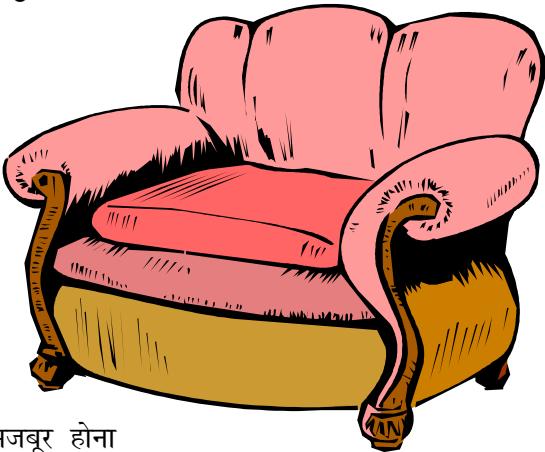
• भूरचंद जैन •

विश्व पटल पर बढ़ती औद्योगिक क्रांति, मशीनरी एवं तकनीकी युग का फैलाव, उन्नत कृषि का विस्तार, रोजगार के साधनों में बढ़ोतरी, शिक्षा का प्रचलन, कार्य करने की क्षमता, व्यापार आदि में प्रतिस्पर्धा के कारण लोगों को रोजगार मिलने के द्वारा खुलने लगे। इस कारण लोगों की आय में भी बढ़ोतरी होने लगी। आर्थिक सम्पन्नता अथवा सुविधा के कारण ही हर व्यक्ति ने अपने-अपने परिवार के लिये विभिन्न प्रकार की जीवनोपयोगी वस्तुओं की खरीद करने की सोच एवं समझ में विस्तार होने लगा। लोगों में अच्छी वस्तु, सामग्री खरीदने की चाह भी बढ़ने लगी। इसके लिये प्रचार माध्यमों में विज्ञापनों को देखकर लोगों को अच्छी, सस्ती, सुंदर, टिकाऊ सामग्री खरीद करने की ओर रुझान बढ़ने लगा। प्राचीन समय में कम आबादी के बाद तकनीकी विकास एवं विस्तार के अभाव में विभिन्न प्रकार की सामग्री उपलब्ध नहीं होने पर लोग केवल अति आवश्यक वस्तुओं को खरीदकर अपने जीवन एवं परिवार की नाव पार करते थे, संतोष करता था। उस समय आय के सीमित साधन भी लोगों को ऐसा करने को मजबूर करते थे। अब चूंकि आर्थिक सम्पन्नता के साथ, बढ़ती आबादी और फिर लोगों में विभिन्न प्रकार की सामग्री खरीद करने का शोक एवं सजावट के साथ अच्छी वस्तुओं का सेवन करने की जिज्ञासा बढ़ने लगी है इससे बाजार में उपभोक्तावाद भी बढ़ने लगा। यही व्यवसायिक क्रांति का मूल कारण है।

आर्थिक सुविधा के साथ सम्पन्नता के कारण अब हर परिवार के लोग अपने

रहन-सहन को बेहतरीन बनाने के लिये और सजावट के नाम पर नाना प्रकार की वस्तुओं की खरीद करता है। ऐसा एक परिवार दूसरे परिवार को देखकर, उससे अधिक अच्छा अपने परिवार के लिये करने का प्रयासरत रहता है। इस कारण बाजार में उसे खरीद करने को मजबूर होना पड़ता है। इससे उपभोक्तावाद का विस्तार होने लगा है। किसी जमाने में साधन सुविधाओं के अभाव, सामग्री की उपलब्धता नहीं होने, सीमित साधनों, इच्छा शक्ति पर अंकुश, बचत की इच्छा के कारण लोगों में अनावश्यक वस्तुओं को खरीद करने का मन नहीं होता था। अब भौतिकवाद के युग में हर व्यक्ति, हर परिवार आधुनिक सुख-सुविधा के साधनों के लिये बाजार को टटोलता रहता है और एक से एक बढ़िया सामग्री खरीद करने लग गया है। इससे उपभोक्तावाद बढ़ा है और निरंतर बढ़ता जा रहा है और नित्य नई सामग्री बाजार में इस कारण उपलब्ध भी होने लगी है।

प्राचीन समय में अथवा यो कहिये कि कलयुग अर्थात् मशीनरी युग के आरंभ होने से पहले घर-परिवार की महिलाओं में बाजार से वस्तुओं की खरीद करने की आदत कम थी। इस कारण घर की सजावट, रख-रखाव आदि पर कम व्यय होता था। वैसे भी महिलाओं द्वारा बाजार में वस्तुएं-सामग्री खरीद करने जाने का प्रचलन परिस्थितियों के कारण कम था। अब तो शिक्षा के साथ महिलाओं में रोजगार की चाह ने



इन्हें बाजार में खरीददारी करने की इच्छा शक्ति को बढ़ा दिया है। परिणाम स्वरूप महिलाएं स्वयं बाजार में खरीददारी करके घर परिवार की आवश्यक वस्तुओं की खरीद के साथ, घर की सजावट, अपने एवं परिजनों की सुंदरता आदि को बढ़ाने के लिए अनावश्यक वस्तुओं की खरीद भी अन्य महिलाओं को देखकर करने लगी है। जिसके कारण भी बाजार में उपभोक्ता का ग्राफ बढ़ने लगा गया है।

वर्तमान में भौतिकवाद के बढ़ते उपकरणों का व्यापक प्रचार-प्रसार, प्रचार के माध्यमों से अधिक होने पर उपभोक्ताओं को वस्तु की ओर आकर्षित करता रहता है। इस कारण एक ही प्रकार की वस्तु की खरीद के बाद उसमें बढ़ने वाली तकनीकी सुविधा को देखकर नई वस्तु को मनमाने दामों में खरीदने को उपभोक्ता प्रेरित होता है और पुरानी वस्तु को सस्ते दामों पर बेचता है। इस कारण भी बाजार में उपभोक्ताओं का आंकड़ा दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है।

बाजार में उपभोक्ताओं के खरीद के रुझान को देखकर उत्पादनकर्ता भी नई-नई सामग्री बाजार में लाकर न केवल प्रस्तुत करता है अपितु उसका व्यापक

प्रचार-प्रसार करवाकर उपभोक्ताओं को आकर्षित करता है। आखिर उपभोक्ता भी नई वस्तु के सेवन, उपयोग, भोग के लिये लालायित होकर खरीद करता रहता है। ऐसी बढ़ती खरीददारी ने ही व्यापार को अधिक ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया है। इस कारण बाजार-व्यापार में उपभोक्ताओं की संख्या में निरंतर इज़ाफा हो रहा है, बढ़ोतरी हो रही है।

किसी जमाने में घर-परिवार में सुबह के नाश्ते, दोपहर की दुपहरी, सुबह सायं के भोजन में सीमित नपी-तुली खाद्य-सामग्री बनती थी। लोगों का सादा जीवन था। खाने-पीने की वस्तुएं भी सीमित थी लेकिन अब तो सुबह का नाश्ता और दोपहर की चाय अर्थात्

जाना ही पड़ता था। जबकि पहले मात्र एक थाली में परोसा साधारण पौष्टिक भोजन कर व्यक्ति संतुष्ट होता था। लेकिन अब उसे विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट एवं चटकारे भोजन की चाह रहती है। इस चाह ने भी उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया है। इतना ही नहीं तीज-त्यौहारों पर बनने वाली सामग्री ने तो उपभोक्ता को अंधाधुंध खरीददारी करने को मजबूर कर रखा है। यह सब देखादेखी के साथ बढ़ते व्यंजनों का प्रभाव है। जो उपभोक्तावाद को बढ़ावा दे रहे हैं।

उपभोक्तावाद आखिर इतना क्यों बढ़ रहा है? यह एक विचारणीय प्रश्न है। वर्तमान समय में उपभोक्ताओं को

पहुँचाई है। आज देश के एक कौन से दूसरे कौने तक ही नहीं विश्वभर में व्यापार को सरल बना दिया है। सामग्री पहुँचना आसान हो गया है। ऐसी स्थिति में उपभोक्ता जिस माल-सामग्री की चाह, इच्छा रखता है उसे तत्काल व्यापारी उपलब्ध करवाकर उपभोक्ताओं को संतुष्ट करता है। इस कारण भी बाजार में उपभोक्तावाद बढ़ने लगा है।

परमाणु युग में सभी देश अपने मुल्क की हिफाजत रखने के लिये, आधुनिक सुरक्षा साधनों को संग्रह करने के लिए आतुर रहते हैं। सुरक्षा के साधनों को संग्रहित कर रखने की चाह ने भी उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया है। इतना ही नहीं अब तो स्वयं सेवी संस्थाएं भी अपनी संस्था को आदर्श संस्था बनाने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त सामग्री से परिपूर्ण करने का प्रयास करती हैं। इस कारण साधन सुविधा बढ़ती है तो उसका प्रभाव भी बाजार में खरीददारी पर पड़ता है और उपभोक्तावाद पनपा है। अब तो बच्चों में भी अपने खिलौने से लेकर, आधुनिक वेशभूषा के वस्त्र, भौतिक साधनों आदि को प्राप्त करने की जिज्ञासा ने भी उपभोक्तावाद को ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया है।

जिस देश, घर परिवार, व्यक्ति की खरीददारी की इच्छा शक्ति बढ़ती है फलस्वरूप उपभोक्तावाद बढ़ता है तो समझ लेना चाहिए कि यह शिक्षा का प्रभाव है। भौतिक साधनों से जीवन जीने की चाह है। फैशन की बढ़ती मांग है। रहन-सहन में बढ़ोतरी है। खान-पान का विस्तार है। आर्थिक सम्पन्नता है। एक-दूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा की होड़ है। यह सब बढ़ते उपभोक्तावाद के शुभ चिह्न हैं और विकास की ओर आगे बढ़ाने की ओर संकेत करते हैं।

जिस देश, घर परिवार, व्यक्ति की खरीददारी की इच्छा शक्ति बढ़ती है फलस्वरूप उपभोक्तावाद बढ़ता है तो समझ लेना चाहिए कि यह शिक्षा का प्रभाव है। भौतिक साधनों से जीवन जीने की चाह है। फैशन की बढ़ती मांग है। रहन-सहन में बढ़ोतरी है। खान-पान का विस्तार है। आर्थिक सम्पन्नता है। एक-दूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा की होड़ है। यह सब बढ़ते उपभोक्तावाद के शुभ चिह्न हैं और विकास की ओर आगे बढ़ाने की ओर संकेत करते हैं।

दुपहरी करने में नाना प्रकार की खाने-पीने की सामग्री बनने लगी है और दोनों समय के भोजन में बनने वाली खाद्य सामग्री की सूची दिनोंदिन लम्बी होती जा रही है। इसकी पूर्ति के लिये वस्तुओं की खरीद के लिये उपभोक्ता को बाजार जाना ही पड़ता है। खाने-पीने की सामग्री में बढ़ोतरी के साथ इन वस्तुओं के रख-रखाव, परोसने के लिये बर्तनों आदि का विस्तार भी इतना प्रतिस्पर्धा के रूप में बढ़ गया है कि अच्छे-अच्छे होटलों की भाँति अब भोजन की मेजें सजने लगी हैं। इस सबके लिये सामग्री खरीद करने हेतु उपभोक्ता को बाजार

अपनी वस्तु के प्रति आकर्षित करने के लिये व्यवसाय करने वाले व्यापारियों, उद्यमियों ने बाजार में माल की मात्रा को बढ़ाने के साथ उनमें गुणवत्ता में विस्तार किया है। वहाँ नित्य नई सामग्री देने की प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी है, उपभोक्ताओं को व्यापारियों की आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण माल सस्ते अर्थात् कम मुनाफे में मिलने का अवसर मिलने लगा है, इस कारण भी उपभोक्तावाद बढ़ाने लगा है।

संसार में यातायात सुविधा, संचार व्यवस्था का बढ़ना, आर्थिक सुविधा आदि ने भी उपभोक्ताओं को राहत

जूनी चौकी का वास,
बाड़मेर (राजस्थान)

आधुनिक सभ्यता का अंदायन

• स्वामी वाहिद काज़मी •

जब से एक नया और अनोखा रोग 'मैड काऊ डिसीज़' उर्फ पागल गाय रोग फैला, तभी से मुझे इसका 'मैड' शब्द उद्घेलित करता रहता है कि आखिर गाय जैसा सीधा-सादा, शान्त, सरल पशु पागल क्यों होने लगा? गायें कोई आधुनिक पढ़ाई पढ़ी हुई बुद्धिजीवी, नयी रोशनी की भौतिक चकाचौंध व आर्थिक ऐश्वर्य से उकतायी हुई प्राणी तो होती नहीं, फिर उनमें पागलपन कहाँ से आ जाता है, जो एक संक्रामक बीमारी के रूप में मनुष्यों में भी फैलने लगता है। अब जाकर असलियत सामने आई। मैं इस असलियत को सामने लाने का श्रेय एक टिप्पणीकार भाई सुनील को देकर उनका आभारी हूँ।

मैड काऊ बीमारी फैलने का सबसे बड़ा और भयानक कारण तो यही है कि प्रकृति कहें या ईश्वर की ओर से चारा-दाना, घास-पात खाकर पेट भरने वाली शाकाहारी प्राणी को अब शुद्ध शाकाहार के बदले हड्डियों, खून आदि पशु-हत्या से बचे अवशेषों से बना हुआ मांसाहार किस्म का आहार खाने के लिए दिया जाता है। सारी स्थिति स्पष्ट करता है सुशीलजी की टिप्पणी का यह अंश

'पश्चिमी देशों के आधुनिक बूचड़खानों में गायों आदि को काटने के बाद मांस को तो पैक करके बेच दिया जाता है, किंतु बड़े पैमाने पर हड्डियां, अंतड़िया, खून आदि का कचरा निकलता है। इसको ठिकाने लगाना एक समस्या होती है। इस समस्या से निपटने का एक तरीका निकाला गया है। इस कचरे को चूरा करके काफ़ी ऊँचे तापमान पर सुखा लिया जाता है। इसमें अनेक प्रकार के पौष्टिक तत्त्व होते हैं ऐसा मानकर इसे पुनः गायों के आहार में मिला दिया

पिछले पंद्रह वर्षों में चीन में मुर्गी उत्पादन दुगना हो गया है। थाइलैंड, वियतनाम और इंडोनेशिया में यह अस्सी के दशक की तुलना में तीन गुना हो गया है। वैज्ञानिक और चिकित्सक यह मानकर चल रहे हैं कि बर्डफलू का नये रूप वाला यह रोगाणु आगे चलकर इन्सान से इन्सान में संक्रमित होने लगेगा। तब यह महामारी का रूप ले लेगा। ऐसा कभी भी हो सकता है और इससे निपटने की भारी तैयारी करनी पड़ेगी। आपको याद होगा कि बर्डफलू यानी पक्षी-ज्वर के डर से भारत में खासकर असम-बंगाल-महाराष्ट्र आदि में पिछले कुछ वर्षों में लाखों मुर्गियों को मौत के घाट उतारा जा चुका है।

जाता है। इससे गायें वी.एस.ई. नामक बीमारी का शिकार होती हैं और उनके मस्तिष्क को काफ़ी क्षति पहुँचती है। इसलिए इसे 'पागल गाय रोग' भी कहा गया है। मनुष्य के मांस को, हड्डी को, मनुष्य खाए, इसे अनैतिक अकल्पनीय और अस्वीकार्य माना जाता है। लेकिन मुनाफ़े के लालच में मनुष्य द्वारा यह 'स्वजाति भक्षण' गायों पर ज़बरदस्ती थोपा जा रहा है। 'पागल गाय रोग' के व्यापक प्रकोप के बाद ब्रिटेन ने इस पर पाबंदी लगाई है। किंतु उत्तरी अमेरिका और कुछ अन्य विकसित माने गए देशों में यह बर्बर तरीका अभी भी जारी है।

तात्पर्य यह है कि इस तरह के रोग से ग्रसित गाय का मांस खाने वाले लोगों को भी यह रोग हो सकता है। इसी तरह भोजन से फैलने वाले कुछ अन्य संक्रामक रोगों का सम्बन्ध भी आधुनिक फैक्ट्रीनुमा पशु पालन से जोड़ा जा रहा है। अनेक देशों में मैड काऊ डिसीज़ अर्से तक अफ़रा-तफ़री मचा चुकी है। यह भी आपको याद होगा कि इस रोग से बचाव के लिए ब्रिटेन व अन्य देशों में लाखों गायों-बछड़ों को क़ल्ला कर दिया गया था।

ख्याल रखिए कि आधुनिक सभ्यता के अंधेपन से उपजा आधुनिक औद्योगिक पशुपालन (जिसे पशुपालन नहीं, पशु-हत्यारी फैक्ट्रियां कहना ज़्यादा सही होगा) अनेक कबीलाई या शहरी समाजों में भोजन के लिए शिकार करने या साधारण, सामान्य मांसाहार जैसा नहीं है। वहाँ तो शिकार किए जाने वाले पशु जंगलों में स्वाधीन रहते-बसते हैं। मांसाहार के लिए जानवर पालना भी एक अलग चीज़ है। मगर यह आधुनिक पशुपालननुमा उद्योग बिल्कुल अलग चीज़ है। यह बेहद अप्राकृतिक, बरबादीभरा, प्रदूषणकारी और पूंजीप्रधान ऐसा जघन्य व्यापार है, जिसने लालच, इन्सानी-दयाभाव, क्रूरता और बेरहमी की सारी मर्यादाएं तोड़ दी हैं। अब खुले चरागाहों या घास के मैदानों, खेतों में पशुओं को नहीं चराया जाता। वे कुदरती भोजन भी नहीं कर सकते। बड़े-बड़े फार्मों में छोटे व संकरे डड़ों में या पिंजरों में हज़ारों-लाखों पशु-पक्षियों को एक जगह बड़ा किया जाता है। घूमने-फिरने के लिए भी जगह नहीं होती। अक्सर काफ़ी गंदगी रहती है।

उन्हें काफ़ी रसायनयुक्त आहार ठूंस-ठूंस कर खिलाया जाता है। तरह-तरह के हारमोन्स और दवाइयां देकर कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा उनका वज़न बढ़ाने के उपाय किये जाते हैं। फैक्टरीनुमा इन फार्मों में पशु-पक्षियों को 'पाला' नहीं जाता। बस उन्हें मांस उत्पादन का साधन माना जाता है।

और बर्ड फ्लू? अब तक आप समझ ही गए होंगे कि जो कारण 'भैड काऊ डिसीज़' के हैं, वही उस बीमारी के भी जिसे बर्ड फ्लू कहा जाता है। फैक्टरीनुमा मांस उत्पादन का आरंभ मुर्गियों से ही हुआ था। पालतू मुर्गियों और बत्तखों में बर्डफ्लू की बीमारी यों तो काफ़ी समय से चली आ रही हैं। किंतु नये हालात में इसका रोगाणु (जो पहले एच-1, एन-1 नामक वायरस के रूप में जाना गया था) अब एच-5, एन-1 नामक नये घातक और भयावह रूप में बदल गया है। सबसे भयानक सच्चाई यह कि यह वायरस प्रजाति की बाधा पार कर मनुष्यों को भी

चपेट में लेने में सक्षम हो गया है। 'विश्व खाद्य संगठन' ने इसकी उत्पत्ति को चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया में मुर्गीपालन से जोड़ा है।

इन इलाकों में पहले भी मुर्गीपालन होता तो था, पर अब वह खतरनाक हद तक बढ़ गया है। पिछले पंद्रह वर्षों में चीन में मुर्गी उत्पादन दुगना हो गया है। थाइलैंड, वियतनाम और इंडोनेशिया में यह अस्सी के दशक की तुलना में तीन गुना हो गया है। वैज्ञानिक और चिकित्सक यह मानकर चल रहे हैं कि बर्डफ्लू का नये रूप वाला यह रोगाणु आगे चलकर इन्सान से इन्सान में संक्रमित होने लगेगा। तब यह महामारी का रूप ले लेगा। ऐसा कभी भी हो सकता है और इससे निपटने की भारी तैयारी करनी पड़ेगी। आपको याद होगा कि बर्डफ्लू यानी पक्षी-ज्वर के डर से भारत में खासकर असम-बंगाल-महाराष्ट्र आदि में पिछले कुछ वर्षों में लाखों मुर्गियों को मौत के घाट उतारा जा चुका है।

महा धंधेबाज व्यापारी माने या न माने, अपने मुह आप बोलती सच्चाई यही है कि पक्षी-ज्वर (बर्डफ्लू) हो या पागल गाय रोग, ये पशुओं के रोग नहीं हैं। ये तो उससे अलग एक गहरी बीमारी के ऊपरी लक्षण हैं। यह बीमारी है भोग, लालच व असमानता पर आधारित 'सभ्यता' की जिसमें शीर्ष पर बैठे थोड़े-से लोगों ने अपने लाभ, ऐश्वर्य और विलास के लिए बाकी सब लोगों, बाकी प्राणियों तथा प्रकृति पर अत्याचार करने को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मान लिया है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि ये नयी महामारियां उन निरीह, मूक प्राणियों या प्रकृति के प्रतिशोध का, विरोध का एक तरीका है। ये रोग नहीं आधुनिक सभ्यता का ऐसा पागलपन है, जिसने उसको बुद्धि-विवेक को आग लगा दी है! आप कहाँ हैं? सोचकर देखिए।

10, राज होटल, पुल चमेली, अम्बाला
छावनी-133001 (हरियाणा)

कैसे रुके भ्रष्टाचार

?

शिष्टाचार बन रहे नासूर भ्रष्टाचार

से जुड़े हर प्रश्न को समाहित करता अनुव्रत पाक्षिक का विशेष अंक।

रचनाकारों, की तथ्यपरक रचनाएं एवं पाठकों के विचार

31 दिसंबर 2009 तक सादर आमंत्रित।

जीवन का यथार्थ

• सीताराम गुप्ता •

यदि हमसे पूछा जाए कि संसार में सबसे बड़ा योद्धा कौन हुआ है अथवा है तो हम असमंजस में पड़ जाएंगे। इतिहास भरा पड़ा है अनेक योद्धाओं से। लेकिन वास्तविक योद्धा कौन है? गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है, “जो लैरे दीन के हेत सूरा सोई” जो अपने हाइ-मांस के शरीर की स्थूलता का विस्तार करने की बजाय दधीचि ऋषि की तरह किसी की रक्षा के लिए अपनी अस्थियाँ तक दान में दे दे वो है वास्तविक योद्धा। सच्चा योद्धा वो जो दूसरों की भूख मिटाने के लिए खुद भूखा रह जाए। इतिहास भरा पड़ा है ऐसे वास्तविक योद्धाओं से।

मुरलीधर देवीदास आमटे जिन्होंने अपना सारा जीवन कुष्ट रोगियों की सेवा और उनके पुनर्वास में लगा दिया। गाँधी जी ने इस क्षेत्र में उनके अथक प्रयासों के लिए उन्हें अभय साधक कह कर पुकारा। इस अभय साधक बाबा आमटे ने कुष्ट रोग के बैकटीरिया को चिकित्सीय प्रयोग के लिए अपने शरीर में प्रविष्ट करा लिया ताकि कुष्ट रोग पर उचित शोध कार्य करके शीघ्र इसके उपचार में सफल हो सकें। क्या अपने शरीर के साथ ऐसा प्रयोग कोई कायर कर सकता है? वह दूसरी बात है कि नौ फरवरी 2008 को जब इस महान योद्धा ने अंतिम सांस ली तो हम उनके योगदान को नज़रअंदाज़ कर एक ही राग अलाप रहे थे और वह राग था महाबली खली का राग।

ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड में जन्मे तथा बाद में स्थायी रूप से भारत की

नागरिकता ले लेने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक जे बी एस हॉल्डेन भी स्वयं पर प्रयोग अथवा परीक्षण करने के लिए चर्चित रहे। किसी विशेष स्थिति में शरीर कैसे व्यवहार करता है यह देखने के लिए हॉल्डेन अपने शरीर के साथ विचित्र और भयंकर प्रयोग करने से भी नहीं घबराते थे। प्रयोग के बाद वे भयंकर पीड़ा की स्थिति में भी जो कुछ अनुभव करते थे उसे तुरंत रिकॉर्ड कर लेते थे। उनके इस अपूर्व साहस के द्वारा ही कई रोगों के उपचार की खोज संभव हुई। अपने ऊपर प्रयोग करके ही उन्होंने यह अध्ययन किया कि कार्बन डाइऑक्साइड और बहुत ठंडे तापमान का साँस पर क्या प्रभाव होता है और इसके द्वारा ही उन्होंने टेटनस तथा कन्वलशन का उपचार खोजने में सफलता प्राप्त की। क्या वास्तविक बहादुरी के अभाव में इस प्रकार के प्रयोगों और परीक्षणों की कल्पना भी की जा सकती है?

बुद्ध, महावीर, नानक और कबीर से लेकर गाँधी, मदर टैरेसा और बाबा आमटे तक एक विस्तृत सूची हमारे सामने है महान योद्धाओं की। और अब इस विस्तृत सूची में एक नाम और जोड़ना अत्यंत प्रासंगिक ही होगा और वह नाम है विष्णु प्रभाकर का। विष्णु प्रभाकर और एक महान योद्धा? विष्णु प्रभाकर का शुमार क्रांतिकारी अथवा प्रगतिशील लेखकों में भी नहीं होता और न ही उन्होंने कभी कोई झंडा विशेष ही उठाया अथवा किसी आंदोलन का ही नेतृत्व किया। कुछ लोग तो उन्हें

लेखक मानने को भी तैयार नहीं हुए फिर कैसे महान योद्धा हुए विष्णु प्रभाकर?

विष्णु प्रभाकर हिन्दी के एक प्रसिद्ध गाँधीवादी लेखक हुए हैं जिनका लेखन सदैव मानवीय मूल्यों के लिए समर्पित रहा इसमें संदेह नहीं। उनके जीवन और लेखन दोनों में अत्यंत सादगी रही और यही सादगी उन्हें विशिष्ट बना देती है। लेकिन इससे कोई व्यक्ति महान योद्धाओं की श्रेणी में कैसे आ सकता है? विष्णु प्रभाकर एक ऐसे लेखक हुए हैं जिन्होंने आम आदमी की पीड़ा को पहचानकर सही रास्ता सुझाया। जीवनपर्यंत लोगों की मदद भी करते ही रहे। जितनी सादगी से जिये उतनी ही सादगी से चुपचाप चले भी गए लेकिन जाने से पहले वो काम कर गए जो बड़े-बड़े योद्धाओं के लिए भी असंभव है।

विष्णु प्रभाकर की शव-यात्रा नहीं निकली, अंत्येष्टि पर साहित्यकारों की भीड़ जमा नहीं हुई क्योंकि उन्होंने अपना पूरा शरीर ही दान करने की घोषणा कर दी थी ताकि उनके पार्थिव शरीर से दूसरों को जीवनदान मिल सके। विष्णु प्रभाकर का आदर्श काल्पनिक आदर्श नहीं था। मन, वचन और कर्म तीनों से ही वे आदर्शवादी थे इसीलिए जाते-जाते जीवन के आदर्श को यथार्थ में बदल गए। उनका देहदान करने का संकल्प एक बार फिर हमें दधीचि ऋषि की याद दिला देता है। उन्होंने जाते-जाते जीवन के जो अक्षर लिखे वही अक्षर उन्हें महान योद्धा बनाने के लिए पर्याप्त हैं।

ए. डी. 106—सी, पीतम पुरा,
दिल्ली — 110034

वृद्धजनों का भरण पोषण

• डॉ. बसंतीलाल बाबेल •

वृद्ध माता-पिता का भरण पोषण आरंभ से ही व्यक्ति का पवित्र कर्तव्य माना गया है। प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह अपने वृद्ध माता-पिता, पत्नी एवं अवयस्क बच्चों का भरण पोषण करें तथा उनकी शिक्षा, दीक्षा एवं चिकित्सा की व्यवस्था करें। मनु सृति में भी यह कहा गया है

“वृद्धों च मातापितरौ साध्वीभाय
सुतः शिशुः।

अपकार्य शतं कृत्वा
भर्तव्यमनुरब्रवीत् ॥”

अर्थात् व्यक्ति को सौ अपकार्य करते हुए भी अपने वृद्ध माता-पिता, साध्वी, पत्नी एवं अवयस्क बच्चों का भरण-पोषण करना चाहिये। यह व्यक्ति का एक नैतिक कर्तव्य माना गया है, लेकिन अब इसे विधिक दायित्व भी बना दिया गया है। दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 125 में यह प्रावधान किया गया है कि पर्याप्त साधनों वाला व्यक्ति अपने ऐसे वृद्ध माता-पिता, साध्वी पत्नी एवं अवयस्क बच्चों का भरण पोषण करेगा जिनके पास अपनी आय के पर्याप्त साधन नहीं हैं। डॉ. विजयमनोहर बनाम काशीराव राजाराम (ए.आई.आर. 1987 एस.सी. 1100) के मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा यहाँ तक कहा गया है कि विवाहिता पुत्री का भी अपने वृद्ध माता-पिता का भरण पोषण करने का दायित्व है। इसी प्रकार रफीउद्दीन बनाम सालेहा खातून (ए.आई.आर. 2008, एन.ओ.सी. 776, मुम्बई) के मामले में मुम्बई उच्च न्यायालय द्वारा यह प्रतिपादित किया गया है कि माता अपने पति के जीवित रहते हुए भी अपने पुत्रों से भरण पोषण की मांग कर

सकती है। इस प्रकार कुल मिलाकर निष्कर्ष यह है कि वृद्धजनों का भरण पोषण करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक एवं विधिक दायित्व है।

इसी सम्बन्ध में संसद द्वारा एक नया अधिनियम पारित किया गया है। यह अधिनियम माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण पोषण एवं कल्याण अधिनियम 2007 है। इस अधिनियम की धारा 4 में प्रत्येक व्यक्ति पर अपने ऐसे माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों का भरण पोषण का दायित्व अधिरोपित किया गया है जिनके पास स्वयं के भरण पोषण के कोई साधन नहीं हैं। यदि कोई वरिष्ठ नागरिक संतानहीन है तो उसके भरण पोषण का दायित्व ऐसे व्यक्ति पर है जो उसकी सम्पत्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त करने वाला है।

परिभाषाएं

धारा-2(ज) में वरिष्ठ नागरिक की परिभाषा दी गई है। इसके अनुसार वरिष्ठ नागरिक से अभिप्राय ऐसे व्यक्ति से है जो भारत का नागरिक है तथा जिसने 18 वर्ष की आयु पूरी कर ली है। जहाँ तक वरिष्ठ नागरिकों के भरण पोषण एवं कल्याण का प्रश्न है, भरण पोषण एवं कल्याण से अभिप्राय भोजन, वस्त्र, चिकित्सीय सुविधा, स्वास्थ्य की देखभाल, मनोरंजन के साधन आदि से है।

भरण पोषण के लिए आवेदन

भरण पोषण के लिए आवेदन की प्रक्रिया का उल्लेख धारा-5 में किया गया है। वरिष्ठ नागरिक या माता-पिता द्वारा भरण पोषण हेतु अधिकरण के समक्ष आवेदन करना होगा। यदि ऐसा व्यक्ति आवेदन करने में असमर्थ है तो उसकी ओर से किसी स्वैच्छिक संगठन

या व्यक्ति द्वारा आवेदन किया जा सकेगा। इतना ही नहीं ऐसे मामलों में अधिकरण स्वयं संज्ञान ले सकेगा अर्थात् उसकी स्वप्रेरणा से मामला दर्ज किया जा सकेगा।

अधिकरण का गठन

धारा-7 में अधिकरण के गठन के बारे में प्रावधान किया गया है। राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक उपखंड में एक अधिकरण की स्थापना की जायेगी, जिसकी अध्यक्षता उपखंड अधिकारी से अन्यून पंक्ति का अधिकारी करेगा। ऐसे अधिकारी को जांच के दौरान सिविल न्यायालय की वे सब शक्तियां प्राप्त होगी जो सिविल मामलों का विचारण करने वाले सिविल न्यायालय को प्राप्त हैं। जहाँ तक आवेदन करने का प्रश्न है, ऐसा आवेदन ऐसे अधिकरण के सामने प्रस्तुत किया जायेगा, ऐसा वृद्ध व्यक्ति निवास करता है या उसने अंतिम बार निवास किया है या उसकी संतान अथवा संबंधी निवास करता है।

भरण पोषण का आदेश

धारा-9 में अधिकरण की भरण पोषण का आदेश देने की शक्तियों के बारे में प्रावधान किया गया है। यदि जांच से अधिकरण यह पाता है कि किसी व्यक्ति द्वारा अपने माता-पिता अथवा वरिष्ठ नागरिक का भरण पोषण नहीं किया जा रहा है अथवा वह उपेक्षा का दोषी है अथवा वह भरण पोषण के दावे को अस्वीकार करता है तो अधिकरण ऐसे माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों के भरण पोषण का आदेश दे सकेगा। प्रतिमाह भरण पोषण की राशि वह होगी जो अधिकरण उचित समझे, लेकिन

ऐसी राशि दस हजार रुपए प्रतिमाह से अधिक नहीं हो सकेगी।

अपील

यदि कोई व्यक्ति ऐसे आदेश से व्यवित है तो वह अपील अधिकरण के समक्ष अपील प्रस्तुत कर सकेगा। अपील अधिकरण की अध्यक्षता जिला मजिस्ट्रेट से अन्यून पंक्ति के अधिकारी द्वारा की जायेगी।

वृद्धावस्था गृह की स्थापना

वृद्धजनों एवं वरिष्ठ नागरिकों की देखरेख के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक जिले में कम से कम एक वृद्धावस्था गृह की स्थापना की जायेगी जिसमें ऐसे 150 वरिष्ठ नागरिकों को समायोजित करने की क्षमता होगी जो अकिंचन अर्थात् निर्धन है। ऐसे गृहों में वरिष्ठ नागरिकों के भरण पोषण के साथ-साथ उनकी चिकित्सीय परिचर्या एवं मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराये जायेंगे।

यहाँ पर अकिंचन अथवा निर्धन व्यक्ति से अभिप्राय ऐसे व्यक्ति से है जिनकी आय के कोई साधन नहीं हैं और जो राज्य सरकार द्वारा बनाये गये नियमों के अनुसार निर्धन है।

वरिष्ठ नागरिकों की चिकित्सीय व्यवस्था

अधिनियम की धारा-20 में वरिष्ठ नागरिकों के लिए चिकित्सीय व्यवस्था के बारे में प्रावधान किया गया है। इसके अनुसार राज्य सरकार द्वारा ऐसे व्यक्तियों के लिए पूर्णकालिक या अंशकालिक अस्पतालों की स्थापना की जायेगी अथवा अपने द्वारा वित्तपोषित अस्पतालों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए समुचित संख्या में शैयाओं की व्यवस्था की जायेगी। ऐसे अस्पतालों में दीर्घकालिक, मरणान्तक एवं विकृत रोग से ग्रसित रोगियों की चिकित्सा पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

भरण पोषण के आदेश का प्रवर्तन

अधिनियम की धारा-11 के अंतर्गत भरण-पोषण के आदेश के प्रवर्तन के

बारे में प्रावधान किया गया है। ऐसे आदेशों का प्रवर्तन उसी रीति से किया जायेगा जिस रीति से दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 125 के अंतर्गत पारित भरण पोषण के आदेश का किया जाता है। इसमें आदेशित व्यक्ति की सम्पत्ति की कुर्की, सिविल जेल आदि सम्बंधित है।

शास्ति

अधिनियम की धारा-24 में अपराध एवं दंड के बारे में प्रावधान किया गया है। इसके अनुसार माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल, भरण पोषण एवं आदेशों की पालना में चूक करने वाले व्यक्तियों के लिए तीन माह तक की अवधि के कारावास की सजा अथवा पांच हजार रुपये तक के जुर्माने अथवा

दोनों से दण्डित किये जाने का प्रावधान किया गया है।

इस प्रकार उक्त अधिनियम में माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों के भरण पोषण एवं कल्याण के लिए कई महत्वपूर्ण प्रावधान किये गये हैं। साथ ही जिले के समाज कल्याण अधिकारी या उसके समकक्ष अधिकारी को भरण पोषण अधिकारी के रूप में नियुक्त किये जाने की व्यवस्था भी की गई है जो वरिष्ठ नागरिकों की ओर से की जाने वाली कार्यवाहियों में मदद करेगा।

यह अधिनियम 21 वीं सदी का एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं कल्याणकारी विधायन है।

लावा सरदारगढ़,
जिला-राजसमन्व (राजस्थान)

खर्च

कमरे के अन्दर से आवाज़ें, हँसी के ठहाके साफ़ सुनाई दे रहे थे। आज घर में 3 लाख रुपये आये हैं। कार लेने की योजना बन रही है। कल्पना के कई जहाज उड़ाये जा चुके हैं। बच्चे भी बीच-बीच में कोई न कोई डिमांड रखकर अपनी हाजरी दर्ज करा रहे हैं। कोई जींस माँग रहा है तो कोई वीडियो गेम। सबकी बातों पर गौर भी किया जा रहा है। बाहर एक कोने में धूप के एक टुकड़े को तरसती, सिमटी सी अपने दिनों को धक्के देती माँ बैठी है। दो महीने से उसकी आँखें दुख रही हैं। डॉक्टर ने छोटे से ऑप्रेशन के लिये कहा है। साहस करके माँ ने बेटे को आवाज़ लगाई। कांधे पर तौलिया रखे, नहाने जाने का नाटक करते वह बाहर आया व बोला, “बोलो, क्या कह रही हो? जल्दी बोलो, समय नहीं है।” “बेटा, मेरी आँखों का ऑप्रेशन करा दो, बहुत धूंधला दिखने लगा है। आँख से जहान है।” “माँ, मुझसे तो घर का खर्च पूरा नहीं होता, ज़माना देखो। अगले महीने रोटी वाले मुफ्त ऑप्रेशन करा रहे हैं, करा लेना। आपने कौन सा स्कूल, कॉलेज पढ़ने जाना है।”

■ शबनम शर्मा
नवाब गली, नाहन, जिला-सिरमोर (हि.प्र.)

वारेन बफेट का आदर्श जीवन

• मुरली कांठेड़ •

विश्व के दूसरे सबसे धनी व्यक्ति 79 वर्षीय वारेन एडवर्ड बफेट का पिछले माह अपने जन्मदिन 30 अगस्त को एक टी.वी. चैनल पर साक्षात्कार प्रसारित हुआ। इस साक्षात्कार में उन्होंने उन बिन्दुओं पर प्रकाश डाला जो उनकी सफलता में सहायक बने। उनके जीवन के उन पहलुओं को सुनने से रोमांचित हुए बिना नहीं रहा जा सकता। साथ ही साथ उनके जीवन मूल्य व आदर्श अनुकरणीय भी हैं। बफेट ने इस साक्षात्कार में कहा कि जब वे 11 वर्ष के थे तो पहला शेयर खरीदा इसका भी उन्हें अफसोस था कि उन्होंने इसमें देरी कर दी क्योंकि उस समय चीजें बहुत सस्ती थीं। उनका कहना था कि आप भी अपने बच्चों को निवेश के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

चौदह वर्ष की आयु में बफेट ने एक छोटा फॉर्म हाउस खरीदा उन रूपयों से जिनकों उन्होंने अखबार बांटकर बचाये थे। उनका मानना है कि छोटी-छोटी बचत से भी बहुत सी चीजें खरीदी जा सकती हैं। अतः अपने बच्चों को व्यवसाय प्रारम्भ करने एवं बचत करने हेतु प्रोत्साहित कीजिए।

वे अभी भी उसी छोटे मकान में रहते हैं जो ओमाहा के मध्य स्थित है जिसमें 3 शयनकक्ष हैं तथा जिसको उन्होंने अपने विवाह के 50 वर्ष पश्चात् खरीदा था। वे कहते हैं उस मकान में वह सब कुछ है जिसकी उन्हें आवश्यकता है। उस मकान में चारदिवारी व बाड़ भी नहीं है। उनका मानना है कि अपनी आवश्यकता से

अधिक संग्रह मत कीजिए। यही शिक्षा अपने बच्चों को भी दीजिए।

वे अपनी कार स्वयं चलाते हैं, न उनके पास कार चालक है, न ही कोई सुरक्षाकर्मी। जैसे वे हैं वैसे ही रहना पसंद करते हैं। वे कभी निजी विमान से यात्रा नहीं करते हैं, जबकि वे दुनिया की सबसे बड़ी निजी विमान कम्पनी के मालिक हैं तथा उनका वेतन एक लाख अमेरिकी डॉलर प्रतिमाह है। उनकी कुल संपत्ति 62 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। वे दुनिया के सफलतम निवेशकों में सुमार होते हैं। हमेशा सोचिए कि मितव्ययता से हमारा कार्य कैसे चल सकता है।

उनकी कंपनी बर्कशायर हाथवे की 63 सहायक कंपनियां हैं। वे वर्ष में एक बार उन कंपनियों के मुख्य निष्पादन अधिकारियों को पत्र लिखते हैं, जिसमें उनके लक्ष्य निर्धारित होते हैं। वे कभी उनके साथ नियमित मीटिंग नहीं करते हैं तथा न ही उनको बार-बार बुलाते हैं। उनका मानना है कि उपयुक्त कार्य के लिए उपयुक्त व्यक्ति का चयन कीजिए।

वे कभी उच्च वर्ग की भीड़ भरी पार्टियों में सम्मिलित नहीं होते हैं। घर पहुँचने पर पोप कॉर्न खाकर व टी.वी. देखकर अपना समय गुजारते हैं। वे दिखावे में विश्वास नहीं करते हैं, वही करते हैं जो उन्हें पसंद है। न उनके पास मोबाइल फोन है, न ही उनकी टेबल पर कम्प्यूटर।

विश्व के नंबर वन धनपति बिलगेट्स पांच वर्ष पूर्व उनसे मिले। गेट्स ने यह नहीं सोचा कि उनके बीच कोई ज्यादा समानता है अतः



उनकी मुलाकात का समय आधा घंटा ही निर्धारित था, लेकिन गेट्स जब उनसे मिले तो उनकी मुलाकात 10 घंटे चली और गेट्स उनके भक्त बन गये। उनकी युवाओं के लिए सलाह है कि क्रेडिट कॉर्ड्रेस व बैंक लोन से दूर रहें, स्वयं निवेश कीजिए और याद रखें

- श्वेत मनुष्य को नहीं बनाता पर मनुष्य धन को कमाता है।

- श्रृंगैसे आप हैं वैसा ही साधारण जीवन जीएं।

- दूसरे कहते हैं, वैसा मत कीजिए, सुनिए सब की कीजिए अपने मन की।

- ब्रान्डेड कपड़ों का शौक मत पालिए, वही पहनिए जिसमें आप आराम से रहते हैं।

- श्रावालतू वस्तुओं में धन की बर्बादी न करें। उन पर खर्च करें जिनको इसकी आवश्यकता है।

- आखिर यह जीवन आपका है, उस पर शासन करने का अधिकार आप दूसरों को क्यों दें।

- सुखी व्यक्ति वही है जो अपना रास्ता खुद बनाता है, जो मिला उसी में संतोष करता है।

मै. केयर एंड क्योर इंटरनेशनल
ए-56/ए, (एफ. एफ.)
लाजपत नगर-2, दिल्ली - 110024

ચુનીલ ગજજાણી કી કવિતાએં

(1)

સપેરા, મદારી ખેલ નટ-નટની કા,
બતલાઓ જરા કહ્યાઁ આતા હૈ નજર ?
ખેલ બચ્ચોંની સિમટા કમરોં મેં અબ,
બલપન કો લગી કેસી યે નજર ।

વैદિક જ્ઞાન, પાટી તર્ખીની, ગુરુ શિષ્ય અબ,
કિસ્સોં મેં જાને સિમટ ગાએ ઇસ કદર,
નૈતિકતા, સદાચાર અબ બસતે ધોરો મેં,
ફેમ મેં ટંગા બસ આદમી આતા હૈ નજર ।

ચાહ કંગરે કી પહલે હોતી અબ ક્યું,
ધૈર્ય, નીંવ કા કદ બઢને તક હો જરા,
બચ્ચા નાબાલિગ નહીં રહા ઇસ યુગ મેં,
બાલ કથાએં અબ સુનતા નહીં આતા નજર ।

અપને હી વિરુદ્ધ ખડે કિએ જા રહા,
પ્રશ્ન પે પ્રશ્ન નિરંતર જાને મેં ક્યોં,
સોચ કર મુસ્કુરા દેતી ઉસકી ઓર,
સચ્ચ, મેરે લિએ પ્યાર ઉસમેં આતા હૈ નજર ।

દિન બહુત ગુજરે શહર સૂના સા લગે
ચલો ફિર કોઈ દફન મુદ્દા ઉઠાયા જાએ,
તરસતે દો વક્ત રોટી કો વે અક્સર
સેકતે રોટીયાં ઉનપે કુર્સિયા રોજ આતી હૈ નજર ।

(2)

કિસ નયન તુમકો નિહારું,
કિસ કણ્ઠ તુમકો પુકારું,
રોમ-રોમ મેં તુમ્હીં હો મેરે,
ફિર કાહે ના તુમ્હેં દુલારું,
મિત્ર ! તુમ્હેં મેરે મન કી બાત બતાऊં ।

પ્રતિવિષ્ટ મૈં યા કાયા તુમ,
દોનોં મેં અન્તર જાનું,
હાઁ, હો કુછ પંચતત્વોંને પરે જગ મેં,
ફિર મૈં ધરા તુમ્હેં માટી ક્યોં ન બતલાઉં,
સુનો ! તુમ તિલક મૈં લલાટ બન જાऊં,
મિત્ર ! તુમ્હેં મેરે મન કી બાત બતાऊં ।

વૈર-ભાવ, રાગ દ્વેષ કરું મૈં કિસસે,
મુજ્જ મેં જીવ તુજ્જ મેં ભી હૈ આત્મા બસી,
પોખર પોખર સા ક્યોં તૂ જીએ રે જીવન,

જલ પાની, જાત-પાત મેં મૈં ભેદ ના જાનું,
હો ચેતન, તુજ્જે હિમાલય, સાગર કા અર્થ
સમજાઊં,
મિત્ર ! તુમ્હેં મેરે મન કી બાત બતાऊં ।

વિલય કૌન કિસમેં હો યે ના જાનું,
મેરી ભાવના તુજ્જ મેં હો યે મૈં માનું,
બજાતી મધુર બંશી પવન કાનોં મેં હમારે,
શાન્ત હમ, હો ફેલી હર ઓર શાન્તિ ચાહું,
મિત્ર ! તુમ્હેં મેરે મન કી બાત બતાऊં ।

(3)

જાને કૌન-સા ફલસફા ઢૂંઢતી
મેરે ચેહરે મેં વો નજરે
જાને કૌન-સી રૂબાઈ પઢતી
મેરે તન પે વો નજરે
જાને ક્યું મુજ્જે રૂમાની ગજલ સમજાતે વો
શાયદ મેરે ઔરત હોને કે કારણ
જાને કૌન-સા નજરે ।

નુક્તા ઔર મિસરા દોનોં મેરી આંખેં શાયદ
લબ બહર તથ કરતે જુલ્ફે
અલફાજોં કો ઢાલતી
ચેહારા એક શેર બનતા શાયદ
મેરે જન્માત ઉન નજરોં સે મીલોં દૂર
પલકે બેજાન-સી હો જાતી મેરી
નજરે બાંધ દેતી જર્માં કો મેરી
વો મૈલી આંખેં દેખ
જાને કૌનસા નજરે ।

મૈં આકાશ કો છૂને નિકલી થી
મગર ઘરાંદે તક હી સિમટ ગઈ
એક લક્ષ્મણ રેખા સી ખિંચ ગઈ
ઠિંક ગાએ કદમ વો મૈલી નજરે દેખ
કિસે દોષ દૂં
કિસે દોષ દૂં મૈં ઔરત કા હોના
કૈસે ના દોષ દૂં, ઔરત કા ના હોના
પલ પલ મરતી મૈં
કભી કાયા કે ભીતર
કભી કાયા લિએ
મરતી કભી તન સે
કભી મન સે
ખિરતે સપને

ગિરતે રિશ્ટે
જાને કૌન-સા અદબ લિએ
જાને કૌન-સા વો નજરે ।

(4)

ઝૂમતા, ગાતા, નાચતા વો બૂડા
લોગો કી પરવાહ કિએ બિના
જનતા ઘૂર-ઘૂર દેખતી ઉસે
પગલા ગયા, મતિ મારી ગઈ
ગલી મોહલ્લે વાલે ઉસે
બે-પરવાહ મસ્ત અપની હી ધુન મેં
સડકોં પે ભરે પાની મેં
કાગજ કી નાવ ચલાતા
ભરે ખડ્ડોં મેં
ઉછલ-કૂદ, અઠખેલિયા કરતા
માનો, બચપના લે આયી ઉસકા
એક લમ્બી બારિશ

(5)

કચરે કી ઢેરી પે,
માનો સિંહાસન પે હો બૈઠા,
જાને કિસ ઉધેડ-બુન મેં,
અપને ગાલોં પે હાથ ધરે,
કચરે મેં પડે એક આઇને મેં,
અક્સ દેખતા અપના,
નિહારતા અપને કો,
એક ભિખારી ।

(6)

સભ્ય કોલોની કે ઘરોં કા,
નાકારા સામાન,
કૂડા કરકટ
કચરા પાત્ર મેં
કોલોની કે બીચોબીચ ભરા પડા
બીનતા ઢૂંઢતા,
જાને ક્યા
ઉસ ઢેર મેં
વો ભિખારી ।

સુધારોં કી બડી ગુવાડ,
બીકાનેર (રાજસ્થાન)

बधाई

• डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी •

रौनक कक्षा आठवीं का छात्र था। कक्षा सात में उसने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। इस परिणाम से वह बहुत खुश था। रौनक के पिता बैंक में चपरासी थे। उनका नाम था राम प्रसाद। राम प्रसाद को अपने बेटे पर गर्व था। गर्व भी क्यों न हो? बेटे ने अबल स्थान जो प्राप्त किया था। राम प्रसाद का भरा पूरा परिवार था। उसकी तीन बेटियां और एक बेटा था। बूढ़े माँ-बाप भी थे। छोटी-सी नौकरी में किसी तरह वह अपने परिवार को चला रहा था।

रौनक के स्कूल का प्रथम दिन था। वह खुश हो रहा था कि उसने सातवीं कक्षा में टॉप किया है। उसके अध्यापक अब उसे पूरा लाड-प्यार देंगे। हैड मास्टर साहब प्रार्थना के बाद की अपने भाषण में उसकी जमकर तारीफ करेंगे। उसके साथी उसका सम्मान करेंगे। उससे टॉप करने के नुस्खे जानना चाहेंगे। स्कूल का चपरासी रामदीन भी कहेगा, “भैया! मिठाई कब खिलाओगे?” यह सब सोचकर वह खुश हो रहा था। सुबह उठकर पहले दिन की कक्षा के लिए वह तैयार हो गया था। माँ ने टिफिन देते हुए कहा, “इसे समय से खा लेना।”

“हाँ-हाँ, खाना खाना भूलना नहीं। ऐसा नहीं कि लोगों के बधाई के आगे टिफिन खोलो ही न।” पिता रामप्रसाद ने उसे समझाते हुए कहा।

बस्ता और टिफिन लटकाये रौनक स्कूल की ओर चल दिया। रास्ते में उसका दोस्त रवि मिला। दोनों ने एक दूसरे को नमस्कार किया। रौनक सोच रहा था कि रवि उसे बधाई देगा। किन्तु रवि बधाई देने के अतिरिक्त सारी बातें कर रहा था। गर्मी की छुट्टी कैसे बीती? कहीं घूमने गये थे? मैं तो आगरा घूमने गया था। शायद तुम घर पर ही पूरी छुट्टी बिताए। हाँ, तुम्हारे पापा को समय ही कहाँ?

वे बिचारे फाइल इधर से उधर करने में व्यस्त रहते हैं। उन्हें बैंक में बहुत काम रहता है। मेरे पापा तो आराम से कुर्सी पर बैठे रहते हैं। एक दूसरे को काम का आदेश देते रहते हैं। एक दिन मेरे पापा मोबाइल घर भूल गये। मम्मी ने मुझे बैंक भेज दिया मोबाइल लेकर वहाँ मैंने देखा तुम्हारे पापा को। उन्हें तो कोई बैठने देता ही नहीं था। एक मेज से दूसरे मेज की चक्कर काट रहे थे। एक बाबू तो समय पर पानी न पिलाने पर बिचारे को खरी-खोटी सुना रहा था।

रौनक की उम्मीद पर पानी फिर गया। स्कूल पहुँच गया किन्तु रवि ने बधाई नहीं दी। अंत में रौनक ने यह सोचकर संतोष किया कि शायद इसे पता नहीं है। स्कूल पहुँचते ही सभी बच्चे एक-दूसरे से हाथ मिला रहे थे। कोई-कोई एक-दूसरे के गले भी मिल रहे थे। रौनक को यहाँ भी उम्मीद थी कि लोग उसे बधाई देंगे। बातों से उसका सम्मान करेंगे। किन्तु न ही किसी ने उसे बधाई दी, न ही किसी ने हाथ मिलाया। तभी राखी उसकी ओर आई। रौनक को लगा कि राखी उसे बधाई देगी। क्योंकि वह उसी की ओर आ रही थी। उसे देख रौनक हंस पड़ा। “तुम मुझे देखकर क्यों हंस रहे थे?” आते ही राखी उबल पड़ी।

रौनक को लगा कि इन्हें शायद पता नहीं है कि मैंने स्कूल टॉप किया है। अतः इनसे बधाई की आशा वह क्यों कर रहा है। वह आगे निकल गया।

रौनक को कथा अध्यापक से बहुत उम्मीद थी। कोई बधाई दे या न दे किन्तु वे अवश्य देंगे, यह सोचकर वह घर से चला था। किन्तु वे भी बिना बधाई दिये चले गये। प्रार्थना की घंटी बज गयी। सभी को नये सत्र की पहली प्रार्थना का इंतजार था। प्रार्थना के बाद हैडमास्टर साहब का भाषण शुरू हुआ, “तुम सभी

का विद्यालय के प्रथम दिवस पर हार्दिक स्वागत। यह स्वागत इसलिए कि तम्हे समय के बाद स्कूल आये हो। नया सत्र शांति से सम्पन्न हो, इसलिए भी स्वागत है। रौनक को लगा कि अब हैडमास्टर साहब मेरा नाम लेंगे और स्वयं बधाई देंगे तथा इस हेतु दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

“किन्तु यह क्या? हैडमास्टर साहब ने तो दूसरी बात शुरू कर दी। बधाई तो दी नहीं वह सोच में निमग्न हो गया। तभी रौनक को अपना नाम सुनाई पड़ा। उसे लगा कि बस अब उसे बधाई मिलने वाली है। किन्तु यह क्या हैड मास्टर ने पूछा कि रौनक तुम्हारी फीस जमा नहीं हुई है। फीस लाये हो?

“नहीं सर”, यह कहकर रौनक बहुत दुःखी हुआ।

तभी हैड मास्टर ने आदेश दिया कि जो फीस नहीं लाये हैं वे मेरे दार्यों तरफ लाइन में खड़े हो जाएं। थोड़ी ही देर में एक चौथाई विद्यार्थी लाइन में खड़े हो गये। फिर हैडमास्टर ने आदेश दिया कि फीस जमा न करने वाले छात्र घर जाकर अपनी फीस ले आएं अन्यथा कक्षा में प्रवेश नहीं होगा।

रौनक को काटो तो खून नहीं। क्या सोचकर वह घर से चला था कि लोग उसे बधाई देंगे। उसका सम्मान करेंगे। किन्तु यहाँ तो सब उल्टा हो गया। यह कैसा स्कूल है? लोग बधाई शब्द से परिचित नहीं हैं। फीस के लिए स्कूल से लौटते हुए वह रो पड़ा। रास्ते में उसे पुराने स्कूल के हैडमास्टर मिले। उन्होंने झुककर उसे गले लगाया और बोले, “बेटे, बधाई हो। सुना है कि तुमने केवल अपनी कक्षा ही नहीं स्कूल टॉप किया है। मुझे विश्वास था कि तुम अबल बनोगे। किन्तु बेटे रो क्यों रहे हो? और वापिस क्यों जा रहे हो?”

रौनक ने आपबीती सुनाई। हैडमास्टर ने उसकी पीठ थपथपाकर हौसला बढ़ाया। पुराने हैडमास्टर से बधाई प्राप्त कर वह बहुत प्रसन्न हुआ। घर लौटते हुए वह खुश हो रहा था कि पुनः अपने पुराने स्कूल में प्रवेश लेगा।

उपनिदेशक: दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्व भारती लाडनूं (राजस्थान)

कमज़ोर समझने की भूल : मेहर

• रजनीकांत शुक्ल •

देश की राजधानी दिल्ली का बसंत कुंज क्षेत्र अभिजात्य श्रेणी के लोगों की रिहाइश का इलाका माना जाता है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय आई.आई.टी., एन.सी.ई.आर.टी. जैसे राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित शिक्षा संस्थान इसके आसपास ही हैं। अभी भी यहां उस तरह की घनी बसावट नहीं हो पाई जैसी कि जमुनापार शाहदरा या पुरानी दिल्ली के इलाकों में है।

इसी बसंतकुंज इलाके के डी-ब्लॉक में कर्नल अमनप्रीत सिंह रहते थे। उनकी पत्नी सेंट लोरेटो स्कूल में अध्यापिका थी और घर में एक बेटी और एक बेटा। एक आदर्श परिपूर्ण परिवार। रिटायरमेंट के पश्चात कर्नल अमनप्रीत सिंह ने एच.सी.एल. कंपनी नोएडा में मुख्य सुरक्षा अधिकारी के पद पर कार्यभार संभाल लिया। उनके जैसे लगनशील व ईमानदार व्यक्ति को काम की कमी नहीं थी। अभी दो माह ही हुए थे उन्हें एच.सी.एल. में कामकाज संभाले। उनकी पत्नी स्कूल में चली जाती और वे नोएडा। घर में रहता अकेला छोटा बेटा करणवीर और उनकी सास सुरजीत कौर। बेटी मेहर मां के साथ ही स्कूल चली जाती। अभी वह कक्षा नौ की ही छात्रा थी।

बसंत कुंज इलाके में ज्यादा लोग तो अभी नहीं बसे थे लेकिन जो भी लोग थे वे अधिकतर नौकरीपेशा लोग। यूं तो कॉलोनी से पुलिस थाना बहुत ज्यादा दूर नहीं था लेकिन फिर भी वहां के निवासियों ने सुरक्षा के दृष्टिकोण से कॉलोनी में अपने इंतजाम कर रखे थे। कॉलोनी की सुरक्षा के लिए चारों ओर सुरक्षा दीवार व विभिन्न मुख्य द्वारों पर सुरक्षा गार्डों की तैनाती कर कॉलोनीवासी आराम के साथ रहने लगे। घरों में कामकाज में हाथ बंटाने के लिए घरेलू नौकर, काम वाली बाईयां भी आने लगी। लोग निश्चिंत होकर समय बिता रहे थे कि तभी एक घटना घट गई।

यह दो मार्च 2007 की एक दोपहर थी। दिन के लगभग बारह-साढ़े-बारह बजे का समय था। खुशगवार मौसम था। पढ़ने-लिखने वाले बच्चे सभी वार्षिक परीक्षाओं की तैयारियों व परीक्षाओं में व्यस्त थे। पब्लिक स्कूल और सरकारी स्कूल सभी के बच्चे परीक्षा देने के बाद घर की ओर तेजी से बढ़े जा रहे थे। मेहर भी उनमें से एक थी। उसकी उम्र अभी चौदह वर्ष दो माह की हुई थी और वह इस समय कक्षा नौ की छात्रा थी। उसका आज का पेपर काफी अच्छा हुआ था इसलिए वह बहुत खुश थी और जल्दी से जल्दी घर पहुंचना चाहती थी।

स्कूल की बस तेजी से घर की ओर भागी चली जा रही थी और उससे भी ज्यादा तेजी से भाग रहे थे मेहर के मन में विचार। घर पर उसका छोटा भाई करणवीर व नानी सुरजीत कौर थे। इसके अलावा घर में एक नौकर भी था जिसका नाम तो मिथ्लेश था, लेकिन सब उसे छोटू कहकर बुलाते थे। घर में वह काफी दिनों से नौकर था। मेहर के पापा ने घर के कामकाज के लिए उसे रख छोड़ा था। बेटा करणवीर छोटा था घर में पढ़ने-लिखने वाली लड़की थी, सो उन्हें घरेलू कामकाज की सुविधा के लिए एक ऐसे ही लड़के की तलाश थी। किसी परिचित ने उन्हें बताया तो उन्होंने दिया करके उसे अपने यहां रख लिया। वे उसका काफी खाल रखते थे और किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं होने देते थे।

बस से उतरकर मेहर कॉलोनी के गेट में घुसी। उसके साथ उसके स्कूल से आने वाले कई बच्चे भी थे। उनसे हैलो हाय, बाय, बाय के बाद वह अपने घर की ओर बढ़ी। कॉलोनी के गेट पर चुस्त-दुरुस्त गार्ड ने बच्चों का मुस्कराते हुए स्वागत किया था। घर से दूर परदेश में नौकरी करते हुए इन मुस्कराते फूल जैसे बच्चों में ही वह अपने बच्चों की छवि देख लेता था।

मेहर आगे बढ़ी तो फ्लैट के बगल में रहने वाली आंटी गुड़ी ने मुस्कराते हुए पूछा आ गई बिटिया। हाँ, आंटी कहती हुई मेहर ने आगे बढ़कर अपने फ्लैट का दरवाजा खटखटा दिया। अंदर से कोई आवाज नहीं आई तो मेहर ने सोचा भैया करण शायद टी.वी. देख रहा होगा। अभी बताती हूं बच्चू को। पढ़ने-लिखने का नाम नहीं सारा दिन टी.वी., नानी भी बैठ जाती है साथ में। मेहर ने दोबारा घंटी बजाई। जब अंदर से इस बार भी कोई आवाज नहीं आई तो मेहर ने झुँझलाकर एक बार फिर घंटी बजा दी। वह सोच रही थी कि अगर करण और नानी अंदर वाले कमरे में टी.वी. देख रहे हैं तो छोटू कहां गया? उसने सोचा शायद नानी ने उसे किसी काम से कहीं भेजा होगा यह विचार करते हुए वह एक बार फिर कॉलबेल बजाने जा रही थी कि तभी ‘फटाक’ से दरवाजा खुला।

उसने देखा दरवाजा खोलने वाला छोटू था। उसके चेहरे पर हवाइया उड़ रही थीं। मगर थकी-हारी मेहर ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। सीधे अपने वाले कमरे की ओर गयी अपना बैग उसकी जगह पर रखते हुए उसका ध्यान अंदर वाले कमरे की ओर गया, तो उसे उसमें कोई हलचल नहीं सुनाई दी। पापा-मम्मी के घर पर न होने के कारण उसका करण से गपशप करने का मन कर रहा था। उसने छोटू से जूते-मोजे उतारते हुए पूछा भैया और नानी कहां हैं?

गुरुद्वारे गए हैं छोटू ने नजरें चुराते हुए संक्षिप्त सा जवाब दिया। मेहर को पता था कि नानी अकसर करण को लेकर गुरुद्वारे चली जाती थीं। सोचा आज भी गयी होंगी। उसने छोटू से यह अवश्य पूछा कितनी देर पहले गई हैं? छोटू बोला देर हो गई है, आती ही होंगी। मेहर ने सोचा भैया और नानी के

आने पर ही खाना खाऊंगी। मन मार कर वह टी.वी. का रिमोट पकड़ कर बैठ गई। इधर-उधर चैनल बुमाने पर कहीं उसका मन नहीं लग रहा था। घर में चारों ओर अजीब-सी निस्तब्धता छाई हुई थी। इससे पहले उसे अपना घर कभी इतना बेगाना-सा नहीं लगा था। छोटू के रहने का स्थान घर में एकदम अलग-सा था। जब उसे किसी काम के लिए बुलाया जाता था तभी वह मुख्य कमरों की तरफ आता था मगर मेहर ने देखा कि आज वह उसके कमरे की तरफ कुछ ज्यादा ही चक्कर लगा रहा था।

जब नानी और करण के आने में देरी होने लगी तो मेहर ने छोटू को आवाज दी। वह एकदम से सामने आ गया। मेहर ने पूछा नानी और भैया अब तक नहीं आए। तो मैं क्या करूँ? छोटू ने बड़ा रुखा सा जवाब दिया। मेहर ने हैरानी से उसके चेहरे की ओर देखते हुए पूछा छोटू भैया! ये तुम बोल कैसे रहे हो? मैं ऐसे ही बोलूँगा, तुमसे मतलब छोटू ने उससे आँखें मिलाते हुए कहा। छोटू की मुखमुद्रा में आए इस अप्रत्याशित परिवर्तन को देखकर एक बारगी तो मेहर डर गई, लेकिन उसने कड़कते हुए कहा मैं पूछती हूँ नानी और भैया कहां हैं? बताओ जवाब दो? मार डाला मैंने उन्हें और अब तुम्हारा नम्बर है यह कहते हुए छोटू ने मेहर को जोर का धक्का दे दिया।

मेहर यह सुनकर और अचानक हुए इस हमले से भौंचकी रह गई। उसने अपने आपको संभाला और बचाव के लिए गरदन पीछे की ओर की। छोटू पूरी ताकत लगाकर उसे काबू में करने की कोशिश कर रहा था। वहीं मेहर अपने बचाव के लिए हाथ-पांव मार रही थी। फौजी अधिकारी की बेटी होने के कारण बहादुरी उसके खून में थी और वह इतनी आसानी से हार मानने को तैयार नहीं थी। अचानक जगा-सा मौका मिलने पर मेहर ने लात मारकर छोटू को अपने से दूर हटाया।

दूर हटते ही छोटू ने इधर-उधर नजर दौड़ाई और दौड़कर वहीं पास में पड़ा एक बिजली का तार हाथों में ले लिया। वह साथ ही साथ बड़बड़ाता भी जा रहा था

“मैं सोच रहा था देर में आएगी, अब आ गई है तो मर अपने भाई और नानी की तरह। यह कहते-कहते छोटू ने तार का फंदा बनाते हुए मेहर के गले की ओर उछाला। मेहर ने अपने आपको बचाते हुए सिर पीछे किया लेकिन फिर भी बचते-बचाते उसका हाथ तार के फंदे में आ ही गया। छोटू ने उसे आगे की ओर खींचा। मेहर ने पूरी ताकत लगाते हुए अपने सिर की टक्कर छोटू के सीने में मारी। छोटू लड़खड़ाया लेकिन अपनी ही झोंक में बढ़ते हुए मेहर अपने शरीर के संतुलन को न संभाल सकी और गिर गई। छोटू झपट कर उठता हुआ बोला अब मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा। यह कहकर उसने तार का फंदा मेहर के गले में डाल दिया। गले पर तार का कसाव बढ़ते ही मेहर को लगा कि वह इस बार अगर न बच पायी तो उसकी मौत निश्चित है।

यह सोच कर अंतिम प्रयास कर उसने दबे-दबे छोटू के शरीर के उस हिस्से में जोर से काट लिया जो उसके मुंह के सामने आया। बड़ी जोर से बिलबिलाते हुए छोटू पलटा तो मेहर को मौका मिल गया वह जान छुड़ाकर तेजी से बाहर की ओर भागी।

दरवाजे से बाहर निकलते देख छोटू भी मेहर के पीछे दौड़ा लेकिन बाहर निकलते ही वह ठिठक गया, क्योंकि फ्लैट से निकलते ही नीचे प्रेस वाली आंटी रानी वहां थी। मेहर को इस तरह बदहवासी में बाहर की ओर भागते हुए देखकर उसके पास ही पहुंच गई। पीछे-पीछे छोटू भी दौड़ता हुआ घर से बाहर निकला। वह उन्हें देखकर कॉलोनी के गेट की तरफ भागा। इसी बीच शोर सुनकर कई और पड़ोसी भी बाहर निकल आए। छोटू को इस तरह भागते देख वे भांप गये कि जरूर कोई गड़बड़ है। वे सभी जोर से ‘पकड़ो’-‘पकड़ो’ कहकर चिल्लाए और छोटू के पीछे दौड़े।

यह देखकर दरवान ने फटाक से दरवाजा बंद कर दिया और छोटू के रास्ते में खड़ा हो गया। इसी बीच लोगों ने उसे पकड़ लिया और मेहर के पास लाए। मेहर ने जब सारा किस्सा बताया तो लोगों ने तुरंत फोन

कर पुलिस को बुला लिया। मेहर के पापा-मम्मी को भी खबर कर दी गयी।

पुलिस के आगे छोटू ने अपनी सारी करतूत बयान कर दी। पुलिस ने छोटू को साथ ले जाकर घर के अंदर ट्रंक में मेहर की नानी और भैया करण के मृत शरीर बरामद किए। साथ ही कीमती सामान और जेवर व पैसों से भरा बैग भी बरामद किया जिसे लेकर वह भाग जाना चाहता था। मगर उस दिन परीक्षा के कारण मेहर के स्कूल की छुट्टी थोड़ा पहले हो गयी। जिसके कारण मेहर जल्दी घर पहुंच गयी। इस कारण वह बैग को नहीं ले जा सका। लेकिन मेहर के बार-बार पूछने और उसे नहीं कमजोर बच्ची जानकर उसने हमला कर दिया। दो हत्याएं वह पहले ही कर चुका था उस पर खून सवार था। मगर यह उसकी भूल सवित हुई। मेहर ने उसका डटकर मुकाबला किया और न केवल अपनी जान बचाई, बल्कि उसे पुलिस के हाथों पकड़वाने में भी मदद की।

जब यह सूचना लोगों को मिली तो मेहर की बहादुरी की चर्चा सबके सामने आयी। जिस साहस और हौसले से मेहर ने हत्यारे का मुकाबला किया, उसकी सभी ने जमकर तारीफ की। उसकी बहादुरी की दास्तान जब अखबारों और अन्य माध्यमों से भारतीय बाल कल्याण परिषद् नई दिल्ली पहुंची तो उच्च स्तरीय कमेटी के जरिए उसका नाम राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया।

अपने काम के प्रति लगान और समर्पण मेहर के व्यक्तित्व का विशेष गुण है। दिल्ली में जब राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार प्राप्त बच्चों का परिचय कराने के लिए प्रेस कॉनफ्रेन्स हुई उसी दिन मेहर की स्कूल परीक्षा थी। बिलकुल ऐन मौके पर जब परिचय शुरू हो गया तब मेहर परीक्षा देकर पहुंची। मेहर बहुत ही अनुशासनप्रिय हैं। उसे अपने भाई और नानी की बहुत याद आती है। मेहर का कहना है

मेहनत कर लो आगे बढ़ लो कभी न मानो हार जितना ज्यादा बाँट सको तुम बांटो अपना प्यार यही सूत्र है जिससे तुम शिखरों पर चढ़ सकते हो, कितनी भी हो कठिन राह उस पर भी बढ़ सकते हो।

एफ-380-एफ, सेक्टर-12,
विजयनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)



बढ़ें संयम पथ पर



लोकमान्य गोल्छा

अध्यक्ष

गोल्छा ऑर्गनाइजेशन

एवं

समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडौ (नेपाल)

फोन नं. : 4250001/4249939 (D)

फैक्स : 00977-1-4249723

जैविभा में मंगल भावना समारोह

अतुल्य है लाडनूं की धरा : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 17 नवम्बर। अपुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने मंगल भावना समारोह के अवसर पर सरदारशहर चतुर्मास के पश्चात सन् 2011 का चातुर्मास लाडनूं में करने की घोषणा की। इस घोषणा के साथ ही जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित जन समुदाय ने खड़े होकर ओम अर्हम की हर्ष ध्वनि के साथ अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

आचार्य महाप्रज्ञ ने उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा सामाजिक जीवन में मूल्यांकन होना आवश्यक है। उन्होंने लाडनूं को ब्रेष्ट क्षेत्र बताते हुए कहा कि धर्मसंघ में सेवा का बहुत महत्व है। जयाचार्य ने एक व्यवस्था की वृद्धि सेवा केन्द्र की। जिसके अंतर्गत सर्वप्रथम लाडनूं सेवा केन्द्र बना। मर्यादा महोत्सव के समय में भी लाडनूं सेवाकेन्द्र की घोषणा सबसे पहले होती है।

साध्यियों और समणियों की वृद्धि होती है तो वह पारमार्थिक शिक्षण संस्था से ही होती है। वर्तमान में लगभग 680 साध्यियां सेवा कर रही हैं। लाडनूं इस रूप से अतुल्य है। आज समणियां देश-विदेश में बहुत काम कर रही हैं, विदेशों में मियामी विश्वविद्यालय में बिना किसी वेतन के समणियां पढ़ा रही हैं। वहां सबको आश्चर्य होता है, समण श्रेणी का मुख्य केन्द्र लाडनूं ही है। जैन विद्या की पहली संस्था जैन विश्व भारती है। जैनों का पहला विश्वविद्यालय का गौरव भी लाडनूं को ही प्राप्त है। यहां के ग्रन्थागार में अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। यहां जो कार्य छह महीनों में हुआ वह दो साल जितना है, इस यथार्थ को समझना आवश्यक है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा लाडनूं

की व्यवस्था सब दृष्टियों से अच्छी रही।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती की व्यवस्थाएं, श्रावक समाज की श्रद्धा भावना एवं सेवार्थियों की सुचारू आवास व्यवस्था को मध्यनजर रखते हुए वर्ष 2011 का चातुर्मास लाडनूं करने की घोषणा की। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि और जगह चातुर्मास करने से पूर्व वहां चातुर्मास हेतु पूर्व तैयारियों में लंबा समय लगता है लेकिन लाडनूं में जैन विश्व भारती में यह व्यवस्थाएं सदैव बनी रहती हैं। अभी वर्तमान में चातुर्मास करने के पश्चात 2011 के चातुर्मास में यहां कार्यकर्ताओं को विश्राम मिलेगा जिसके पश्चात 2011 चातुर्मास पुनः लाडनूं में आयोजित होगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य प्रवर ने प्रवास का मुख्य केन्द्र जैन विश्व भारती लाडनूं को चुना पूरा स्थिरवास मंजूर नहीं हो रहा है। जैन विश्व भारती में लगभग सात महीनों का प्रवास हुआ जिसमें दो वर्षों के समान कार्य हुआ है जैन विश्व भारती का प्रवास विशेष लगता है क्योंकि यहां की व्यवस्थाएं कार्य की दृष्टि से अनुकूल हैं। उम्र का एक पड़ाव ऐसा भी है जिसमें यात्रा संभव नहीं होती आचार्यप्रवर रिस्थिरवास करें, लेकिन साधु जीवन में यात्रा का अलग महत्व है। आचार्यवर की 90 वर्ष की आयु हो चुकी है लेकिन मन अब भी स्थिरवास का नहीं बना है, इसलिए लंबी यात्रा को छोड़कर छोटी यात्राएं जारी रहेगी।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि शब्द रूप से व्यक्ति लाभान्वित होता है ऐसा माना

जाता है कि पारस का स्पर्श पाकर लोहा भी सोना बन जाता है वैसे ही गुरुचरणों में रहकर यहां के लोगों का जीवन भी धन्य हुआ है। उन्होंने कहा कि लाडनूं में मानव निर्माण के क्षेत्र में जो कार्य वर्तमान में हो रहा है उसे और अधिक गति देने एवं उस क्षेत्र में विकास की दृष्टि से गुरुकृपा लंबे समय तक मिले तो यह सरलतम रूप से संभव हो सकता है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौराड़िया ने श्रावक समाज व जैन विश्व भारती की तरफ से मंगल भावना व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य प्रवर के लगभग साढे छह माह लाडनूं प्रवास के दौरान अनेक प्रवृत्तियों को बल मिला, अनेक शिविर आयोजित हुए, साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं जो आगे भी निरंतर बढ़ता रहेगा। आपके प्रवास में अनेक मंत्रियों संस्थाओं के पदाधिकारियों का यहां आना हुआ, जैन विश्व भारती और जैविभा विश्वविद्यालय की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं।

कमलसिंह बैद ने कहा कि सकल जैन समाज लाडनूं को कृतार्थ करने के पश्चात आचार्य महाप्रज्ञ का लाडनूं से विहार करना यहां के लोगों के लिए एक मार्मिक अनुभव रहेगा। सभी को पूज्यवर का पुनः सान्निध्य शोधने मिले ऐसी सभी की कामना रहेगी।

अपुव्रत समिति के महामंत्री डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने आगमन के क्षणों को याद करते हुए विहार के अनुभवों को प्रस्तुत किया।

प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष राकेश कठोलिया, मंत्री बच्छराज नाहटा रणजीतसिंह बैद, रणजीतसिंह कोठारी, प्रकाश बैद, राजेश बोहरा, प्रिया गुनेचा, स्थानीय थानाप्रभारी धर्मचीर जानु ने अपनी मंगल भावना व्यक्त की तथा स्थानीय महिला मण्डल, कन्या मण्डल ने गीत के द्वारा अपनी मंगल भावना व्यक्त की। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं को भी प्रतिक चिन्ह भेंट किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ का सुजानगढ़ में भव्य स्वागत



सुजानगढ़, 18 नवम्बर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का एक भव्य जुलूस के साथ मंगल प्रवेश हुआ। आचार्य महाप्रज्ञ की अगवानी करते हुए युवक परिषद के अध्यक्ष सुनील श्रीमाल, भूतपूर्व अध्यक्ष संदीप डोसी, पूर्व अध्यक्ष सुशील भूतोड़िया, वर्तमान उपाध्यक्ष धर्मचंद

बागरेचा, संजय बोधरा, महिला मण्डल, कन्या मण्डल सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने रैली में भाग लिया।

पूज्यवरों ने जुलूस के साथ सुजानगढ़ के गांधी चौक, रामपुरिया हवेली होते हुए स्थानीय सभा भवन में प्रवेश किया।

इससे पूर्व आचार्यप्रवर ने

जसवंतगढ़ के सुजला कॉलेज में पदार्पण किया जहाँ महाविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी के जीवन में पढाई के साथ अनुशासन का महत्व अवश्यक है। पढाई के साथ जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान

के प्रयोग भी आवश्यक है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भावों को निर्मल व एकाग्र बना सकता है जिससे डिप्रेशन जैसी समस्याओं से मुक्त रह सकता है। कार्यक्रम का संचालन उत्तम बागरेचा ने किया।

पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

आसीन्द। अणुव्रत समिति आसीन्द द्वारा साधी राकेशकुमारी के सान्निध्य में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता के विषय थे नशा नाश का द्वारा, सम्प्रदायिक सौहार्द, पानी बचाओ जीवन बचेगा, पर्यावरण सुरक्षा, भू-पृथ्वी महापाप, बाल विवाह है अभिशाप, छोटा परिवार - सुखी परिवार। इन सात विषय पर नगर के सभी

विद्यालयों से कुल 27 छात्र कलाकारों का चयन किया गया। उन कलाकारों ने अलग-अलग विषय पर पोस्टर बनाये। प्रतियोगिता में चिरंजीव सेन, अमृत भारती माध्यमिक विद्यालय प्रथम, लक्ष्मण सिंह चूण्डावत, संतपॉल माध्यमिक विद्यालय द्वितीय, हेम कंवर तंवर शिशु ज्ञान मंदिर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। उन्हें पुरस्कार प्रदान किया गये।

भवन की भव्यता के साथ दिव्यता आवृत्त्यक : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनू, 14 नवम्बर। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के स्टॉफ क्वार्टर्स भवन शिलान्यास समारोह का आयोजन युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में नवनिर्मित महिला छात्रावास के पास हुआ। युवाचार्य महाश्रमण ने मंगल पाठ सुनाते हुए कहा कोई भी भवन भव्यता के साथ दिव्यता से युक्त होना चाहिए। भवन का बाव्य सौंदर्य जहाँ उसे भव्य बनाता है वहीं ज्ञान और आचार के लिए उसका उपयोग उसे दिव्य बनाता है। अतः भवन भव्य के साथ-साथ दिव्य भी होना चाहिए।

भवन का शिलान्यास कलकत्ता के उद्योगपति, समाज सेवी भंवरलाल घोड़ावत के करकमलों से हुआ। विश्वविद्यालय के वित्तीय सलाहकार धनराज बैद ने जैन विधि से तथा स्थानीय पंडित ने सनातन विधि से शिलान्यास का कार्यक्रम सम्पन्न किया।

इस अवसर पर जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने कहा विश्वविद्यालय दिन-प्रतिदिन विकास की ओर अग्रसर है। विद्यार्थियों की संख्या की वृद्धि के साथ-साथ स्टॉफ के सदस्यों की वृद्धि स्वाभाविक है। अतः स्टॉफ के सदस्यों के आवास हेतु भवन की आवश्यकता की पूर्ति हेतु इस भवन का निर्माण होने जा रहा है। इस भवन के निर्माण में यू.जी.सी. के सहयोग के साथ-साथ समाज के उदारमन, महामना व्यक्तित्व का सहयोग भी अपेक्षित रहेगा।

कुलपति ने समाज के भामाशाह एवं महिला छात्रावास के निर्माण में महत्वपूर्ण सहयोग देने वाले भंवरलाल घोड़ावत की तारीफ की। इस अवसर पर डॉ. जे.पी. एन. मिश्रा, डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, ताराचंद रामपुरिया, राकेश कुमार

जैन, अमित राठौड़, शिक्षक, अधिकारी, कार्यकर्ता, विद्यार्थी, पूर्व नगर अध्यक्ष बच्चराज नाहटा,

भागचंद बरड़िया, रणजीत बैद, प्रकाश बैद, रतनलाल चोपड़ा इत्यादि उपस्थित थे।

अणुव्रत ग्राम बनाने की ओर अग्रसर है डाबडी

लाडनू, 11 नवंबर। निकटवर्ती ग्राम डाबडी में अणुव्रत समिति के तत्वावधान में अणुव्रत सिलाई केन्द्र का उद्घाटन स्थानीय विद्यालय प्रांगण में किया गया। ठाकुर संग्राम सिंह ने अध्यक्षता करते हुए कहा अणुव्रत सिलाई केन्द्र से गांव की महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण मिलेगा। मुख्य अतिथि डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा अणुव्रत मानवीय एकता का आंदोलन है। इसका उद्देश्य है मानव को नैतिकता की शिक्षा देना। उन्होंने ग्रामवासियों को नशामुक्ति का संकल्प दिलवाया। सिलाई केन्द्र का उद्घाटन समिति के संरक्षक विजय सिंह बरमेचा ने करते हुए

इस ग्राम को अणुव्रत ग्राम के रूप में विकसित करने का आव्यान किया। समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने कहा कि गांव की सफाई व्यवस्था को ठीक कर पर्यावरण के प्रति भी चेतना जागृत करनी होगी। डॉ. राकेश मणि त्रिपाठी, सीताराम टेलर, धनश्याम सिंह, रामनारायण इत्यादि ने अपने विचार रखे। संचालन वीरेन्द्र भाटी मंगल ने किया। कार्यक्रम में ग्राम के मानसिंह राठौड़, दुर्जन सिंह, गजराज सिंह, रिलपाल सिंह, गुलाब सिंह, पंकज कंवर, अदिति, प्रतिभा कंवर, विदेश कंवर सहित सौ से अधिक ग्रामवासियों ने भाग लिया।

राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष, महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष द्वारा संगठन यात्रा

भीलवाड़ा, 5 नवंबर। स्थानीय अणुव्रत समितियों की सार संभाल, कार्यकर्ताओं में सार्थक सक्रियता से अणुव्रत कार्यों को संपादित करने हेतु प्रारंभ की गयी संगठन यात्रा के क्रम में प्रदेशाध्यक्ष सम्पत्त सामसुखा, मंत्री मनोहरलाल बापना एवं कोषाध्यक्ष शुभकरण चोरड़िया ने बीकानेर संभाग के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। यात्रा क्रम निम्नानुसार रहा।

सरदारशहर, 31 अक्टूबर। स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा जरूरतमंद 380 बालक-बालिकाओं को सरदारशहर निवासी उम्मेदमत दूगड़ के सौजन्य से स्वेटर वितरण का क्रम रहा। प्रमुख वक्ता मित्तल कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या थी। इस अवसर पर नगर परिषद् सरदारशहर के चेयरमेन, राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति के सहमंत्री लच्छीराम पूनिया, कार्यकारिणी सदस्य डालचंद चिंडलिया, स्थानीय समिति के अध्यक्ष रावतमल सैनी, सम्पत्त सुराणा उपस्थित थे। सान्निध्य साध्वी राजीमति का रहा।

कालू। साध्वी फूलकुमारी 'लाडनू' के सान्निध्य में अणुव्रत कार्यक्रम पर चर्चा हुई। स्थानीय सभाध्यक्ष हनुमानमल गोलछा व मंत्री विनोद कुमार सिंधी, विमल दूगड़, जवरीमल बोथरा, रेवतमल गोलछा उपस्थित थे। यह निर्णय हुआ कि अणुव्रत के कार्यों को गति देने हेतु क्षेत्र में शीघ्र ही अणुव्रत समिति का गठन किया जाय, जिसकी सूचना प्रारंभिक समिति व महासमिति को प्रेषित करने का निर्देश दिया गया।

लूणकरणसर। साध्वी पानकुमारी श्रीझूंगरगढ़ 'प्रथम' के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। समिति के अध्यक्ष भागीरथ बिजरानिया तथा मंत्री हनुमान सिंह शेखावत को अणुव्रत कार्यों में तेजी लाने का अनुरोध किया गया। उपस्थिति अच्छी रही एवं कार्यकर्ताओं में भी जोश था। कार्यक्रम में तुलसीराम, प्रदीप बोथरा,

जतनमल बोथरा, झंवरलाल, चंदनमल डागा, कन्हैयालाल दूगड़, जतनलाल बरडिया, मगन जैन, नरेन्द्र नाहटा, आसकरण बापना, विजयराज दूगड़, सुशील कुमार दूगड़, राकेश दूगड़, अजीत नाहटा, हनुवंतमल बोथरा इत्यादि उपस्थित थे।

गंगाशहर, 1 नवंबर। मुनि नगराज स्वामी एवं मुनि मोहनलाल शार्दूल के सान्निध्य में राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष सम्पत्त सामसुखा ने अणुव्रत कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा अणुव्रत को अपने जीवन-व्यवहार में अपनाना होगा। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। बैठक में शुभकरण चोरडिया, आसकरण पारख, कार्यक्रम में बविता सेठिया, संजु लालानी, संतोष बोथरा, शारदा वैद, मधु छाजेड़, रेणु बापना, अशोक कुमार बापना, किशन वैद, प्रदीप लालानी, राजेन्द्र चोपड़ा, मनोहरलाल नाहटा, मनोज सेठिया, आसकरण पारख, शुभकरण सिंधी इत्यादि उपस्थित थे। सभी कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत कार्यों को आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया।

दे शनोक। यहां पहुंचकर सम्पत्त सामसुखा ने साध्वी उज्जवलरेखा ठाणा-4 से मार्गदर्शन प्राप्त किया। कार्यकर्ताओं को क्षेत्र में अणुव्रत समिति का गठन कर अणुव्रत कार्य को आगे बढ़ाने की प्रेरणा एवं निर्देश दिया गया। कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत कार्य को आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में संतोष चंद सिपानी, प्रकाश चन्द्र आंचलिया उपस्थित थे।

बीकानेर। बीकानेर पहुंचने पर अणुव्रत कार्यकर्ता ओं ने उत्साह के साथ स्वागत किया। रांगड़ी बाजार स्थित पुस्तकालय/वाचनालय में गोष्ठी का आयोजन हुआ। अणुव्रत समिति बीकानेर के अध्यक्ष गोपाल आचार्य ने अणुव्रत समिति द्वारा संपादित कार्यों की जानकारी दी। इस अवसर पर अन्य कार्यकर्ताओं ने भी अपने विचार रखे। भंवरलाल नाहर का अणुव्रत

समिति को पूरा सहयोग मिल रहा है। बीकानेर संभाग की जिला अणुव्रत समिति का गठन हुआ था। तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. अशोक आचार्य व मंत्री मेघराज सेठिया भी उपस्थित थे। अणुव्रत कार्य को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से स्थानीय समिति को 31 दिसंबर तक चुनाव करवाने के निर्देश दिये गये। कार्यक्रम में गोपाल आचार्य, अशोक आचार्य, मेघराज सेठिया, भंवरलाल नाहर, पूनमचंद स्वामीगिरी, ज्ञानचन्द्र महात्मा, सुरेन्द्र कुमार पुरोहित,

कुशल चन्द्र व्यास, सत्यनारायण आचार्य, सरदार अली पड़िहार, सुंदरलाल ज्ञावक, भंवरलाल गोलछा इत्यादि गणमान्य उपस्थित थे।

उदासर। साध्वी काव्यलता ठाणा-3 का दर्शन लाभ प्राप्त हुआ। यहां पर भी अणुव्रत समिति का गठन नहीं है। सभाध्यक्ष मानक बोथरा एवं कमलजी से अणुव्रत समिति गठन व अणुव्रत कार्य में तेजी लाने हेतु विचार-विमर्श किया गया। उन्होंने अणुव्रत कार्य को आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया।

अणुव्रत द्वार का उद्घाटन

पाली। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के 96वें जन्मदिवस पर अणुव्रत समिति पाली द्वारा शहर के बालिया स्कूल के पास निर्मित अणुव्रत द्वार का उद्घाटन पर्यटन एवं बाल विकास मंत्री बीना काक के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष गुमानमल भंसाली ने बताया समिति के तत्वावधान में भैरचन्द नारायणचन्द गोगड़ परिवार के सौजन्य से शहर के सौंदर्यीकरण हेतु इस द्वार का निर्माण किया गया है। इस पर अंकित अणुव्रत अचार रसिता के नियम जन-जन में नैतिकता का संदेश प्रसारित करेंगे। इस अवसर पर समिति के मंत्री सुरेन्द्र दूगड़, मुख्य अतिथि बीना काक, विशिष्ट अतिथि विधायक ज्ञानचन्द्र पारख, नगर परिषद सभापति प्रदीप हिंगड़, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका, सम्पत्त सामसुखा, मनोहरलाल

बाफना, ज्ञानचन्द्र काठेड़, गुमानमल भंसाली एवं भैरचन्द गोगड़ मंचासीन थे। प्रारंभ में साध्वी सुदर्शना ने उपस्थित संभागियों को मंगल पाठ सुनाया।

सुरेन्द्र दूगड़ एवं प्रमोद भंसाली ने अपने विचार रखते हुए अणुव्रत आंदोलन की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में समिति के राजेन्द्र धोका, सुरेन्द्र सालेचा, उगमराज सांड, गुलबाग सिंह, जयकुमार पींचा सहित सैकड़ों कार्यकर्ता, प्रतिनिधि एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। संचालन द्वूंगरचंद चौपड़ा ने किया।

इस अवसर पर ब्लड शुगर जांच शिविर भी रखा गया। इसमें 110 लोगों ने लाभ लिया। अणुव्रत समिति एवं सभा के कार्यकर्ताओं ने बांगड़ अस्पताल, अंधता निवारण केन्द्र एवं कुछ रोगियों के बीच जाकर उनकी सार-संभाल की।

अहिंसा की शक्ति सर्वोपरि

बाढ़। अहिंसा की शक्ति सर्वोपरि है। इसके सहारे हर जंग जीती जा सकती है, क्योंकि इसका आधार हृदय है। हृदय परिवर्तन के द्वारा ही भावशुद्धि संभव है। गांधी-विनोदा ने इस क्रिया द्वारा देश को जगाया और आजादी दिलायी साथ ही समतामूलक समाज संरचना की गति को दिशा दी। आज आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा उन्हीं मूल्यों की पुनर्स्थापना की जा रही है। ये

विचार चर्चित समाजसेवी तथा विहार प्रदेश जद यू कार्यकारिणी के सदस्य राणा रणवीर सिंह ने स्थानीय एल.आई.सी. भवन में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र बाढ़ के नये सत्र का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये। अध्यक्षता डॉ. अशोक कुमार सिंह ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अलहाज मो. सन्नाउल्लाह ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. साधुशरण सिंह सुमन ने किया।

एकटिवसीय अणुव्रत सेमिनार

आसीन्द, 31 अक्टूबर। अणुव्रत समिति आसीन्द के तत्वावधान में रा.उ.प्रा.वि. बड़ाखेड़ा में एक दिवसीय अणुव्रत सेमिनार का आयोजन रखा गया। कार्यक्रम में आसपास के विद्यालयों के चार सौ छात्रों एवं पच्चीस शिक्षकों ने भाग लिया। प्रारंभ मदनलाल गोखरु द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। राजेन्द्र सेन ने सम्मान पटिटक के साथ साहित्य भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष कल्याणमल गोखरु ने अध्यापकों से अनुरोध करते हुए कहा कोई भी छात्र-छात्रा किसी भी कारण से शिक्षा से वंचित न रहे यह हम सबका दायित्व है। शिक्षक स्वयं व्यसनमुक्त रहें और विद्यार्थी भी जीवन भर इस मार्ग पर चलें ऐसी प्रेरणा दें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सुभाष जैन ने कहा बालकों में संस्कार निर्माण के लिए इस तरह के कार्यक्रमों की नितांत

आवश्यकता है। मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रा. शिक्षा अधिकारी गोविन्द वल्लभ व्यास ने कहा कि अणुव्रतों के नियमों का पालन करने वाला निःसंदेह नैतिक, चरित्रवान और राष्ट्रप्रेमी होगा। मा.वि. दांतडाबांध के प्रधानाचार्य बोयताराम बलाई, रा.उ.वि. बागा वा का खेड़ा की प्र. अ. ललिता शर्मा, अणुव्रत परीक्षा प्रभारी कैलाश शर्मा, समाज सेवी गौतम औस्तवाल, महावीर टेलर आदि वक्ताओं ने अणुव्रत की महत्ता पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर अणुव्रत कार्यों में अच्छे सहयोगी रहे कैलाश शर्मा का शाल्वार्पण द्वारा सम्मान किया गया। उपस्थित छात्र-छात्राओं ने जीवन पर्यन्त व्यसनमुक्त रहने के संकल्प लिये। बीस शिक्षक अणुव्रत संकल्प पत्र भरकर अणुव्रती बने। शिक्षा विभाग की ओर से राजेश वैष्णव ने सभी का आभार व्यक्त किया। संचालन मदनलाल गोखरु ने किया।

अणुव्रत दिवस पर संगोष्ठी

पीलीबंगा। अणुव्रत समिति पीलीबंगा द्वारा अणुव्रत दिवस का कार्यक्रम साधी मध्यबाला के सान्निध्य में 20 अक्टूबर 09 को मनाया गया। प्रातः नगर के विभिन्न मार्गों पर प्रभात फेरी निकाली गयी। जिसमें अणुव्रत समिति, सभा, युवक परिषद्, महिला मंडल के सदस्यों ने जोश के साथ भाग लिया। साधी जिनबाला ने कहा अणुव्रत उपासना पर नहीं शुद्ध आचरण पर बल देता है। हर वर्ग व कौम का व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में रहते हुए अणुव्रत को स्वीकार कर जीवन में चरित्र निर्माण का कार्य कर सकता है। साधी मर्यादाश्री, अरिहन्त हिमानी, शीतल, कनीषा ने आचार्य तुलसी के जीवन पर प्रकाश डाला। अणुव्रत समिति अध्यक्ष विजय सहगल एवं

शर्मा, आत्मप्रकाश बालान ने अणुव्रत आचार संहिता की जानकारी दी। समिति के मंत्री सुरेश जैन ने विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने के लिए प्रेरणा दी। इस अवसर पर विजय सहगल एवं विजय दूगड़ ने अपने विचार रखे।

सायंकाल जैन भवन में कार्यक्रम का आयोजन हुआ तथा समिति की एक बैठक रखी गयी। इसमें नये सदस्य बनाने व स्थानीय सरस्वती बाल मंदिर माध्यमिक विद्यालय में 26 अक्टूबर 09 को सरस्वती बाल मंदिर माध्यमिक विद्यालय में संगोष्ठी आयोजित हुई। इसमें स्कूल के विद्यार्थी, अध्यापकगण एवं आसपास के लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में अध्यापक कालूराम ने शिक्षक अणुव्रत ग्रहण करते हुए संकल्प पत्र भरकर दिया।

अणुव्रत समिति मुंबई का वार्षिक अधिवेशन

मुम्बई। साधी कनकरेखा के सान्निध्य में अणुव्रत समिति मुंबई का वार्षिक अधिवेशन महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के आचार्य तुलसी सभागार में संपन्न हुआ। साधीश्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा अणुव्रत आंदोलन असाम्प्रदायिक धर्म की प्रस्तुति देने वाला अनूठा उपक्रम है। आज जरूरत है कि अणुव्रत समिति के प्रत्येक पदाधिकारी अणुव्रत को आत्मसात करने का प्रयास करते हुए अधिक से अधिक 'अणुव्रत प्रचेता' के रूप में तैयार हों। समिति के अध्यक्ष विश्वनाथ सचदेव के नेतृत्व में अर्जुन बाफना एवं विनोद कोठारी की टीम ने बहुत ही सक्रियता एवं जागरूकता के साथ अणुव्रत के कार्यों को श्रेष्ठता प्रदान की है। इस कार्य को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

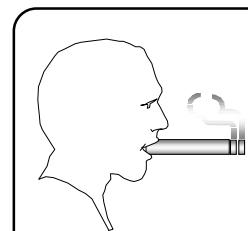
कार्यक्रम का प्रारंभ दक्षिण मुंबई महिला मंडल द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। सहमंत्री सुनील सचेती ने गत बैठक की कार्यवाही का वाचन किया। महामंत्री विनोद कोठारी ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष राजेन्द्र कोठारी ने आय-व्यय की प्रस्तुति दी। कार्याध्यक्ष अर्जुन बाफना ने गत दो वर्षों के कार्यकाल में सहयोगी रहे सभी साथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर साधी कनकरेखा के सान्निध्य में पूर्व एवं वर्तमान कार्यकर्ताओं के सम्मान क्रम में स्व. पृथीवीराज कच्छारा व राजमल झूंगरवाल को अणुव्रत समिति के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। द्वितीय चरण में गत दो वर्षों में

विशेष सेवा देने वाले सुनील सचेती, कंचन बम्ब, ख्यालीलाल कोठारी, नरेन्द्र तातेड़, राजेन्द्र मुणोत, लिलिता जोगड़, सोहनलाल सिंधवी व प्रकाश कोठारी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भवरलाल कर्णवट व बी.सी. भलावत का भी सम्मान किया गया। पूरे वर्ष अणुव्रत के क्षेत्र में सराहनीय कार्यों हेतु अणुव्रत उपसमिति पूर्व मुंबई को प्रथम, अणुव्रत उपसमिति मध्य मुंबई-2 को द्वितीय व उत्तर मुंबई-1 व रायगढ़ उपसमिति को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सदस्यता अभियान के लिए उत्तर मुंबई प्रथम को सम्मानित किया गया। अधिवेशन में सर्वाधिक उपस्थिति हेतु उपसमिति दक्षिण मुंबई को भी सम्मानित किया गया।

चुनाव अधिकारीद्वय प्रेमलता सिसोदिया व बाबूलाल बाफना ने चुनाव कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्राप्त उम्मीदवारी पत्रों का निरीक्षण करके वर्ष 2009-11 के लिए अर्जुन बाफना को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया।

कार्यक्रम में अणुव्रत महासमिति के संगठन मंत्री डालचंद कोठारी, सभाध्यक्ष भवरलाल कर्णवट, मंत्री दिनेश सुतरिया, महिला मंडल की मंत्री भारती सेठिया, महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष सोहनलाल धाकड़, मंत्री मीठालाल सिसोदिया, बी.सी. भलावत, हिम्मत धींग, अहिंसा समवाय मंच के राजकुमार चपलोत, समस्त 11 अणुव्रत उपसमितियों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित थे। संचालन विनोद कोठारी ने किया।



आपका मँह
ऐश्वर्य या कूड़ादान
नहीं

सिद्ध पुरुष थे आचार्य तुलसी

दिल्ली, 30 अक्टूबर। मुनि ताराचंद एवं मुनि सुमतिकुमार के सान्निध्य में आचार्य तुलसी का जन्मदिन “अणुव्रत दिवस” के रूप में मनाया गया। प्रारंभ सूर्यनगर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मुनि सुमतिकुमार ने कहा आज हम आचार्य तुलसी का 96 वां जन्मदिन मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। दुनिया के अनेकों महापुरुषों में से एक थे आचार्य तुलसी। आचार्य तुलसी ने मानव जाति के लिए अनेक अवदान प्रस्तुत किए। उन्होंने लाखों किलोमीटर की पदयात्रा कर इन्सान को सही इन्सान बनने की प्रेरणा दी। प्रमाद उनसे कोसों दूर था। उनके हर कार्य में कला झलकी थी। उनका आत्मविश्वास गजब का था। आचार्य तुलसी एक सिद्ध पुरुष थे।

मुनि देवार्य ने कहा जीवन किस प्रकार जिया जा सकता है, वह उनके जीवन से सीखने को मिलता है। आचार्य तुलसी एक कालजयी पुरुष के रूप में सदैव पूजे जायेंगे।

अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने

छोटे-छोटे व्रतों द्वारा जीवन में बढ़लाव

बालोतरा। आचार्य तुलसी का 96वां जन्मदिवस साधी मधुस्मिता के सान्निध्य में स्थानीय सभा भवन में मनाया गया। साधीशी ने कहा अणुव्रत में युग को बदलने की ताकत है। छोटे-छोटे व्रतों से जीवन को बदला जा सकता है। विधायक मदन प्रजापत ने कहा आचार्य तुलसी द्वारा उद्घोषित सूत्र निज पर शासन फिर अनुशासन को व्यक्ति अपने आचरण में उतारे। विशिष्ट अतिथि नगरपालिका अध्यक्ष प्रभा सिंधवी ने कहा आचार्य तुलसी का जीवन आज भी प्रेरणास्पद है।

कहा आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। हम अणुव्रत का प्रचार-प्रसार करके स्वयं अणुव्रती बनें एवं दूसरों को प्रेरित करें। फरजन कुमार जैन ने कहा आज से 95 वर्ष पहले उस महामानव ने इस धरा पर कदम रखा। व्यक्ति का नहीं उसके कर्तृत्व, नेतृत्व व वर्वस्व का महत्व होता है। आचार्य तुलसी की कार्यशैली सबसे ऊँची रही। शाहदरा सभा के अध्यक्ष शांतिलाल पटवरी ने कहा आचार्य तुलसी ने नैतिकता के विकास हेतु अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। भीखमचंद सुराणा ने निगम पार्षद जितेन्द्र सिंह शंटी का साहित्य द्वारा सम्मान किया। शंटी ने कहा बहुत कम लोग होते हैं जो दुनिया को कुछ देकर जाते हैं। आचार्य तुलसी का जीवन मसाल बना, उन्होंने युवा पीढ़ी को शिक्षित किया। उनकी सृष्टि में एक पार्क बन रहा है विवेक विहार में, जिसका काम प्रगति पर है। इस अवसर पर जितेन्द्र सिंह शंटी द्वारा ‘सुख का स्रोत कहा’ और ‘महाप्रज्ञ ने कहा भाग-36’ आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित दो पुस्तकों का मुनिशी द्वारा विमोचन कराया।

नैतिक क्रान्ति के पुरोधा थे आचार्य तुलसी

भीलवाड़ा। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 96वां जन्मदिवस में साधी भीखाजी एवं साधी प्रमिलाकुमारी के सान्निध्य में सभा भवन में अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। साधी भीखाजी ने कहा आचार्य तुलसी का जीवन बहुआयामी था। उनके द्वारा समाज एवं राष्ट्र को दी गयी सेवाएं लम्बे समय तक स्मरणीय रहेंगी। समाज में बढ़ रही अनैतिकता को रोकने के लिए अणुव्रत आंदोलन ने नैतिक चेतना को जाग्रत कर वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात लिया है। इसलिये आचार्य तुलसी को नैतिक क्रान्ति का पुरोधा कहा जाता है।

मुख्य अतिथि रामपाल शर्मा अध्यक्ष दी सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि. भीलवाड़ा ने आचार्य तुलसी के सिद्धान्तों को जीवन में उतारने पर जोर दिया। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की जो आचार संहिता बनाई वह आज बहुत प्रासंगिक है। अणुव्रत एक असाम्प्रदायिक विचारधारा है।

नगर परिषद् के सभापति ओम नरालीवाल ने अणुव्रत की आचार संहिता को व्यापक रूप से प्रसारित करने की बात कही एवं नगर के मुख्य स्थानों पर इनके होर्डिंग्स लगवाने की भी घोषण की। साथ ही अगले कार्यक्रम को सार्वजनिक रूप में आयोजित करने की बात कही।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष, लक्ष्मीलाल गांधी ने सभी आगन्तुकों

का स्वागत करते हुए अणुव्रत की पृष्ठ भूमि एवं भविष्य की योजना की जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि मदनलाल श्रोत्रिय, मदनलाल कावंडिया एवं युवक परिषद के अध्यक्ष, नवीन बागरेचा, सभा अध्यक्ष सम्पत चौराडिया ने विचार प्रकट किये।

राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत श्यामसुखा ने केन्द्र के निर्देशानुसार अणुव्रती बनों अभियान की घोषणा भीलवाड़ा से करने की बात कही।

प्रारंभिक तौर पर आज 83 व्यक्तियों ने अणुव्रत की आचार संहिता स्वीकार की। समारोह में साधी पुण्यप्रभा ने अणुव्रत को लौकिक धर्म की संज्ञा देते हुए अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर साधी प्रमिलाकुमारी ने अणुव्रत दिवस की उपयोगिता बताते हुए अणुव्रत सकलों को ग्रहण कर इन्हें जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में अणुव्रत महासमिति की ओर से प्रेषित कार्यकर्ता सम्मान प्रेम सिंह तलेसरा एवं जसराज चौरडिया को दिया गया। विशिष्ट अतिथि मोना शर्मा अध्यक्ष भीलवाड़ा सहकारी उपभोक्ता होलसेल भन्डार ने साधीशी से आशीर्वाद लिया। पुष्पा पामेचा, मंजु नोलखा एवं मुकेश रांका ने गतिकाओं का संगान किया। संचालन रजनीश नौलखा ने एवं आभार ज्ञापन मनोहरलाल बापना ने किया।

अणुव्रत समिति पड़िहारा

पड़िहारा, 17 नवंबर। पड़िहारा में नयी अणुव्रत समिति का गठन सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ। इसमें आगामी दो वर्ष हेतु नारायण बोरड को अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। अध्यक्ष महोदय ने निम्न कार्यकारिणी की घोषणा की उपाध्यक्ष कानसिंह राठौड़, सन्तोष गांधीच, मंत्री टोरमल सुथार, विकास मंत्री वंशीधर प्रजापत, सहमंत्री महालचंद

प्रजापत, कोषाध्यक्ष माणकचंद भोजक, मुख्य संरक्षक शेरसिंह ठाकर, उपसंरक्षक श्रीचंद सुराणा, विजय सिंह सुराणा, विजयराज सुराणा, तेजकरण सुराणा एवं संयोजक धर्मचंद गोलठा। सदस्य सवाई सिंह राठौड़, मेघराज जोशी, डॉ. चेतनराम चौहान, नवरत्नमल भोजक, विकास हर्षवाल, ओमप्रकाश सुथार, चंपालाल प्रजापत एवं देवीलाल खिलेरी।

अहिंसा को वाणी में ही नहीं, जीवन में उतारें

नई दिल्ली, 31 अक्टूबर। केन्द्रीय संचार राज्यमंत्री सचिन पायलेट ने राष्ट्र के लिए अनुशासन, अहिंसा तथा सामाजिक संवेदनशीलता को जरूरी बताते हुए कहा कोई भी राष्ट्र चाहे किसी भी क्षेत्र में कितनी भी प्रगति क्यों न कर ले, वह इन मूल्यों के बिना सही मायने में उन्नति नहीं कर सकता। महावीर ने हमें अहिंसा, अनेकान्त, सह- अस्तित्व एवं शांति का संदेश दिया। उनके बताए मार्ग पर चलकर ही देश वास्तविक उन्नति कर सकता है। सचिन पायलेट अपने निवास पर सुखी परिवार फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक सादे समारोह में सुखी परिवार अभियान के प्रणेता गणि राजेन्द्र विजय की पुस्तक 'हिंसा का अंधेरा : अहिंसा का प्रकाश' का लोकार्पण करते हुए बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि अहिंसा को उपदेश या भाषण तक सीमित न करके उसे जीवन में उतारना चाहिए, व्यवहार और जीवनशीली में अहिंसा उत्तरनी चाहिए।

अहिंसा का पालन करने वाला हर व्यक्ति अपने स्तर पर सेवा और जन कल्याण की गतिविधियों को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रयत्नशील बने। उन्होंने कहा कि गणि राजेन्द्र विजय की पुस्तक 'हिंसा का अंधेरा : अहिंसा का प्रकाश' हिंसा और

दक्षिण भारत में अणुव्रत की गूंज

कोयम्बटूर, 21 नवंबर। अणुव्रत समिति कोयम्बटूर की एक विशेष बैठक में डॉ. कोलेंडावेलु, पूर्व चांसलर विश्वविद्यालय एवं डॉ. मार्केंड्यम पूर्व वाइस-चांसलर गांधी ग्राम विश्वविद्यालय कोयम्बटूर उपस्थित हुए। डॉ. मार्केंड्यम उक्त समिति के सलाहकार हैं। इस अवसर पर चिन्मय मिशन की प्रमुख कार्यकर्ता डॉ. मीरा कृष्णन, राजस्थानी संघ के अध्यक्ष गुलाब पेटना, अचलमल सेमलानी तथा अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

डॉ. कोलेंडावेलु ने कहा आचार्य तुलसी जब दक्षिण भारत की

आतंक के वर्तमान दौर में अहिंसा की स्थापना में सहयोगी बनेगी। अहिंसा को व्यापक बनाने और इसे जीवन के साथ जोड़ने की जरूरत है। सेवा और परोपकार की भावना को विकसित करके ही समाज में नैतिकता और मानवीय मूल्यों की स्थापना की जा सकती है।

इस अवसर पर गणि राजेन्द्र विजय ने धर्म की प्रासांगिकता पर बल देते हुए कहा वह धर्म प्रासांगिक होता है जो वर्तमान समस्या को समाधान दे। सैकड़ों, हजारों वर्ष पहले महावीर, बुद्ध, गुरुनानक, मोहम्मद साहब, ईसा मसीह व अनेक महापुरुषों ने अहिंसा का संदेश दिया था। अहिंसा तब भी प्रासांगिक थी और आज भी प्रासांगिक है। लेकिन अहिंसा का आज जितना उपदेश है उतना व्यवहार व आचरण नहीं है। अहिंसा केवल सिद्धांत में नहीं, जीवन शैली में आनी चाहिए।

सुखी परिवार फाउंडेशन के महासचिव ललित गर्ग ने सचिन पायलेट का स्वागत करते हुए फाउंडेशन की विविध गतिविधियों की जानकारी दी एवं फाउंडेशन का मुख्य पत्र 'समृद्ध सुखी परिवार' का नवीन अंक भेंट किया। इस अवसर पर पत्रकार ज्ञानचन्द्र जैन ने भी अपने विचार रखे।

कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति की बैठक

बैंगलोर, 18 नवम्बर। कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति बैंगलोर की संगोष्ठी संस्था अध्यक्ष जुगराज सोलंकी के सान्निध्य में आयोजित हुई। इसमें मंत्री महावीरचंद्र खाबिया, अणुव्रत महासमिति के संगठन मंत्री भूपेन्द्र कुमार मूथा, संयुक्त मंत्री सिद्धार्थ शर्मा, मानकचंद्र मूथा, ज्ञानशाला प्रभारी उगमराज लोढ़ा, चन्द्रशेखरराय, रूपचंद्र देसराला एवं कार्यालय सचिव प्रेमकुमार परख उपस्थित थे। संगोष्ठी में 33 सूत्रीय कार्यक्रम हेतु विचार-विमर्श किया गया। हर माह अणुव्रत पर कार्यक्रम हो। बारह महीने तक अणुव्रत के बारह विषयों पर कार्यक्रम चलते रहें। अणुव्रत समिति में ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ा जाये। अणुव्रत पत्रिका हर घर में पहुंचे। आचार्य महाप्रज्ञ की कल्पना के अनुसार पूरा दक्षिण अणुव्रतपत्र बन जाये, ऐसी ठीस योजनाओं का निर्धारण कर कार्य

को आगे बढ़ाया जाये।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका ने कहा व्यक्ति को सम्मान से दूर रहना चाहिए। यदि कार्य अच्छा होगा तो सम्मान अपने आप हो जायेगा। सिद्धार्थ शर्मा ने कहा पूरे दक्षिणांचल में अणुव्रत आंदोलन में योगदान देने वाले कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन शीश्र ही आयोजित होना चाहिए। पूरे कर्नाटक में कम से कम 20 अणुव्रत समितियों का गठन होना चाहिए ताकि अणुव्रत कार्य को गति दी जा सके। इस अवसर पर जुगराज सोलंकी, महावीर खाबिया ने भी अपने विचार रखे। स्थानीय समिति के अध्यक्ष जुगराज सोलंकी ने अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका का माला पहनाकर सम्मान किया। महावीरचंद्र खाबिया ने साहित्य एवं तीन माह की अणुव्रत कार्यक्रमों की रिपोर्ट निर्मल रांका को सौंपी।

अणुव्रत समिति जोधपुर

जोधपुर, 13 नवंबर। अणुव्रत समिति जोधपुर ने 14, सेक्टर रा.उ.प्रा. विद्यालय में अणुव्रत विद्यार्थी वर्ग एवं शिक्षक वर्ग आचार संहिता के बोर्ड भेंट किये। गत वर्ष अणुव्रत परीक्षा हुई थी। जो बच्चे उत्तीर्ण हुए उनको प्रमाण पत्र दिये गये। साधी सरोजकुमारी ने बच्चों को व्यसनमुक्त जीवन जीने पर अपनी बात कही व संकल्प करवाये। साधी पुण्यशा ने बच्चों को प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये।

स्कूल की प्रधानाध्यापिका शोभा मायुर ने आगंतुकों का स्वागत किया। अध्यापिका सुशीला मेहता ने बाल दिवस पर प्रकाश डाला। बाल दिवस के उपलक्ष में बच्चों को अणुव्रत समिति द्वारा अल्पाहार दिया गया। समिति की पूर्व मंत्री सुधा भंसाली ने कहा ज्यादा से ज्यादा इस स्कूल के बच्चे नैतिक बनकर निकले यही हमारी हार्दिक इच्छा है। संचालन सुधा भंसाली ने किया एवं आभार कमला चौधरी ने व्यक्त किया।

अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला

फतेहपुर। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र फतेहपुर शेखावटी द्वारा खेमको के मोहल्ले में एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए आचार्य रामगोपाल शास्त्री ने कहा हिंसा का एक कारण बेरोजगारी भी है। अगर महिलाएं स्वावलंबी बन जाएं तो काफी हद तक यह समस्या दूर हो सकती है। मुख्य अतिथि अरविंद राय ने

कहा महिला व्यसन और फैशन से बचकर स्वावलंबी बनें तो देश की दिशा ही बदल जाएगी। इस अवसर पर मोमबत्ती एवं नैतिक पाठमाला पुस्तक द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के प्रशिक्षक सतीश शाण्डिलय ने किया। इस अवसर पर रामचन्द्र कुमावत एवं कपिल पारीक उपस्थित थे।

पड़िहारा में एक दिवसीय अणुव्रत कार्यशाला



पड़िहारा, 24 नवम्बर। अणुव्रत महासमिति एवं राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के तत्वावधान में चुरू, नागौर, भीलवाड़ा जिले के अणुव्रती कार्यकर्ताओं की एक दिवसीय कार्यशाला अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। कार्यशाला में अणुव्रत प्राध्यापक मुनि सुखलाल एवं मुनि मोहजीतकुमार का मार्गदर्शन कार्यकर्ताओं को प्राप्त हुआ। अणुव्रत कार्यशाला में अणुव्रत दर्शन एवं संस्था संचालन विषय का गहन प्रशिक्षण दिया गया। अणुव्रत महासमिति के डॉ. महेन्द्र कर्णावट, निर्मल एम. रांका, डॉ. बी.एन. पांडेय, बाबूलाल गोलाठा, राज गुनेचा, प्रो. देवेन्द्र जैन, डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, रत्न सुराणा तथा राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के सम्पत् सामसुखा, मनोहरलाल बापना, प्रेमसिंह तलेसरा, शुभकरण चोराड़िया इत्याति प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

कार्यशाला में “अणुव्रत दर्शन” विषय की मुनि सुखलाल एवं मुनि मोहजीतकुमार ने प्रतिपादित किया। मुनि सुखलाल ने कहा गर्म होती पृथ्वी एवं पर्यावरण की विकट हो रही समस्या का एक मात्र समाधान है संयम। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से आचार्य तुलसी ने संयम की बात वर्तमान युग के सामने रखी। अणुव्रत धर्म के सही रूप को परिभाषित करता है तथा यह

असांप्रदायिक दर्शन है अतः इसका व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार होना समूची मानवता के हित में है।

मुनि मोहजीतकुमार ने कहा अणुव्रत कार्यशाला में अणुव्रत गीत की व्याख्या होनी चाहिए। अणुव्रत गीत का प्रत्येक शब्द अणुव्रत दर्शन को अभिव्यक्त करता है।

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा अणुव्रत दर्शन बदलाव का दर्शन है। यह आत्मानुशासन का दर्शन है, इसमें व्यक्ति एवं समाज के समन्वय पर बल दिया गया है।

निर्मल एम. रांका ने कहा अणुव्रत आचार सहिता का प्रारंभ स्वयं से होता है। हम सभी अपने दैनन्दिन जीवन में इसे उतार कर ही समाज परिवर्तन की हवा बहा सकते हैं। प्रो. देवेन्द्र जैन, सम्पत् सामसुखा एवं मनोहरलाल बापना ने भी अणुव्रत दर्शन के संदर्भ में अपनी बात कही।

अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत समितियों का संचालन कैसे हो विषय को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया तथा समितियों के संचालन में आ रही दिक्कतों की भी अवगति दी। उन्होंने कहा नैतिक मूल्यों से युक्त व्यक्तियों को ही अणुव्रत संस्थानों का नेतृत्व सौंपा जाना चाहिए।

कार्यशाला में शमसुदीन ‘स्नेही’ सुजानगढ़, भंवरलाल मूंदड़ा, सरदारअली पड़िहार, ओमप्रकाश सोनी, विनोद नाहटा, मीठालाल

भोगर, मोहिनीदेवी बैद ने अपनी विचार प्रस्तुति के साथ जिज्ञासाएं प्रस्तुत कीं। सरदारअली पड़िहार का विचार रहा कि हम स्वयं को देखें। हर व्यक्ति को जोड़ें। अणुव्रती बनने से क्या मिलेगा यह व्यक्ति को बताएं। शमसुदीन स्नेही का विचार था कि अणुव्रत समितियों का हर सदस्य अणुव्रत पाश्किक का सदस्य बने। विनोद नाहटा ने कहा अणुव्रत आचार सहिता का बोर्ड हर विद्यालय में हो ऐसी व्यवस्था केन्द्रीय स्तर पर की जाये। हम गोहत्या विरोधी अभियान से भी जुड़ें। भंवरलाल मूंदड़ा का विचार रहा कि सामाजिक सुधार की दिशा में अणुव्रत समितियां गतिशील हों।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद देते हुए कहा अणुव्रत कार्यशाला में दूर-दूर से बड़ी संख्या में कार्यकर्ता आये हैं। सभी मिलकर ऐसी कार्ययोजना का निर्माण करें कि आने वाले तीन वर्षों में हम स्वयं समाज का निर्माण कर सकें।

अणुव्रत महासमिति एवं राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति की कार्यकारिणी की बैठक भी पड़िहारा में आयोजित हुई कार्यशाला का संचालन डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी एवं मनोहरलाल बापना ने किया। कार्यशाला में निम्न पदाधिकारी-कार्यकर्ता उपस्थित थे

1. डॉ. महेन्द्र कर्णावट राजसमंद

2. मीठालाल भोगर	सूरत दिल्ली
3. डॉ. बी.एन. पांडेय	भीलवाड़ा
4. सम्पत् सामसुखा	सरदारशहर
5. सम्पतराम सुराणा	छापर
6. रणजीत सिंह दूगड़	छापर
7. हुक्माराम बरवड़	छापर
8. बिनोद नाहटा	छापर
9. रुपचंद बैद	छापर
10. सम्पतमल मालू	छापर
11. विनोद कुमार पासवान	छापर
12. किशनलाल शम्मी	सरदारशहर
13. शुभकरण चोराड़िया	भीलवाड़ा
14. प्रेमसिंह तलेसरा	भीलवाड़ा
15. विजय कुमार सिंघवी	चित्तौड़गढ़
16. निर्मल एम. रांका	कोयम्बटूर
17. मनोहरलाल बापना	भीलवाड़ा
18. गणपत धर्मावत	राजसमंद
19. राज गुनेचा	दिल्ली
20. भंवरलाल	छापर
21. मोतीलाल नाहटा	राजगढ़
22. डालचंद चिंडलिया	सरदारशहर
23. भैरुंदान गिड़िया	राजतरेसर
24. रत्न सुराणा	दिल्ली
25. बाबूलाल गोलछा	दिल्ली
26. जगपीहन मासुर	लाडनूं
27. रामकरण डेला	लाडनूं
28. सीताराम टेलर	लाडनूं
29. शातिलाल रेगर	लाडनूं
30. मधाराम रेगर	लाडनूं
31. ओमप्रकाश सोनी	लाडनूं
32. डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	लाडनूं
33. शुभकरन सिंधी	गंगाशहर
34. माणकचंद सामसुखा	गंगाशहर
35. आसकरण पारख	गंगाशहर
36. धनराज डागा	गंगाशहर
37. महावीर प्रसाद	रत्नगढ़
38. माणकचंद भोजक	पड़िहारा
39. ओमप्रकाश सुधाकर	सुजानगढ़
40. मदनलाल बिनाकिया	सुजानगढ़
41. विजयसिंह बोरड़	सुजानगढ़
42. शमसुदीन स्नेही	सुजानगढ़
43. भंवरलाल चौहान	बीकानेर
44. डॉ. गोपाल आचार्य	बीकानेर
45. सरदारअली पड़िहार	सियाल
46. भंवरलाल नाहर	हिसार
47. प्रो. देवेन्द्र कुमार जैन	चाड़वास
48. हंसराज बैद	चाड़वास
49. मोहिनी देवी बैद	चाड़वास
50. बरजी देवी बच्छावत	चाड़वास
51. शिल्पा कुमारी बच्छावत	चाड़वास
52. पुष्पलता मन्डार	रत्नगढ़

अध्यक्ष की कलम से.....

हम अणुव्रत आंदोलन के सातवें दशक में प्रवेश कर रहे हैं। हमें आचार्य महाप्रज्ञजी, युवाचार्य महाश्रमणजी, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी, मुनि महेन्द्रकुमारजी, मुनि सुखलालजी का मार्गदर्शन मिल रहा है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में 2, 3, 4, अक्टूबर 2009 को लाडनूं (राजस्थान) में समायोजित हुए अणुव्रत आंदोलन के 60 वें वार्षिक अणुव्रत अधिवेशन से एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है। कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा है। हमें देश में नैतिकता, प्रामाणिकता, भ्रष्टाचार व नशामुक्ति के लिए आवाज उठानी है। देश में हजारों अणुव्रत कार्यकर्ता हैं, उनसे संपर्क करना है और नए कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन देकर आगे लाना है। इस आंदोलन के सातवें दशक में प्रवेश के इस अवसर पर गठित नई कार्यसमिति के नेतृत्व में अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए प्रथम 100 दिन का कार्यक्रम तय किया है, इसे पूरी निष्ठा के साथ आचरण में लाना है। इस संबंध में आपके अमूल्य सुझाव भी आमंत्रित हैं। **प्रथम 100 दिन के कार्यक्रम**

1. अणुव्रत आचार-संहिता का अनुपालन अपने परिवार से ही प्रारंभ करना।
2. महिने के प्रथम रविवार को अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन।
3. प्रत्येक कार्यकर्ता प्रतिदिन एक व्यक्ति को अणुव्रत आचार- संहिता से अवगत करावें।
4. अपने क्षेत्र के सभी पुराने एवं नये कार्यकर्ताओं की (पता, फोन नं., ई-मेल सहित) सूची बनाएं।
5. संगठन को मजबूत बनाने के लिए अपने क्षेत्र में अणुव्रत समितियों का गठन करना।
6. अणुव्रत के संदेश को देश के हर गांव व घर-घर तक पहुँचाना।
7. अणुव्रत पत्रिका के कम से कम 10 त्रैवार्षिक पाठक बनाना।
8. अणुव्रत विचार को सबल बनाने के लिए अपने क्षेत्र के साहित्यकार, गांधीवादी, सर्वोदयी और अहिंसा में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों से संपर्क करना और उन्हें अणुव्रत साहित्य भेंट करना।
9. पत्र-पत्रिकाओं में अणुव्रत प्रचार-प्रसार हेतु लेख, समाचार आदि प्रकाशित करवाना।
10. अपने क्षेत्र के विद्यालयों में अणुव्रत गीत का संगान हो, ऐसा प्रयास करना।
11. निकटस्थ विद्यालयों, शिक्षण संस्थाओं में अणुव्रत पत्रिका निःशुल्क भिजवाने का प्रयास करना।
12. विद्यालयों में जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान के कार्यक्रम आयोजित करना।
13. अणुव्रत साहित्य का स्वाध्याय करते रहने का प्रयास करें।
14. आचार्य महाप्रज्ञ की लेखनी से निःसृत 'तुलसी विचार दर्शन' पुस्तक का स्वाध्याय करें, ताकि अणुव्रत दर्शन के संपूर्ण ज्ञान से लाभान्वित हो सकें।
15. अणुव्रत पत्रिका को स्वयं भी पूर्ण रूप से पढ़ने का अभ्यास करें।
16. अणुव्रत विचारधारा पर आप स्वयं भी लिखें और दूसरों को भी प्रेरित करें।
17. अगर आप कवि हैं तो अणुव्रत पर गीत लिखने का भी प्रयास करें।
18. 'अणुव्रती बनो अभियान' को सफल बनाएं।
19. अणुव्रत आचार संहिता का भित्तीलेखन का प्रयास करें।
20. अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का क्रम बनाएं।
21. अणुव्रत महिला कार्यकर्ताएं अपने क्षेत्र में भूणहत्या निषेध गोष्ठियों का आयोजन करें।
22. नशामुक्ति अभियान का आयोजन करें। समय-समय पर स्कूलों व गांवों में गोष्ठियां आयोजित करें।
23. शाकाहार का प्रचार करें।
24. जीवन में सादगी हो, हमें खादी वस्त्रों का उपयोग करना चाहिए।
25. समाज में प्रदर्शन कम हो, आडंबर पर नियंत्रण करें। विवाह सादगीपूर्ण हो तथा अपव्यय न हो, यह प्रयास करें।
26. अणुव्रत आचार संहिता का जन-जन में प्रचार हो, आचार संहिता के बोर्ड स्कूल, पंचायत, धर्मस्थलों पर लगाए जाएं।
27. पूरे देश में सौ जीवनदानी कार्यकर्ताओं की खोज करना।
28. कार्यकर्ताओं का सम्मान केवल साहित्य के माध्यम से हो।
29. आपसी पत्राचार द्वारा संपर्क बढ़ाया जाए।
30. अणुव्रतियों की क्या पहचान बने, इस पर चिंतन किया जाय।
31. बोलने से ज्यादा दूसरों को सुनने का अभ्यास करें।
32. बड़े क्षेत्रों में अणुव्रत पार्क, अणुव्रत मार्ग, अणुव्रत द्वार का निर्माण कर एक स्थायी पहचान बनाई जायें।
33. देश के धर्मगुरु या गुरुजन जिन्होंने सत्य, अहिंसा, शांति की स्थापना के लिए प्रयास किया है, उनकी जयंतियों पर अणुव्रत व्याख्यानमालाओं का आयोजन करना। जैसे गांधी जयंती, विनोबा जयंती, महावीर जयंती, गुरुनानक जयंती, रामनवमी, आचार्य तुलसी जन्म दिवस, आचार्य महाप्रज्ञ जन्म दिवस इत्यादि।

- निर्मल एम. रांका